क्रान्तिकारी रमणी

तीर्थराम फ़िरोज़पुरी

अशोक पॉकेट बुक्स दिल्ली

कोहनन के रास्ते सैन्ट पीटर्जबर्ग का सीधा टिकट खरीद सकता था
इन आवश्यकताओं से निवृत्त होकर जब मैं प्रथम श्रेणी के तंग किन्
आरामदेह डिब्बे में बैठ गया तो ये सभी सामयिक कठिनाइयाँ दू
हो गई। वैसे भी मुझ जैसे वृद्ध यात्री को एक रात के कष्ट के लि
ज्यादा शिकायत नहीं हो सकती थी।

सुख और सुविधा के विचार से मैंने अपना काफी सामान पहं
ही बुक करा दिया था। मेरे पास केवल एक गर्म कम्बल, साधारण
बाज़ारी चुरटों का एक डिब्बा और कुछ रूसी तथा फांसिसी उपन्यास
थे, जो इस लम्बे सफ़र में जी बहलाने के लिए आवश्यक समझे जा
सकते हैं।

सम्भवतः वे अक्टूबर के बीच के दिन थे और शीतल चांदनी के
धुन्धले प्रकाश में वीरान और पथरीले खेत, बंजर और सुनसान
दिखाई पड़ते थे। रेल के मेरे डिब्बे में दो सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट रूसी
अफसर भी बैठे हुए थे। उनके मोटे और गोरे हाथों की उंगलियों प
बहुत-सी अंगूठियाँ चमक रही थीं। पैरिस की सुखद यात्रा के बाद
दोनों अपने देश को वापस जा रहे थे।

वहीं एक कोने में लेटने का स्थान बनाकर मैं थोड़ी देर त
उन्हें स्वयं बनाए हुए छोटे-छोटे सिगरेट पीते, उन दुकानों और लड़
कियों की खूबियों और उनकी सुन्दरता पर बहस करते हुए देख
और सुनता रहा जिन्हें वे पैरिस में छोड़ आये थे, परन्तु इसके बा
जब उनकी बातचीत उस देश के उन विशेष विषयों की ओर मुड़ ग
जिन पर रूसी रूस की सीमाओं से बाहर स्वतन्त्रतापूर्वक वाद-विवा
कर सकते हैं तो मेरी आँखें लग गई।

:तिहासिक शहर के उस मध्यवर्ती स्टेशन पर ठहर गई जो रूसी सीमा ; पास जर्मनी राज्य का अन्तिम स्थान है।

जलपान के बाद मेरे फ़ौजी साथी सिगरेट उड़ाने के बाद ताश ख़ेलने में फिर से तल्लीन हो गये। उनकी बातों से ज्ञात हुआ कि उनमें एक का नाम कप्तान ग्रेगरी शैविच और दूसरे का नाम लैफ्टि-नेन्ट अलेक्सस माईकलोविच है और वे दोनों रूस की राजकीय सेना से सम्बन्ध रखते हैं।

अच्छी-खासी फ्रांसीसी में बात-चीत करते हुए वे बहुत देर तक ताश के पत्ते बाँटने और उस थोड़ी-सी नकदी को जीतने और हारने में संलग्न रहे, जिसे वह संसार के सब से अधिक खर्चीले पेरिस से बचाकर ले आये थे। मैं अपनी जगह पर कुछ अधलेटा हुआ-सा सिगार के कश लगाता, उपन्यास की लाइनों को बेध्यानी से देखता उनकी बात-चीत सुनने में तल्लीन था। अमेरिका के एक पुराने फ़ौजी अफसर के रूप में मैं जीवन में पहली बार रूस की गाथामयी भूमि की सैर करने जा रहा था अतः उनकी बातें मेरे लिए मनोरंजन से खाली नहीं हो सकती थीं। अब वे रूस के गुप्तचर विभाग के नये उच्च सेनाधिकारी के बारे में अपने विचार प्रकट कर रहे थे।

वह व्यक्ति रूस के गुप्तचर विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी था और जर्मनी नसल से होने पर भी रूसी दरबार में बड़ी प्रतिष्ठा रखता था। रूस जैसे स्वतन्त्र राज्य के कर्मचारियों में उसके अधिकार स्वतन्त्रता की चरम सीमा से भी आगे बढ़े हुए थे। सैंट पीटर्जबर्ग स्थित उसके गुप्त राज्य-कार्यालय से संदेहात्मक व्यक्तियों पर विना सोचे-विचारे तीर चला करते थे और वे तीर हर बार असंख्य शत्रुओं को जख्मी करके कड़े कानून के जाल में फंसाते थे। अपने ऊंचे और विशेष अधिकारों के कारण जार के दरबार में उसकी पहुँच शेष अधिकारियों से बढ़ी हुई थी। उसके स[illegible] जार के नाम पर ही होते थे।

"मैं सुनता हूँ" अलेक्सस ने सहसा प्रभावशाली मुद्रा में कहा—"मैं सुनता हूँ कि नहलिस्ट पार्टी में फि[illegible] जान पड़ने लगी है। उन व्यक्तियों की यह बड़ी इच्छा है कि उ[illegible]की डाक और तार का वित-

रण जिसे ग्रोरस मेलिक़ाफ ने रोक दिया था फिर नये सिरे से शुरू हो जाए।"

"इस प्रकार की अफवाहें मैंने भी सुनी हैं।" ग्रेगरी ने एक लालची और चतुर रूसी की भाँति ताश के पत्तों को ध्यान से देखते हुए कहा—"परन्तु सोचो तो इस काम में डर कितना है? तुम इन नहलिस्टों को रूस की सीमा में पाँव रखने तो दो, खुफिया पुलिस उनको तुरन्त पकड़कर जीवन भर के लिए सायबेरिया भेज देगी। वलिक आश्चर्य नहीं कि वह कुछ को मृत्यु-दंड भी दिलवाए। सच जानो, हमारे नये मंत्री मे विस्मार्क की-सी समझदारी और डोक की-सी चालाकी मौजूद है।"

यह कहते हुए उसने ताश के पत्तों को उल्टा रखकर अपने लिए एक सिगरेट तैयार किया और फिर गम्भीर मुद्रा में उसे जलाते हुए दियासलाई बुझाने के लिए हाथ को जोर से झटकते हुए कहा—

"मेरा अपना विचार यह है कि अब की वार उन लोगों ने देश के अन्दर आने का प्रयत्न किया भी तो वे किसी बिल्कुल ही नये ढंग से प्रयत्न करेंगे। उन्हें अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए डाक वितरण का सिलसिला रखना आवश्यक है। और यदि उन्होंने बहुत [illegible] कोई नये संकेत निर्धारित नहीं किये तो अपने षड्यन्त्र को सदा के लिये छोड़ने पर विवश हो जाएंगे। फिर भी प्रश्न यह है [illegible] वे इस काम को क्योंकर करेंगे? रुपया भी उनके पास बहुत है, [illegible]म करने वालों की भी उनके पास कमी नहीं, परन्तु आवश्यकता [illegible]से मस्तिष्क की है जो अनोखी युक्ति सोच सके।"

"मेरे चाचा जो राजदूत विभाग में काम करते हैं," अलेक[illegible] ने [illegible]हा—"एक बार कहते थे कि नहलिस्टों के कुछ आदमी हमा[illegible] तार विभाग में भी शामिल हैं। उनकी उपस्थिति वास्तव में उनके प्रयत्नों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकती है।"

"माना कि यह ठीक है।" दूसरे ने स्वीकार किया—"किन्तु नये मन्त्री महोदय भी दूरदर्शी व्यक्ति हैं। अब तो सेर को सवा सेर वाला हिसाब बन गया है। नहलिस्ट चिड़ियाएं बेशक इस वर्जित क्षेत्र में आएंगी परन्तु [illegible] आते ही सबकी सब [illegible]

में फँस जाएंगी।"

"और यदि किसी मनचले ने मन्त्री महोदय की ही समाप्ति कर दी तो ?" अलेक्सस ने मुट्ठीभर हारे हुए नोट देते हुए प्रश्न किया।

ग्रेगरी ने हंसते हुए नोटों को गिना और फिर उन्हें जेब में डालकर कहने लगा—"मुझे आशा नहीं कि ऐसा होगा ? तुम्हारी तरह नहलिस्ट भी हार के मालिक हैं। पेरिस में शहजादी ट्रोवटस्की की सुन्दर कोठी याद है न ?"

अलेक्सस ने मुस्कुराते हुए अपनी छोटी भूरे रंग की मूछों पर हाथ फेरा। जैसे वह अपने प्रेम की सफलता को याद करके प्रसन्न हो रहा हो। वैसे मुझे यह सोचकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वर्षों पूर्व का आनन्द अब तक उसके होटों पर कैसे शेष था ?

"तो जान लो वह अप्सरा-सी स्त्री" कप्तान ने शहजादी की याद दिलाते हुए कहा—"एक ओर हमारी गवर्नमेन्ट से वेतन पाती थी और दूसरी ओर नहलिस्ट विद्रोहियों में सबसे बढ़कर विश्वासी समझी जाती थी। कौन कह सकता है कि नये नोटों की कितनी गड्डियां फ्रांस के बैंक द्वारा उसके सुन्दर हाथों में पहुँच चुकी होंगी। मैंने तो यहां तक सुना है कि कुछ दिनों पूर्व उस अधिकारी ने कुछ ऐसी बातों की खोज की है जिनके आधार पर एक महत्वशाली गिरफ्तारी की जाने वाली है अर्थात......"

कहते-कहते वह रुक गया और शंकित दृष्टि से मेरी ओर देखने के बाद शेष वाक्य उसने अपने मित्र के कान में कहकर पूरा कर दिया।

"कसम है सैन्ट क्लाडी मेयर की।" अलेक्सस ने आवेश में आकर कहा—"वह स्त्री, जिसको हमारे राजा के कत्ल के बाद गिरफ्तार करने का इतना जोरदार प्रयत्न भी असफल रहा, यदि पकड़ी गई तो निस्संदेह जल्लाद की तलवार का सबसे नाजुक और कोमल शिकार होगी। मैंने उसकी सुन्दरता की बहुत प्रशंसा सुनी है। कहते हैं उसको शैतान का दिल और देवताओं का रूप मिला है।"

कप्तान ग्रेगरी के उजले तातारी मुख पर वासना की चमक-सी पैदा हो गई। होंठ चाटकर वह कहने लगा—"ऐसी स्त्री को कत्ल

करने के लिए तो मैं स्वयं भी बड़ी खुशी से जल्लाद बनना स्वीकार कर सकता हूँ।"

फिर बातें समाप्त हो गईं।

गाड़ी सीमा के अन्तिम स्टेशन के समीप पहुँचने वाली थी, इसलिए वे दोनों ताश रखकर अपना-अपना सामान ठीक करने लगे।

"जंगली! कमीने!" मैंने अपने मन में कहा—"अच्छा है, मेरा और तुम लोगों का साथ अगले स्टेशन पर छूट जाएगा और मुझे ऐसी षड्यन्त्र-भरी, विचित्र और भयानक कथाएं सुनने के लिए विवश न होना पड़ेगा।

बुदबुदाकर मैंने करवट बदली और उपन्यास पढ़ने में तल्लीन हो गया।

३

यूं तो योरुप की यात्रा में, जहां कई देश एक दूसरे से मिले हुए और पास-पास हैं, वहां पासपोर्ट सदा ही एक मुसीबत होता है। परन्तु शुक्र है, मुझे अपने पासपोर्ट के विषय में किसी प्रकार की चिन्ता न थी। मेरे पास मेरा और मेरी पत्नी के नाम का पासपोर्ट मौजूद था। उसे मैंने पेरिस स्थित रूसी राजदूत द्वारा प्रमाणित भी करा लिया था। [illegible]के अतिरिक्त मेरे पास एक प्रभावशाली सिफारशी पत्र कान्सट[illegible]इन वैलस्की के नाम भी था जो मेरे दामाद के बड़े भाई होते हैं। वह [illegible]ी समय रूस के दरबार में एक साधारण से सेवक थे किन्तु अपने [illegible]नों से अब रूस के बादशाह ज़ार के सबसे अधिक विश्वासी दरबारी [illegible]र सलाहकार समझे जाते थे।

मेरी इकलौती बेटी का विवाह कुछ समय पूर्व जापान में एम[illegible] [illegible]लटस्की के छोटे भाई वसील से हुआ था और इस समय मैं अपनी बेटी और छोटे धेवते से मिलने पहली बार रूस जा रहा था। वसील का हाल आप लोगों ने पत्रिकाओं में पढ़ा होगा। यह वही नवयुवक था जो मार्केप्लोना में ग्रेवस्का पहाड़ी के समीप मुट्ठी भर सेना के साथ तुर्कों का मुकाबला करते हुए स्वर्ग सिधारा था। रूस के राजकीय

लेखों में उसका नाम सम्मानीय और महत्त्वपूर्ण रूप में लिखा गया है।

पहले हम पति-पत्नी दोनों हा रूस जाने के लिए तैयार थे। यहां तक कि पासपोर्ट भी दोनों के नाम का ही लिया था, किन्तु समय पर मेरी पत्नी रूस की कड़कड़ाती सर्दी से डर गई और मुझे यह कहकर अकेला विदा कर दिया कि यदि सर्दी इतनी अधिक न हुई, जितनी कि सुनी जाती है तो दूसरा पासपोर्ट लेकर वहीं आप से आ मिलूंगी।

अमेरिका मेरा अपना देश है और मैं वहां की सेना का पेन्शनर अफसर हूं। विधवा होने के बाद मेरी बेटी कुछ सप्ताह तक मेरे पास अमेरिका में रही थी और फिर अब से लगभग कुछ माह पूर्व ही वह अपनी ससुराल चली गई थी।

तेज बजती हुई घंटियों और सीटियों की आवाज़ों के साथ ट्रेन एटकोहनन के सीमावर्ती स्टेशन पर पहुंच गई। इसके आगे रूसी ट्रेन केवल ६ फुट चौड़ी पटरी पर चलती है अतः यहां गाड़ी बदलना आवश्यक होता है। रूसी सरकार ने रेलवे लाईन को अधिक चौड़ा यह सोचकर नहीं किया है कि आक्रमण के समय शत्रु अपनी गाड़ियों को देश में न ला सके।

गाड़ी बदलने के अतिरिक्त चूंकि उस स्थान पर पासपोर्ट और सामान की जांच-पड़ताल भी की जाती है इसलिए दूसरी ट्रेन पहली ट्रेन के आने के ढाई घण्टे बाद चलती थी ताकि यात्रियों का सामान आदि पूरी तरह जांचा जा सके।

स्टेशन के बिल्कुल सामने वह सीमान्त रेखा है जो रूस और जर्मनी को एक दूसरे से अलग करती है। जानकारी के लिए एक बहुत ऊंची लोहे की बाड़ सीमान्त रेखा के साथ-साथ दूर तक चली गई है जिसके दोतरफ़े रंगीन साइनबोर्डों पर जहाँ-तहाँ रूसी और जर्मनी भाषाओं में इस आशय की आज्ञाएं लिखी हुई हैं कि यात्रियों को सावधानी, दूरदर्शिता और खामोशी से काम लेना चाहिए। फिर शायद इस शाब्दिक आज्ञा को अपर्याप्त समझकर बाड़ के दोनों ओर सशस्त्र सैनिक खड़े कर दिये गये हैं जो भारी काले बूटों पर घुड़सवारी की मेखें बांधें, संगीनें चढ़ाए और आग्नेय दृष्टि से एक-दूसरे

की ओर देखते, झटकेदार चाल से गश्त में तल्लीन दिखाई देते हैं।

पत्थर के बने हुए शानदार स्टेशन से बिल्कुल मिला हुआ महसूल-घर है और उससे जरा दूर पर रूसी सीमा में एक अच्छा रेस्टोरां है।

उस रेस्टोरां तक पहुंचने के लिए लोहे के फाटक से गुजरना, पासपोर्ट दिखाना और सामान का निरीक्षण कराना आवश्यक था और एक भरी हुई ट्रेन की सवारियों के टिकट, पासपोर्ट और सामान दिखाने में कुछ कम समय खर्च नहीं होता। कुछ ही देर में एक सौ से अधिक भूखे यात्री लोहे के तंग शेड में पहुँचकर खड़े हो गये। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद उनसे रौब से कहा जाता था—"सब आदमी पासपोर्ट निकालो और अपना-अपना सामान दिखाओ ?"

एक ओर इन आज्ञाओं को पूरा करना और दूसरी ओर पेट की तेज भूख, बेचारे मुसाफिरों के लिए दुगनी चिन्ता और कष्ट की स्थिति पैदा कर रही थी।

उस समूह की ओर दयार्द्र दृष्टि से देखते हुए मैंने भी अपना पासपोर्ट और कुंजियों का गुच्छा निकाल लिया। फिर मैंने मुसाफिरों की उस असीमित भीड़ को देखकर चारों ओर निराशाभरी दृष्टि डाली।

कीमती समूरों में लिपटी हुई स्त्रियां, चंचल फ्रांसिसी नौकरानियां, रईस, खाली जेब बांके नवाब, मैले-कुचैले यहूदी—जिनके गलों में चिकनी पोस्तीनें और खाल की टोपियों से निकली हुई सूखी और मैली जुल्फें लटक रही थीं, कम्बलों में लिपटे किसान, मस्त सिपाही, घबराया हुआ परेशान मुसाफिर और उनके अतिरिक्त बीसियों प्रकार की परेशान आकृतियां उस समूह में सम्मिलित थीं।

बड़े-बड़े फ़ौजी अफ़सर चटकीले रंग वाली वर्दियां पहने, लम्बी तलवारों के म्यान को ज़मीन पर घसीटते और मूंछों पर हाथ फेरते हुए सुन्दर स्त्रियों को घूर रहे थे।

मेरी बारी बड़ी देर बाद आई। पासपोर्ट मेरे पास था। एक दाढ़ी वाले कर्नल ने—जिसकी वर्दी पर तमगे लटके हुए थे, उसे लेकर ध्यान से देखा और फिर आंख उठाकर प्रसन्न मुद्रा में कहने लगा—

"अमीर कमेन्सकी······गोडा। मतलब यह कि आप अमेरिका से आए हैं। खूब!"

मैंने उसे धन्यवाद दिया। पांच डालर, जो मैंने उस पासपोर्ट पर खर्च किये थे, बेकार नहीं गये। पासपोर्ट मेरा और मेरी पत्नी का था परन्तु इस पर निरीक्षण करने वाले अफ़सर को किसी प्रकार का ऐतराज़ नहीं हो सकता था।

कर्नल ने पासपोर्ट मुझे लौटा दिया और सामान का निरीक्षण करने वाले अफ़सर की तरफ इशारा किया। मैंने देखा कि कई निराश मुसाफिर जिन के पासपोर्टों में कमियां रह गई थीं, रोनी सूरत बनाए एक ओर खड़े थे, और कुछ जोशीले व्यक्ति इन परेशानियों के विरोध में एक गुट बनाने की सोच रहे थे।

मैं सोच रहा था कि यह मेरा सौभाग्य है कि दो-चार मिनिट बाद मैं निरीक्षण की पाबन्दियों से छुटकारा पा जाऊंगा और रूस की भूमि में प्रविष्ट होकर सुन्दर और सुखद रेस्टोराँ में पहुँच जाऊंगा।

अकस्मात मुझे एक मधुर स्वर ने चौंका दिया। कोई स्त्री अंग्रेजी भाषा में मुझसे कह रही थी—"श्रीमन, क्षमा कीजिएगा, मैं आपसे कुछ निवेदन करना चाहती हूँ।"

मैंने चौंककर पीछे घूमकर देखा—एक परम सुन्दरी, कोमलांगी स्त्री लजाती हुई नज़रों से मेरी ओर देख रही थी। अच्छी सूरत मेरे हृदय पर हमेशा प्रभाव डालती है। मेरी दृष्टि में स्त्री का सौन्दर्य वह ईश्वरीय देन है जिसे देख कर बूढ़े तोतों की आंखें भी तिलमिला जाती हैं।

मैंने ध्यान पूर्वक उसे देखा। कितनी भोली, प्यारी और मादक कण्ठ स्वर वाली थी वह! उसकी हर एक अदा में अल्हड़पन झलक रहा था। उसकी आंखों में लाचारी और विवशता के ऐसे भाव थे जो मेरे हृदय में बरबस अंकित हो गये।

उसने दोनों कोमल हाथ और मदभरे काले-काले दोनों नयन, भोलेपन के साथ ऊपर को उठाए हुए थे। दोनों नाजुक पाँव बढ़िया ऊंची एड़ी और पालिश वाले बूटों में बन्धे हुए थे।

टोपी उठाकर उसका अभिवादन करते हुए मैंने हल्की मुस्कान के

साथ उत्तर दिया—"कहिये, क्या आज्ञा है ?"

परन्तु इससे पहले कि वह उत्तर देती, मैंने अपने मन में कहा—बातचीत और वेषभूषा से तो यह अपने देश की ही प्रतीत होती है। ऐसी मनमोहनी से मिलकर किसे प्रसन्नता न होती ?

"कृपा करके अपना हाथ मेरे हाथ में दे दीजिये।" उसने हल्की और कांपती हुई आवाज में कहा—"मैं नहीं चाहती कि कोई हमारी बातों पर सन्देह करे।"

मैं इसके लिए तुरन्त तैयार हो गया। यद्यपि इसके साथ ही भूख की यन्त्रणा और सीमा पार के रेस्टोराँ से आती कांटे-छुरी की मनमोहक आवाज को सुनते हुए मैं यह भी सोचे बिना न रह सका कि यह बातचीत यदि शीघ्र ही समाप्त हो जाए तो अच्छा है। मेरे दूसरे साथी लोग खाना खा रहे थे और हंस-बोल रहे थे। मैं भी जल्दी से जल्दी उस हंसते-खाते छोटे-से गिरोह में सम्मिलित होना चाहता था।

"आपकी भाँति ही मैं अमेरिका से आई हूं।" मेरी उस नई-नवेली मित्र ने कहना आरम्भ किया—"और अब रूस में अपने पति के पास जाना चाहती हूँ। वह मुझसे पहले ही वहाँ चले गये और वह पासपोर्ट भी अपने साथ ही लेते गये जो हम दोनों के लिए था। मेरा विचार था कि इन लोगों ने उसकी नकल आदि अपने पास भी रखी होगी परन्तु यहां आने पर ज्ञात हुआ कि बिना असली पासपोर्ट देखे ये लोग मुझे रूस की सीमा में कदापि प्रवेश नहीं करने देंगे। अब मैं बहुत ही दुखी हूँ और सोच रही हूँ कि क्या करूं।"

यह कहकर उसने अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दिया। मेरे सारे शरीर में एक ऐसी लहर दौड़ गई जिसका वर्णन करना मेरे लिए असम्भव-सा जान पड़ता है। उसके शब्द वसन्त ऋतु के समान मनमोहक और किसी नदी की भांति गहराई में मन को डुबोने वाले थे।

"मुझे यह जानकर बहुत दुःख हुआ।"—मैंने सहानुभूति प्रकट करते हुए उत्तर दिया—"किन्तु मुझे खेद है कि मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर सकता। मैं भी आपकी तरह एक यात्री ही हूँ। मेरी सरकार में कोई जानकारी नहीं और न ही इन लोगों पर मेरी सिफ़ारिश ही कोई प्रभाव डाल सकती है। मुझे अमेरिकन फ़ौज से अलग हुए

बहुत समय बीत चुका है और इस समय कुछ मित्रों से मिलने के लिए मैं सैंट पीटर्ज़बर्ग जा रहा हूँ।"

"परन्तु आपकी पत्नी आपके साथ नहीं है यद्यपि पासपोर्ट आपके पास दोनों के नाम का है ?" वह बोली

"यह ठीक है।" मैंने स्वीकार किया—"परन्तु इससे क्या हो सकता है ?"

यद्यपि मैं उसके साथ वार्तालाप करने में आनन्द का अनुभव कर रहा था किन्तु भूख के कारण पेट की अंतड़ियां जल्दी से जल्दी सीमा पार करने के लिए विवश कर रही थीं।

वह मेरे इनकार करने पर भी निराश होने की अपेक्षा आगे झुककर मेरे शरीर से सट गई और मेरी बांह को ज़ोर से दबा आँखें उठाकर नम्रतापूर्वक बोली—"आप यदि चाहें तो मुझे अपनी पत्नी के नाम से सीमा पार ले जा सकते हैं।"

मैं असमंजस में उसकी ओर देखने लगा। सोचने लगा कि वह वास्तविकता है अथवा मज़ाक कर रही है।

"आह ! यदि मेरी पत्नी इस घटना को सुने तो क्या हो ?" मैंने मन ही मन में सोचा—"मेरी पत्नी मिसेज़ लेनाक्स बहुत ही सहनशील और चरित्रवान है, तो भी संसार में कौन ऐसी स्त्री होगी जो ईर्ष्या से बची हुई हो !"

तभी उसने फिर कहा—

"मैं आप से विनती करती हूँ कि आप मुझे छोड़कर न जाइये।" मैं नहीं जानती, यदि मैं सीमा पार न जा सकी तो क्या होगा ? इस के अतिरिक्त ये लोग मुझे आपकी पत्नी समझ भी रहे हैं। यही कारण था कि पहले द्वार पर किसीने भी मुझसे पासपोर्ट देखने की इच्छा प्रकट नहीं की।"

सुनकर मेरे चेहरे का रंग उड़ गया। एक अनजान स्त्री और मेरी पत्नी ?

"मैं झूठ नहीं कह रही हूँ ?" उसने सम्भवतः मेरे मन का हाल जानकर तुरन्त कहा—"चीफ़ इन्सपेक्टर ने मुझे आपकी पत्नी समझा है और यदि आप कृपया कुछ समय तक इस नाटक को जारी रखने

का कष्ट करें तो मेरे लिए यह यात्रा असम्भव न होगी ? आप मेरे देशवासी हैं। देशप्रेम के नाते ही मुझे निराश न कीजिये। मेरे पति बेचैनी से मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे। आप विश्वास रखें कि वह आपके इस उपकार के लिए हृदय से आभारी होंगे।"

यह कहते हुए वह मेरे साथ सटकर खड़ी हो गई। मेरे मस्तिष्क में विचारों की आंधी उठ रही थी, नाड़ियां रक्त-प्रवाह से तनी हुई थीं और हृदय बड़े ज़ोर से धक-धक कर रहा था। सहृदय तो मैं पहले दिन से ही प्रसिद्ध हूँ परन्तु ऐसे अवसर पर जब सौंदर्य भोली आँखों से विनती कर रहा हो, किसी मनुष्य का मौन ही किसी सुकुमारी की कठिनाइयों को दूर कर सकता हो···तो बड़े-बड़े पाषाण-हृदय भी पिघल जाते हैं। मुझ जैसे सहृदह का तो कहना ही क्या ?

सामान की देखभाल करने वाले अफ़सर की कर्कश आवाज ने सहसा मुझे जैसे जगा दिया। मैंने देखा कि सब यात्री वहां से निकल गये हैं, केवल मेरा और मेरे साथ वाली सुन्दरी का सामान ही चैक होना बाकी है।

कर्नल जिसने मेरे पासपोर्ट का निरीक्षण किया था, काम खत्म करके अपने कमरे की ओर जा रहा था। हमारे पास से गुजरते हुए उसने मेरी उस कृत्रिम पत्नी को सराहनीय दृष्टि से देखा और "लावेल अमेरिकन···(अमेरिका की सुन्दरी)" बड़बड़ाता हुआ आगे बढ़ गया।

"भगवान के लिये मेरी विनती अस्वीकार न कीजिये।" वह सहमी हुई मेरे साथ लगकर दबी हुई आवाज़ में कह रही थी—"यदि आप मुझे छोड़कर चले गये तो आश्चर्य नहीं कि ये लोग मुझे गिरफ्तार कर लें। अपने देश की स्त्री का अपमान आप न होने देंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।"

सुनकर मैंने कुंजियां इन्सपेक्टर की ओर फेंक दी। उसने कुंजियां उठाकर मेरे बक्स खोले और एक-एक करके सारी चीजें निकालनी आरम्भ कर दीं।

"मेरे ख्याल में आप मुझे क्षमा करें तो उचित है।" फिर मैंने धीरे से उस सुन्दरी से कहा।

इन्सपेक्टर मेरे सामान का निरीक्षण कर चुका था और अब वह उस सुन्दरी के भारी सामान की ओर जा रहा था। अतः इस विषय में मेरे अन्तिम निर्णय के लिए बहुत कम समय शेष रह गया था।

वह दयाद्र नेत्रों से मुझे देखती हुई बोली—"देखिए, मैं इस अपमान को सहन न कर सकूंगी? सम्भव है कि मुझे आत्मघात करना पड़े। याद रखिये एक देशवासी स्त्री के निर्दोष खून का अपराध आपकी गर्दन पर होगा।"

इसके साथ ही उसने अपनी कुंजियों का गुच्छा भी मेरे हाथ में दे दिया और चुंगीघर के अफसर के पास चली गई।

कुछ दुखित होकर मैंने इन्कारी में हाथ हिलाया। मेरा आशय समझकर वह ज़ोर-ज़ोर से काँपने लगी और अन्तिम प्रार्थना करती हुई दबी हुई आवाज़ में बोली—"इतनी सहायता जब कि वह आप के मौन रहने से ही हो सकती है, यदि आप नहीं करेंगे तो कितने खेद की बात है। 'ना' न कीजिये, और एक देशवासी स्त्री तथा उसके पति को सदैव के लिए अपना कृतज्ञ बना लीजिये।"

इस प्रार्थना ने मेरे भाग्य पर एक मोहर लगा दी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो मेरे पाँव तले से जमीन खिसक रही हो। बेचैन हालत में मैंने इधर-उधर देखा। यदि उस समय उसका पति या मेरी पत्नी अचानक वहाँ आ जाते तो क्या होता?

पासपोर्ट इन्सपेक्टर अपने कमरे के दरवाज़े में खड़ा हम दोनों को आश्चर्य से देख रहा था। क्या उसे हम पर सन्देह था? नहीं, यह नहीं होना चाहिये।

एक निर्दोष स्त्री का अपमान मुझसे न देखा जाएगा।

कर दिया ।

नए-नए फैशन के अनगिनत वस्त्र और शृंगार की असंख्य वस्तुएं तेल, सैंट लेवेन्डर आदि की शीशियाँ, रेशमी मखमल और साटन के कढ़े हुए अनेक प्रकार के सलीपर, कई नमूनों के बूट, सन्दूक से निकल कर इधर-उधर फैल गए।

मेरे वृद्ध हृदय में भी एक विचित्र प्रकार की लहर-सी पैदा हो गई। कभी मैं वस्त्रों को और कभी उस सुन्दरी को, देख रहा था। मैं सोच रहा था कि इन कपड़ों में वह कितनी सुन्दर और आकर्षक दिखाई देती होगी।

अनेक बार देखने के बाद सभी ट्रंक बन्द करके दूसरी ट्रेन पर भिजवा दिये गये। मैंने एक रूबल निरीक्षणकर्त्ता की ओर फेंका। वह उस रूबल को लेकर खाना खाने के लिए इस प्रकार दौड़ा, जैसे कोई पक्षी पिंजरा खोलकर उड़ा दिया गया हो।

उस सुन्दरी के हाथ पर मेरे हाथ की पकड़ और भी मजबूत हो गई। उसके वस्त्रों की सुगन्धी तेज़ी के साथ मेरे पास आने लगी। मैंने धीरे से गर्दन घुमा कर देखा। उसकी सुन्दर चमकीली आँखें जो चिन्तित होकर और भी चित्ताकर्षक हो गई थीं, मेरी आँखों से टकराई। वह बड़े जोर से लड़खड़ाई और मेरे साथ सट गई।

उसे सांत्वना देते हुए मैंने धीरे से कहा—"आपका सामान कितना सुहावना है।"

वह मेरे साथ ही लगी हुई अन्तिम द्वार से गुज़री। और इस प्रकार हम विना किसी रोक-टोक के सीमा से गुजरकर रूस की भूमि में पहुंच गये।

दूसरा परिच्छेद
दुःख और पश्चात्ताप

१

लोहे के फाटक के बन्द होने की आवाज़ कैदखाने के दरवाज़े की भाँति भयानक थी। उसको सुनकर मेरी बांह पर रखा हुआ उस सुन्दरी का हाथ पहले थरथराया और फिर शिथिल हो गया। मैंने देखा, वह चौंकी और काँपने लगी। उसका सुन्दर चेहरा हल्दी की भाँति पीला पड़ गया। उसने शीघ्र ही संयत होने का प्रयत्न किया और एक फीकी-सी मुस्कुराहट उसकी आँखों और होटों के चारों ओर झलकने लगी। दबी आवाज़ से वह बोली—

"मेरी कुंजियाँ अपने ही पास रखिये। इससे हमारा सम्बन्ध वास्तविक ही प्रकट होगा।"

"अच्छा प्रिय, जो तुम पसन्द करो।" मैंने मुस्कराकर उत्तर दिया—"एक बार इस नाटक को आरम्भ करने के पश्चात निभाना ही पड़ेगा। पति-पत्नी का सम्बन्ध चाहे कितना ही बनावटी क्यों न हो, संकोच नहीं होना चाहिये।" इतना होने पर भी, मैंने देखा कि वह मेरे शब्दों से झिझककर पीछे हट गई और लज्जा से उसका पीला चेहरा आरक्त हो उठा।

उधर मैं स्वयं लज्जित था। उस पत्नी के होते हुए, जो पेरिस में बैठी हुई मेरे पत्र की प्रतीक्षा कर रही होगी, मैं किस मुंह से एक अपरिचित स्त्री से यह सब कुछ कह रहा था ?

मानसिक उद्विग्नता को शीघ्रतिशीघ्र हृदय से निकालने के लिए

मैं उस सुन्दरी के साथ तेज-तेज कदम बढ़ाता हुआ रेस्तोराँ में चला गया। कुछ यात्री खाना खाकर उठ गये थे और कुछ अब तक मेजों पर बैठे खा रहे थे।

मैंने चारों ओर देखा। सब मेज़ें रुकी हुई थीं। केवल एक रिजर्व मेज ही खाली थी। उस मेज पर भी वह कर्नल साहब जिन्होंने हमारे पासपोर्टों का निरीक्षण किया था, कब्जा जमाने की फ़िक्र में थे।

हमारी व्यग्रता देखकर हैड वेटर ने दबी ज़बान में कर्नल साहेब से कुछ कहा, जिसका उत्तर उसने मुस्कुराते हुए दिया। इसके बाद तुरन्त ही हम दोनोंको उसकी मेज़ के पास पहुंचा दिया गया। नारी विजयी है। यह मेरी नाम मात्र की पत्नी की असाधारण सुन्दरता ही थी जो इस अवसर पर लाभदायक सिद्ध हुई।

रेस्तोराँ के प्रबन्धक ने खाने और शराब का मीनू हमारे सामने रखा। उसे देखकर श्रीमती ने 'एक भद्र पुरुष की चहेती पत्नी के ढंग से' खाने की उत्तम सामग्री मंगाई और उसके साथ ही यह कहकर मुझे आश्चर्य में डाल दिया।

"क्यों आर्थर! तुम्हारी क्या सम्मति है?"

मैं आश्चर्यचकित दृष्टि से उसकी ओर आंखें फाड़कर देख रहा था कि उसे मेरा नाम कैसे मालूम है। फिर मैंने सोचा कि शायद उसने पासपोर्ट पर उसे देखा होगा।

प्रबन्धक के जाने के पश्चात मैंने अपनी पत्नी की ओर देखकर कहा—

"तुमने मुझे आर्थर कह कर बुलाया था और इसमें सन्देह भी नहीं, कि मेरा नाम भी यही है। किन्तु पति-पत्नी के इस नाटक को अन्त तक निभाने के लिए हमें एक दूसरे के नामों से परिचित होना आवश्यक है। इसलिए यदि तुम भी मुझे अपना परिचय दो तो अच्छा है।"

"मेरा नाम!···हैलियन।"

"पहला नाम···और दूसरा?"

"मेरी।"

"हैलियन मेरी···क्या प्यारा नाम है?" मैंने कहा—"इसमें

आगे ?"

"इससे आगे मेरा नाम वही है जो आपका ! इसलिये पहले आप अपना नाम बताइये।" उसने चंचलता से कहा—"मैंने पासपोर्ट पर केवल आपका पहला नाम देखा था।"

"मेरा नाम लेनाक्स है।" मैंने उत्तर दिया—"आर्थर बैन ब्रज लेनाक्स।"

"वह इस नाम को सुनकर चौंकी, किन्तु शीघ्र ही कृत्रिम मुस्कुराहट से कहने लगी—

"तब तो मेरा नाम भी लेनाक्स होगा, क्योंकि इस समय मैं आपकी पत्नी हूँ। याद रखिये इस समय की तनिक-सी भूल अत्यन्त कष्टदायक सिद्ध होगी। इस देश में नकली पासपोर्ट का प्रयोग..."

वह वाक्य को अधूरा ही छोड़कर चुप हो गई, क्योंकि पैट्रोफ दोबारा वापस आकर उसके समीप बैठ रहा था।

"श्रीमती जी ?" उसने अपनी कुर्सी पर बैठकर कहा—"मैं हृदय से क्षमा चाहता हूँ कि भोजन करते समय आपका साथ छोड़ना पड़ा।" और यह कहते हुए उसने नकली मिसेज़ लेनाक्स की तरफ अधखुली आँखों से देखा—"किन्तु विवश था। संभवत: आपको ज्ञात होगा कि इस देश में पासपोर्टों की देख-भाल बड़ी सख्ती से की जाती है। अभी-अभी एक यात्री नकली पासपोर्ट प्रयोग करने के अपराध में पकड़ा गया है।"

"नकली !" मेरी सुन्दर पत्नी ने चौंक कर पूछा—"कोई पुरुष था या स्त्री ?"

"जी नहीं, पुरुष।" पैट्रोफ ने उत्तर दिया।

"इसी कारण तो आप इतनी शीघ्रता से वापस लौट आए।" हैलियन ने चंचल दृष्टि से उसे देखते हुए कहा—"यदि कोई स्त्री, युवा और सुन्दर होती तो शायद आप अधिक समय तक वहीं ठहर जाते—"

रूसी कर्नल की काली तातारी आंखों में तेज़ चमक पैदा हो गई। हैलियन को प्रेमभरी दृष्टि से देखते हुए वह कहने लगा।

"श्रीमती जी, मैं सच कहता हूं कि संसार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी भी यदि अपराधी हो, तो वह भी मुझे इस सुन्दर सुख से वंचित नहीं

"रूस से जाने का पासपोर्ट मेरे पास कहाँ से आयेगा ? अभी-अभ
पन्द्रह मिनट पहले ही आपने मुझे इस ओर से जाते देखा था।
इस जर्मन ट्रेन पर जो सामने खड़ी है, आया हूँ, और अब एक आव
श्यक काम से दोबारा वापस जाना चाहता हूँ। मेरी गठरी उसी
रह गई है। मेरी कितनी ही मूल्यवान वस्तुएं उसमें हैं जिन्हें मैं छो
नहीं सकता।"

"खैर कुछ भी हो।" उस सैनिक ने धैर्यपूर्वक बड़ी नम्रता से
कहा—"बिना पासपोर्ट के आप यहाँ से बाहर नहीं जा सकते।"

"मगर सुनिये तो, ऐसी भी क्या मुसीबत है ? मैं उस गठरी ही
को तो लेने जा रहा हूँ।"

"हो सकता है परन्तु मैं इसकी आज्ञा नहीं दे सकता।"

मैंने ध्यानपूर्वक उसकी ओर देखा।

रंग-ढंग से वह कोई अफ़सर प्रतीत होता था। इस बारे में जो
कुछ सन्देह था, वह उन पहरेदारों के आगमन ने दूर कर दिया था,
जो हमारी बातचीत सुनकर आ पहुंचे थे और उस फ़ौजी अफ़सर के
पीछे खड़े थे।

उन तीन सैनिकों में से निकलना वास्तव में बहुत कठिन था।

"मगर हाँ"······कुछ क्षणों के बाद उसने और भी नम्रतापूर्वक
कहा—"आपकी प्रार्थना एक और ढंग से पूरी की जा सकती है।"
यह कहकर उसने दबे स्वर में नायब को कुछ आज्ञा दी।

थोड़ी देर बाद उस ट्रेन का गार्ड, जिस पर मैंने यहाँ तक की
यात्रा की थी, जर्मन सीमा की लाइन पर आकर खड़ा हो गया।

"यदि आप उस गठरी का ठीक हुलिया बताएं तो" उसने
कहा—"मैं उसकी खोज करके सैंट पीटर्ज़बर्ग भिजवा दूंगा।"

मैंने समय की विवशता के कारण एक झूठ बोला था, अब लाचार
होकर दूसरी बार भी झूठ बोलना पड़ा। गठरी का मनघड़न्त हुलिया
बताकर मैंने उसे बहुत ही आवश्यक बताया और अपना सैंट पीटर्ज़-
बर्ग का पता लिखवाते हुए एक जर्मन मुद्रा जेब से निकालकर उसे
पुरस्कार के रूप में दी, ताकि वह मेरे कहने पर किसी प्रकार का
सन्देह न करे।

"विश्वास रखिये," जर्मन गार्ड ने वह मुद्रा अपनी जेब में डालते हुए कहा—"वह गठरी चौबीस घंटों में आपके पास कोठी नम्बर पाँच, अंग्रेजी घाट, सैंट पीटर्ज़बर्ग के पते पर पहुंच जाएगी।"

"आपकी इस कृपा का धन्यवाद।" मैंने हल्की-सी बनावटी मुस्कुराहट के साथ उत्तर दिया, परन्तु उस कम्बख्त सैनिक को मैं बुरी तरह कोस रहा था, जिसकी ज़रा-सी रोक-टोक ने मेरा बना-बनाया सारा काम चौपट कर दिया था। अब मैं था और वह निर्दयी रूस की भूमि, जिसके भयानक पंजे में एक बार फंस जाने के बाद बचाव की कोई सूरत दिखाई न पड़ती थी। अत: मार खाए हुए कुत्ते की भाँति मैं फिर उस रेस्तोराँ की ओर चल दिया।

३

अनेक प्रकार के भयावने विचार मेरे मस्तिष्क में तूफ़ान की भाँति उमड़ रहे थे। इसमें सन्देह नहीं कि अब मेरे सामने पति-पत्नी का वह नाटक पूरा करने के अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग न था, जिसके आरम्भ में निस्सन्देह एक कोमल सुकुमारी को पत्नी कहकर मैं प्रसन्न हुआ था, किन्तु जिसका परिणाम था, अपमान, कैद और साएबेरिया का हिमपात।

पाठक जो इस कहानी को मनोरंजन के लिए पढ़ रहे हैं, मुझे आशा है कि मेरी परेशानी देखकर हंस रहे होंगे, किन्तु उनको ध्यान रखना चाहिए कि हलवे का स्वाद उसके खाने में ही है। किसीने सच कहा है कि जिस पर पड़ती है वही जानता है।

मुझे अपनी प्रिय पत्नी के वे अन्तिम शब्द जो उसने विदा करते समय मुझसे कहे थे; एक-एक करके स्मरण होने लगे। मानो वह कह रही थी।

'प्रिय आर्थर; तुम बड़े नम्र-हृदय प्रसिद्ध हो। ऐसा न हो कि तुम्हारी नर्मदिली, विशालता और वीरता कहीं तुम्हें भारी कठिनाइयों में फंसा दें। सबसे बढ़कर तुम सुन्दर युवतियों के प्रपंच से बचना। क्योंकि तुम बहुत जल्दी उनके धोखे में आ जाते हो। याद है कि

मौसियो को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि वह पति बनने के बा
भी एक प्रेमी की भाँति आपको चाहते हैं।"

उसकी बातों से हैलियन के सुन्दर मुख पर रह-रहकर लज्
की लालिमा दौड़ रही थी। उसकी बढ़ती हुई बेचैनी को नई दुल्ह
की शान समझकर अनुभवी कर्नल कहने लगा—"नहीं-नहीं, आ
मुझसे मज़ाक करते हैं। यह लज्जा, यह प्रेम, नई-नवेली दुल्हन
ही पाया जाता है।" फिर अपनी धुन में बोलते हुए वह कहता गया—
"आप लोग सीज़न के लिए सैंट पीटर्ज़बर्ग जा रहे हैं। आशा है
शरद्-ऋतु में वापस आते समय आपके फिर दर्शन होंगे।"

इसका उत्तर मेरी नवीन पत्नी ने आँखों के इशारे से दिय
किन्तु मैं कुछ भी न समझ सका। कर्नल ने मेरे मन में एक न
चिन्ता का बीज बो दिया था और अब मैं उन्हीं विचारों की उल
झन में फंसा हुआ था।

कर्नल पैट्रोफ ने कहा था कि वह दौरा करता हुआ उसी ट्रे
पर जा रहा है। यदि वह हमारे ही डिब्बे में बैठ जाए, और किसी दूर
स्थान पर उतरने का निश्चय कर ले, तो ऐसी अवस्था में मैं अपन
नाम मात्र की पत्नी को वल्ना के स्टेशन पर कैसे छोड़ सकूंगा?

यह विचार मेरे मन में उठते ही शीतलता की लहर एक बा
फिर मेरे सारे शरीर के अन्दर दौड़ गई।

८

पहली घंटी की आवाज़ सुनते ही कर्नल पैट्रोफ हमारे लिए डिब्ब
रिजर्व कराने चला गया। मेरी पत्नी का प्रेमी होने के नाते वह उसके
आराम की हर बात को अपने सुखों से बढ़कर समझ रहा था।

उसके जाने के बाद मैं हैलियन की ओर मुड़ा और कुछ कठोर
शब्दों में बोला—"श्रीमती जी! आपकी कृपा के कारण जो कठि
नाइयाँ मेरे लिए उत्पन्न हो चुकी हैं वे पहिले ही क्या कुछ कम थीं, जो
आपने यह कहकर और भी बढ़ा दीं कि हम सैंट पीटर्ज़बर्ग जा रहे
हैं। भला यह बात इस मनुष्य को बताने की क्या आवश्यकता थी?"

"मुझे अत्यन्त खेद है कि आप समझे नहीं।" वह कुछ उपेक्षामय दृष्टि से मुझे देखते हुए बोली—"उसने आते समय आपका सैंट पीटर्ज़-बर्ग का टिकट पासपोर्ट के साथ ही देख लिया था, फिर मैं आपकी पत्नी होते हुए यह कैसे कह देती कि मैं वलना जाऊंगी। विशेषकर ऐसी दशा में, जब कि वह मेरी चिन्ता एक प्रेमिका की भाँति कर रहा हो।"

"चिन्ता? कैसी चिन्ता? मैं नहीं समझा।" एक विचित्र प्रकार के आवेश के साथ, जिसमें कुछ प्रसन्नता की और कुछ मूर्खतावश उत्पन्न दुख की झलक थी, मैंने पूछा।

प्रसन्नता इस बात की थी कि वह मेरी क्षणिक अनुपस्थिति तक सहन न कर सकी और दुख इस बात का था कि उसकी यह सब प्रेम-लीला बनावटी थी। वह कहने लगी—

"आपके जाने के बाद मेरे मन में अनेक प्रकार के सन्देह उत्पन्न होने लगे थे। यह मैं भली प्रकार जानती थी कि आप कर्नल की बातों से भयभीत होकर सीमा पार जाने का प्रयत्न करने लगे हैं। इसी लिए यह सोचकर जी डूब-डूब जाता था कि यदि आप अपने प्रयत्न में सफल हो गये तो मेरा क्या हाल होगा? मैं आपको मनाने के लिए आपके पीछे भी तो नहीं जा सकती थी! क्यों कि इस बात से कर्नल के हृदय में अवश्य सन्देह हो जाता। दूसरी ओर मैं इस लिए बेचैन थी कि आपके चले जाने के बाद मैं क्या करूंगी। बिना पासपोर्ट के मेरा यहाँ रहना क्षण भर के लिए भी कठिन था। ऐसी दशा में एक साधारण सैनिक या पुलिस का सिपाही भी मुझे बन्दी बनाकर हवालात भेज सकता था। खेद है कि आपने मुझपर उपकार तो किया किन्तु अधूरा किया! वरना क्या यही आपका साहस था कि एक निस्सहाय अबला को अपरिचित देश की भूमि पर छोड़कर स्वयं वापस लौटने की चिन्ता करने लगना? उधर आप सुरक्षित होकर अपनी बर्लिन यात्रा पूरी कर रहे होते और इधर मैं इस देश के भयानक कारागार में पड़ी सड़ा करती?"

मुझ पर यह व्यंग कसकर उसने एक ठंडी सांस भरी और फिर गम्भीर स्वरों में कहने लगी—"जब डक गेन्ज़ को यह हाल मालूम

होता तो वह क्या कहता ?"

"डक गेन्ज़ को ?" मैंने घबराकर पूछा।

"हाँ। डक गेन्ज़ को।" उसने तिर्छी चितवन से देखते हुए उत्तर दिया—"वैस्ट प्वाइन्ट का डक गेन्ज़, जो आपका गहरा मित्र है। कितनी ही बार मैंने उसे अपने प्यारे मित्र आर्थर बैन ब्रिज लेनाक्स की प्रशंसा करते सुना है। क्या आप उनकी परम मैत्री का यही पुरस्कार देना चाहते थे ?"

"मगर......अरे......मैं नहीं समझा कि डक गेन्ज़ का इस घटना से क्या सम्बन्ध है।"

"सम्बन्ध ? सम्बन्ध यही है कि मैं उनकी पत्नी हूँ।" वह बोली।

"आप मेरे परम मित्र डक गेन्ज़ की पत्नी हैं ?—क्या सचमुच ? लेकिन आपने इसका ज़िक्र पहले क्यों नहीं किया ?"

"इसका कारण यह है कि मैं एक ही समय में आप दोनों को आश्चर्य में डालना चाहती थी। वल्ना पहुंचकर जब मेरे पति मुझे स्टेशन पर लेने आयेंगे तो मैं आपका हाथ उनके हाथ में देकर कहूंगी कि प्रिय डक आप अपने प्रिय मित्र कर्नल लेनाक्स को धन्यवाद दें जो आपकी प्रिय पत्नी को कैसी-कैसी कठिनाइयों से निकालकर अपने साथ सुरक्षित ले आये हैं; किन्तु अब यह देखने के बाद कि आप उस रूसी कर्नल की बातों से भयभीत हो गये हैं, मैंने इस रहस्य को अधिक समय तक छिपाना उचित नहीं समझा। आशा है कि यह जान लेने के बाद कि आप अपने प्रिय मित्र डक गेन्ज़ की पत्नी की सहायता कर रहे हैं, सब प्रकार का भय अपने हृदय से निकाल देंगे।"

ने मिलकर शिक्षा प्राप्त की थी। बाद में मैं सेना में भरती हो गया और उसने व्यापार करना आरम्भ कर दिया। बहुत समय तक मुझे उसका पता न लगा। मगर अब पिछले दिनों सुना था कि वह बाकू में मिट्टी के तेल का व्यापार कर रहा है। वल्ना से बाकू को अवश्य कोई मार्ग जाता होगा। इसी कारण उसकी पत्नी वल्ना जा रही थी।

हैलियन सम्भवतः मेरी मनोदशा को भांप गई। एक बार मेरी तरफ चंचल दृष्टि से देखकर वह मुसकराई, कहने लगी—

"सच कहिये। आपने मुझे क्या समझा था? कोई नहलिस्ट रमणी या चरित्रहीन स्त्री?"

"मैं......मैंने जो कुछ आपको समझा।" अब उस रहस्य का पता लग जाने पर मैंने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया—"वह इस एक वाक्य से ही प्रकट है कि डक गेन्ज़ के बराबर भाग्यशाली पुरुष संसार में कोई नहीं है।"

इस बात से मुझे और भी संतोष हो गया कि अपनी पत्नी के सम्मुख बिना किसी प्रकार का झूठ बोले ही मैं इस घटना का वर्णन भली भांति कर सकूंगा। जिस समय मैं उसे अपने मित्र डक गेन्ज़ की पत्नी की सहायता का विचित्र हाल सुनाऊंगा तो वह कितनी प्रसन्न होगी?

हैलियन की हल्की और मधुर आवाज़ ने मेरे विचारों का तांता एक बार फिर तोड़ दिया। वह कह रही थी—"लीजिये, मुझको भी सैन्ट पीटर्जबर्ग का टिकट ले दीजिये।"

"मगर आ......आप तो वल्ना ठहरने के लिए कह रही थीं?" मैंने रुकते हुए पूछा।

"यह सच है और मैं अब भी वल्ना के स्टेशन पर ही उतरूंगी, किन्तु यदि आपके पास सैन्ट पीटर्जबर्ग का टिकट हो और मेरे पास वल्ना का, और यह बात आपके मित्र कर्नल को मालूम हो जाए तो? फिर कहिये क्या होगा? शायद आप भूल गये कि इस समय मैं आप ही की पत्नी हूं। डक गेन्ज़ का हाल मैं उसको थोड़े ही बता सकती हूं।" अन्तिम वाक्य उसने बड़ी ही चपलता से कहा।

फिर उसने सौ-सौ रूबल से भरी हुई पाकिटबुक मेरे हाथ में दे

दी और मैंने उसी के रुपये से सैन्ट पीटर्जबर्ग का एक टिकट ले लिया। इसके साथ ही मुझे उस अनुरोध का भी स्मरण हो आया जो मेरी पत्नी ने मुझसे घर से चलते हुए किया था कि मैं सीमा पार करते ही अपनी कुशलता का तार रवाना कर दूं। एक तार भी मैंने उसके नाम रवाना कर दिया। जिसमें लिखा था—

"मैं एट कोहनन सकुशल पहुंच गया हूं।"

पते की जगह मैं पहले श्रीमती लेनाक्स लिखने लगा था परन्तु यह सोचकर डर गया कि यदि दो पत्नियों वाला यह रहस्य प्रकट हो गया तो बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। अतः मैंने यह पता लिखा—

मिस्टर लेनाक्स. मार्फ़त डूकसल हारज़ज एन्ड कम्पनी, पेरिस।

यद्यपि ऐसा करने में कोई अनुचित बात न थी; किन्तु इस विचार से मेरे मन में घृणा-सी हो रही थी कि रूस में रहते हुए मैं अपने पत्रों पर मिसेज़ लेनाक्स का शब्द नहीं लिख सकता था। इस समय यह ऐसी लाचारी थी जिसे दूर करने का कोई उपाय दिखलाई नहीं देता था।

एक तार मैंने एम० वैलटस्की के नाम सैन्ट पीटर्जबर्ग रवाना किया। जिस में यह लिखा था—

"कल रात सात बजे पहुंचूंगा।"

इस कार्य से निवृत होकर मैंने एक सिगार सुलगाया और उसके कड़वे धुएं से अपने मन की अशान्ति तथा बेचैनी को दूर करने का प्रयत्न करते हुए मैंने रेस्तोरां मे वापिस जाकर अपनी बनावटी पत्नी को साथ लिया और एक आज्ञाकारी पतिदेव की भांति उसका थैला उठाये और उसका एक हाथ अपने हाथ में पकड़े, उस प्लेट फार्म की ओर चल पड़ा जहां नई ट्रेन तैयार खड़ी थी।

मेरा मित्र रूसी कर्नल एक सच्चे वचनबद्ध प्रेमी की भांति प्रथम श्रेणी के साफ़-सुथरे डिब्बे के पास खड़ा हमारी राह देख रहा था। हेलियन को दूर से देखते ही उसने बड़े आदर-सत्कार के साथ हमें सम्मानपूर्वक डिब्बे में सवार करा दिया।

बर्लिन तक पति के कर्तव्य का पूर्णतया पालन करने का निश्चय

करके मैंने अपनी बनावटी पत्नी को अच्छी सीट पर बैठा दिया और उसके समूरी गुलुबन्द को ठीक करते हुए उसके कान में कहा—

"क्यों भला ! डक गेन्ज इस समय देख लेता तो क्या होता ?"

वह इस वाक्य पर खूब हंसी। गेन्ज़ वाले प्रकरण का रहस्य खुलने के बाद मुझे उसकी हंसी कड़वी न लगी बल्कि और भी मन-मोहक जान पड़ी।

तीसरा परिच्छेद

रूस की भमि

उसके जाने के पश्चात मैं सामान के सम्बन्ध में उत्पन्न नई उलझन की चर्चा करने के लिए हैलियन की तरफ मुड़ा। यह देखकर मैं आश्चर्य-चकित रह गया कि वह वास्तव में सो रही थी।

अपने सुन्दर नीले केशों वाले सिर को कोमल हाथ पर रखे वह इस प्रकार पीछे झुक गई थी कि उसकी लम्बी सफेद गर्दन बिल्कुल खुली हुई थी। रूसी भूमि से टकराकर सूर्य की धुन्धली किरणें खिड़कियों से प्रवेश करती हुई उसकी भूरी त्वचा पर पड़कर उसे चमका रही थीं। उसके गुलाबी होठों के बीच जड़ी दन्त-पंक्ति दो मोतियों की लड़ियों की तरह ऊपर-नीचे टिकी हुई दिखलाई देती थी। और उसकी मन्द-मन्द चलती हुई सांस वसन्त ऋतु की सुगन्धित वायु की भान्ति लगती थी।

उस सुन्दरी को देखकर मेरे हृदय से एक लम्बी और ठण्डी आह निकली। मेरे मित्र डक गेन्ज़ के सौभाग्यशाली होने में क्या सन्देह था, जिसे भगवान ने ऐसी सुन्दरी का पति बनने का अवसर प्रदान किया था।

मैं पहले तो उसे जगाने के लिए तैयार था, किन्तु फिर यह सोच-कर रुक गया कि ऐसी मधुर नींद में किसी प्रकार का विघ्न डालना पाप है। उस भोली-भाली युवती के लिए उन कठिन घटनाओं के पश्चात विश्राम की आवश्यकता थी। धूप की तेज़ी कम करने के लिए मैंने शीशा उठाकर पर्दा छोड़ दिया और इसके बाद उस मोहिनी पर से दृष्टि हटाकर एक उपन्यास पढ़ने का प्रयत्न करने लगा।

बहुत ही मनोरंजक फ्रेंच कहानी थी वह। इतनी मनोहर तथा मनोरंजक कथा होते हुए भी रह-रहकर मेरी दृष्टि उस जीते-जागते चित्र पर जम जाती थी, जो एक मित्र की अमानत होते हुए भी मेरी थी।

पर रख लूंगा, मैं उसके चित्र को आँखों से निकाल दूंगा, दिल से काल दूंगा। और इसके बदले मैं अपनी विवाहित पत्नी की, जो इस मय पेरिस में थी, स्मृति हृदय में रखूंगा। इन विचारों की पुष्टि रने के लिए मैंने इस पर आचरण करना भी आरम्भ कर दिया और रन्त एक उपन्यास उठाकर पढ़ने लगा। फिर भी दृष्टि उस सुन्दरी ो ओर उठ ही जाती थी।

सहसा एक चेष्टा ने मनमोहनी को और भी आकर्षक बना दिया। नींद में उसने अपना एक हाथ उठाकर सर के नीचे रख लिया और पांव जो कुछ समय पहले मामूली-सा बाहर निकला हुआ था, और निकल गया। चमकीली मोतिया रंग की रेशमी जुर्राब में लिपटा हुआ वह नन्हा-सा पांव और टखना, इस समय बहुत सुन्दर दिखलाई देता था। उसके लाल-लाल होठों क मध्य में मुस्कराहट नाच रही थी। बहुत प्रयत्न करने पर भी अब मेरे लिए रुकना कठिन हो गया और मेरा सब प्रयत्न निष्फल गया।

एक क्षण उसे मोहक दृष्टि से देखने के बाद मैंने एकाएक उपन्यास एक तरफ फेंक दिया। मेरे निर्बल हृदय में दबी हुई वासना फिर से जागृत हो उठी। मैंने विवश होकर बिना परिणाम सोचे उस सुन्दरी का गोरा-गोरा माथा चूम लिया।

वह चौंक पड़ी और आश्चर्य-चकित दृष्टि से मेरी तरफ देखने लगी।

मैं हंस पड़ा।

"क्यों भला, डक गेन्ज इस विषय में क्या कहेगा?" मैंने परिहास किया।

इतने में वह सम्भल गई और मेरे साथ ही हंसने लगी, बोली—

"यह कि उसकी पत्नी की पूर्णरूप से रक्षा करने के बाद आप हर तरह से उसके अधिकारी थे। वास्तव में आपने मुझसे अच्छा बर्ताव किया है।"

फिर मेरी दृष्टि में लज्जा की झलक देखकर उसने शर्माते हुए मुह फेर लिया।

इसी समय गाड़ी के बरामदे में कुछ आहट-सी हुई और क्षण भर

और भी बढ़ा दिया। मैंने उसको ढारस बंधाने के लिए एक मन-घड़न्त कहानी गढ़कर सुना दी और कहा कि डक गेन्ज हमारे देश का एक नामी पहलवान है जिससे वैली पेटरसन हारा था। हमारे यहां उसकी विचित्र चालों के कारण यह नाम बहुत प्रसिद्ध है। यह सुनकर उस भोले-भाले कर्नल को हमारी बात का विश्वास हो गया। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह स्वयं भी कहता—

"वैली पेटरसन किससे हारा? डक गेन्ज से—आहा, हा, हा, ओहो, हा, हा।"

उसकी वह भारी हंसी इतनी विचित्र प्रतीत होती थी कि हम भी विवश होकर उसमें सम्मिलित हो जाते थे।

इसी प्रकार हँसी-दिल्लगी करते हुए सारा दिन बीत गया। यहां तक कि दोनों ओर की, रेलवे स्टेशनों की लालटेनें दिखलाई देने लगीं और थोड़ी ही देर बाद गाड़ी वहां पहुंचकर ठहर गई।

उस समय हमारा मित्र कर्नल उठा और कहने लगा—

"अच्छा, मैं आप से विदा होता हूं। गाड़ी यहां अधिक समय तक ठहरेगी इसलिये चाय पीये बिना मैं आप लोगों को कदापि न जाने दूंगा। देखिये कर्नल लेनाक्स, इन्कार न कीजिये। आप और आपकी श्रीमतीजी दोनों इस समय मेरे अतिथि हैं।"

"तो चलिये, हमें कब इन्कार है।" हैलियन ने प्रसन्नतापूर्वक मुस्कराते हुए उत्तर दिया और उसका बाजू पकड़कर प्लेटफ़ार्म पर चलने लगी।

मैं भी उनके पीछे-पीछे हो लिया।

रेलवे स्टेशन के विश्रान्ति गृह की तरफ जाते हुए ऐसी कौन-सी आंख थी जिसने श्रीमती गेन्ज को प्रशंसामयी दृष्टि से न देखा हो, ऐसा कौन-सा वह हृदय था जो उसे देखकर न तिलमिला उठा हो। कितने ही यात्री हैलियन को ललचाई हुई नज़रों से देखते और रूसी कर्नल तथा मुझे ईर्ष्यालु दृष्टि से घूरते थे। भोजनालय में रूसी कर्नल का दबदबा खूब काम आया। एक बढ़िया मेज हमारे लिए खाली कर दी गई और क्षण भर बाद हम उसके चारों तरफ बैठकर रूसी खाना खाने लगे।

रूसी कर्नल ने श्रीमती लेनावस की स्वास्थ्य-वृद्धि के उपलक्ष
कितने ही पैग पिये। वह हर बार गिलास समाप्त करने के पश्च
कहता—

"श्रीमती जी! मैं आपसे विदाई के लिए कैसे कह सकता हूं
तो इस समय केवल विवश होकर कुछ समय के लिए आपसे अ
हो रहा हूँ···अन्यथा सर्वदा के लिए···नहीं···बिल्कुल नहीं।"

मेरे लिए सचमुच बड़ी कठिनाई का सामना था। उसकी व
वार की प्रार्थना को देखते हुए शिष्टाचार के नाते मुझे अपना सै
पीटर्जबर्ग का पता बदला देना चाहिए और यही मैंने सोचा भी
किन्तु जब मैं यह सोचता कि वह हमें खोजता हुआ जिस समय व
पहुँचेगा और हैलियन, मेरे साथ न होगी तो उस समय वह व
सोचेगा? और उसके पूछने पर मैं उसे क्या उत्तर दे सकूंगा?

इस समय फिर हैलियन की सावधानी काम आई। वह पैट्
की ओर देखकर मुस्कराती हुई बोली—

"हम आपके बहुत आभारी हैं कि आप सैन्ट पीटर्जबर्ग में
फिर दर्शन देने का वचन देते हैं। आप जिस समय भी आयें, होट
डीला योरुप में कर्नल मिसेज आर्थर लेनावस का नाम याद रखे
कृपया यह नाम अपनी पाकिट बुक में लिख लें वरना डर है कि क
आप भूल न जायें।"

तातारी खून से प्रभावित होकर पश्चिमी सभ्यता के अनुसार उत्तर दिया।

और यह कहकर उसने अपना गर्म ओवर कोट बांह पर डालकर और दूसरा हाथ अपनी लम्बी तलवार की मूंठ पर रखकर श्रीमती जी के हाथ को चूम लिया, जैसा कि पूर्वी सरदार प्रायः अपने सम्राट के हाथ को चूमा करते हैं।

उठने की घन्टी बजने लगी थी। मैंने श्रीमती डक को अपनी बांह दी और पैंट्रोफ़ झनझनाती हुई तलवार पकड़े हमें गाड़ी तक छोड़ने आया।

उसके व्याकुलता भरे शब्द हमारे कानों में पड़े—"विदा।" और फिर गाड़ी आगे को सरकने लगी।

प्लेटफार्म पर खड़ा हुआ कर्नल पैंट्रोफ ललचाई हुई नज़रों से हैलियन को जाती हुई देखता, ज़ोर-ज़ोर से रूमाल हिलाता, और आवेश-पूर्ण शब्दों में कहता रहा—"मैं बहुत जल्दी ही आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त करूंगा···होटल डीला योरुप का पता मुझे याद है। मैं उसे भूल नहीं सकता।"

कर्नल की विदाई पर सुने शब्दों ने मेरे हृदय में एक भूली हुई याद फिर से ताज़ा कर दी। हैलियन ने उसको होटल डीला योरुप का पता दिया था; यद्यपि मेरा विचार अपने स्वर्गीय जमाई के बड़े भाई कान्स्टनटाईन वैलटस्की के पास ठहरने का था जो अंग्रेजी घाट नम्बर पाँच पर रहता है।

हैलियन का हाथ अपने हाथ में लेते हुऐ मैंने हंसते हुए कहा—"प्रिय, तुम ने बिल्कुल ही एक नई उलझन पैदा कर दी है। मैं होटल डीला योरुप में क्या लेने जाऊंगा, जब मेरे रिश्तेदार एम० वैलटस्की वहां मौजूद हैं।"

"क्या वैलटस्की परिवार से भी आपका सम्बन्ध है?" मेरी सुन्दर पत्नी ने मेरे हाथ के दबाव की उपेक्षा करते हुए बेचैनी के साथ पूछा।

"एम० वैलटस्की मेरी लड़की के जेठ होते हैं।" मैंने कहा।

"तो इस सूरत में शायद मेरे लिए······"

वह कुछ और कहना चाहती थी किन्तु सहसा बात को पलटते

हुए उसने कहा—"धन्यवाद है उस भगवान का कि उस रूसी कम्बख्त से छुटकारा तो मिला। मैं तो डरती थी कि कहीं आखीर तक वह साथ न रहे।"

इन शब्दों में मैंने अपनी ओर से इतना और जोड़ दिया—"और इसका क्या कुछ कम धन्यवाद है कि डक तुम से आगे चला गया और तुम्हें बगैर पासपोर्ट के छोड़ गया।"

"चुप! चुप!" उसने जल्दी से दबी आवाज़ में कहा—"देखते नहीं बत्ती वाला लैम्प जलाने आ रहा है।"

मैं तुरन्त सम्भल गया और हम दोनों चुपचाप खिड़कियों से बाहर देखने लगे। रेल के नौकर ने बत्तियां जलाईं और चला गया।

गाड़ी की रफ्तार तेज़ हो गई थी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद जब गाड़ी अंधेरे में छुपे हुए गाँवों के पास से गुजरती तो टूटे-फूटे झोंपड़ों में से टिमटिमाता हुआ प्रकाश निकलकर हरियाली पर छाये हुए अंधकार में इस प्रकार लीन हो जाता था जैसे जुगनू की चमक एक क्षण के लिए प्रकट होकर लुप्त हो जाती है।

अगला स्टेशन वल्ना का था, जहां मेरा मित्र डक अपनी पत्नी की प्रतीक्षा में खड़ा होगा। इस विचार के आते ही मैंने उस कोमलांगी की ओर देखा। गैस के तीव्र प्रकाश में उसकी रूप-छटा और भी अनुपम दिखलाई दे रही थी। मेरे हृदय में एक आकांक्षा उत्पन्न हो गई। मैं सोचने लगा—यदि डक गेञ्ज वल्ना की बजाए सेंट पीटर्ज़बर्ग पहुँचा हुआ होता तो कितना अच्छा होता।

समीप के डिब्बे से आती हुई बर्तनों की झंकार रूसी यात्रियों के भोजन करने की सूचना दे रही थी। झंकार के साथ ही रह-रहकर हंसी-ठट्ठों की आवाजें भी आ रही थीं, किन्तु मैं अनमना और चिन्तित-सा बैठा हुआ था। हैलियन का विछोह बहुत कष्टप्रद अनुभव हो रहा था मुझे।

सहसा उसने मेरी ओर देखा और मुस्कराकर कहने लगी—"आपसे मिलने के बाद मुझे आपकी बातों से मोह-सा हो गया है। अतः कष्ट न हो तो अपने सम्बन्ध में कुछ बताइये। ताकि मैं डक गेञ्ज से उसकी चर्चा कर सकूं। वह आपको बहुत याद किया करते हैं।"

"आह, मैं क्या मेरे हालात क्या? मुझसे तो आपके जीवन की घटनाएं अधिक मनोरंजक होंगी।" मैंने कहा।

"सम्भव है ऐसा हो।" उसने एक धीमी-सी आह भरकर उत्तर दिया—"फिर भी पहिले आप और पीछे मैं। समय काफी है इसलिए आरम्भ कीजिये।"

ये अन्तिम शब्द उसने कुछ इस प्रकार कहे कि मैं इन्कार न कर सका, और अपने जीवन की घटनाएं सुनाने लगा।

डक से अलग हुए मुझको लगभग बीस वर्ष हो गये थे। इसके बाद मैंने मिस्र में और दूसरे स्थानों पर किस प्रकार फौजी सेवाएं कीं, इसका मैंने विस्तार के साथ वर्णन किया। और क्योंकि मेरी कहानी सुनने की वह बहुत इच्छुक थी, इसलिए मैं अपनी बेटी की ससुराल के हालात भी कह गया। इसके अतिरिक्त जो बात मेरी बातों में प्रवाह का कारण थी, वह थी मेरे हृदय की वे भावनाएं जो डक की उस सुन्दर अमानत में खयानत पैदा करने के लिए उत्पन्न हो रही थीं।

आखिर में अपने जीवन का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाने के बाद मैंने हंसते हुए कहा—"यह तो कुन्वा लेनाक्स की कहानी थी, अब कृपा करके गेन्ज परिवार का हाल बताइये, जैसा कि आपने वायदा किया था।"

किन्तु इसका उत्तर मेरी आशाओं के सर्वथा विपरीत था। उसने उत्तर दिया—"खेद है कि मैं इस विषय में बहुत कम बता सकती हूँ, क्योंकि मैं और डक अपने देश से दूर ज्यादातर योरुप में रहे हैं।"

"फिर भी, डक के सम्बन्धियों के विषय में तो आपको ज्ञात ही होगा?" मैंने कहा—"वैसे एक बहिन ममई, जो बहुत सुन्दर थी, उसका क्या हुआ?"

"ओह! ममई?" उसने लापरवाही से उत्तर दिया—"ममई ने काफी दिन हुए विवाह कर लिया, और अब वह—क्या नाम······ मेक्सिको में रहती है।"

"उसके पति का नाम तो आपको याद होगा?"

"हां! उसके पति का नाम था—स्मिथ।" उसने जल्दी से कहा—और फिर सहसा बातचीत का रुख पलटते हुए बोली—"परन्तु

अपने परिवार के व्यक्तियों से भी अधिक प्रेम डक को अपने पुराने मित्र आर्थर से है। आह—आप नहीं जानते कि किस प्रकार वह शाम को खाना खाने के बाद अंगीठी के पास बैठे हुए अपनी लम्बी काली मूंछों पर हाथ फेरकर, बात-बात में आपको याद किया करते हैं।"

"लम्बी काली मूंछें!" मैंने चौंककर कहा—"लेकिन वह तो शुरू से ही मूंछें मुंडवाने का शौकीन था।"

"होगा।" उसने साधारण ढंग से उत्तर दिया—"लेकिन अब विवाह के पश्चात् वह मूंछें रखने लगा है।"

"तो भी काली कैसे?" मैंने दोबारा आपत्ति उठाई—"उसके बालों की रंगत तो सुनहरी थी।"

वह पहले तो घबराई, लेकिन इसके बाद संभलकर बोली—"हां! किन्तु जब से उसके बालों में सफेदी आई, उसने खिजाब लगाना शुरू कर दिया।" और फिर मेरी ओर देखकर चंचलता से हंसते हुए बोली—"मेरे विचार में आपको डक का अनुकरण करना नहीं पड़ेगा? क्योंकि आपके बालों की प्राकृतिक चमक और कालिमा अब तक स्थिर है।"

यह कहते हुए उसने एक प्रेमिका की भांति पहले मेरे सिर पर हाथ फेरा, इसके बाद मूंछों को खींचा।

उसकी इस छेड़-छाड़ से मेरी बूढ़ी रगों का खून भी जोश मारने लगा। जी चाहता था कि मैं उसे वहीं पकड़कर सीने से लगा लूं और खूब दिल के अरमान निकालूं, किन्तु डक की मैत्री की याद ने आकर मेरे भड़के हुए जोश को ठंडा कर दिया। इच्छा रखने पर भी मैं कोई ऐसी-वैसी चेष्टा न कर सका। केवल इतना मेरे मुंह से निकला—

"डक कितना भाग्यशाली है कि उसने तुम्हें पाया। मुझे तो अनेक बार उससे ईर्ष्या होने लगती है।"

"क्या सच?" चंचल आंखों के तीर बरसाते हुए उसने पूछा।

"डक के लिए स्वर्ग बसाने से पहले तुम्हारा क्या नाम था?"

"आप उपमा खूब देते हैं।" वह हंसकर कहने लगी—"इस सारे कथन से शायद आपका आशय यह है कि विवाह से पहले मेरा नाम क्या था?"

"चलो यूं ही सही ।"

"हैलियन"

"यह नहीं, मेरा मतलब विवाह से पहिले आपके खानदानी नाम से है।"

"ऐ लो वल्ना आ गया।" उसने भी बात को सुना-अनसुना करके बहुत दूर भिलमिलाती हुई रोशनी की ओर संकेत करते हुए कहा—"डक प्लेटफार्म पर खड़ा हुआ प्रतीक्षा कर रहा होगा।"

"लेकिन मैं तो तुम्हारा खान्दानी नाम पूछ रहा था।" मैंने उत्तर दिया—"मैं उस समय की याद को ताजा करना चाहता हूँ जब कि तुम्हारा डक से विवाह हुआ था।"

वह कुछ उत्तर दिये बगैर ही खड़ी हो गई।

"ठहरो! मैं तुम्हें अपने प्रश्नों का उत्तर पाये बिना नहीं जाने दूंगा।" मैंने भी खड़े होते हुए कहा, किन्तु गाड़ी के बरामदे में पाँव की आहट पाकर मुझे चुप हो जाना पड़ा।

द्वार खुला और गार्ड ने दूर ही से शिष्टाचारपूर्वक खड़े होकर कहा—"वल्ना स्टेशन आ गया, गाड़ी यहाँ दो घंटे ठहरेगी।"

उसके जाते ही मैंने पागल की भांति एक हाथ हैलियन की कमर में डालकर उसे अपनी ओर खींचा और प्रेम भरे स्वर में कहा—"मेरे प्रश्न का उत्तर, क्या अब भी न दोगी?"

वह घबराकर छूटने का प्रयत्न करते हुए बोली—"मुझे जा दो, रोको मत। ऐसा न हो कि वह हमें देख लें या मुझे न पाकर च जाएं।"

"कौन चले जाएं? किसका ज़िक्र करती हो?" मैंने उसक सहमी हुई आवाज से प्रभावित होकर अपनी बांह को हटाते हुए पूछा

"डक, अपने पति का।"

"किन्तु मेरे प्रश्न का उत्तर क्या है?" मैंने अन्तिम अनुरोध साथ पूछा।

"विवाह से पहिले मेरा नाम हैलियन······वाम्ज़ रैलेज ईस्ट था।" उसने शीघ्रता से कहा और इसके बाद गाड़ी से, जो अब वल के प्लेटफार्म पर ठहर गई थी, कूदकर उतर गई।

"हे भगवान ! रैलेज ईस्टर ।"

अमेरिका के दो प्रसिद्ध लखपतियों के मिले-जुले नामों को सुनकर कुछ समय तक मैं वहीं पर खड़ा हुआ कुछ सोचता रहा। इसके पश्चात हैलियन का थोड़ा-सा सामान जो गाड़ी में था, लेकर उसी के पीछे उतर गया।

चौथा परिच्छेद

बैरन फ्रेडरिक

ो कल्पना मात्र से मेरा दम घुटा जा रहा था।

प्लेटफार्म के प्रत्येक भाग को हमने बहुत ध्यानपूर्वक देखा। हमें सा व्यक्ति, जिसकी सूरत से डक का सन्देह हो सकता, कहीं नज़र न ाया। मैं कुछ पूछना ही चाहता था कि मेरी सुन्दर पत्नी अव्वल दर्जे विश्रान्ति गृह की ओर मुड़ी। मेरा ख़याल है कि अब वह डक को स स्थान पर तलाश करना चाहती थी।

वहां लम्बे-चौड़े शरीर वाले कई दरबान और नौकर भड़कीली ार्दियाँ पहने खुले दरवाज़ों के पास खड़े थे। सुन्दर गोल मेज़ों के चारों ोर स्त्री और पुरुष बैठे हुए खाना खाने या चाय पीने में तल्लीन थे। ो घंटों के लम्बे विश्राम काल में बहुत कम यात्री गाड़ी में बैठे रहना ासन्द करते हैं।

हैलियन ने एक क़दम आगे बढ़कर दरवाज़े के रास्ते अन्दर देखा। ेरा हृदय जोर से धक-धक करने लगा।

एक क्षण पश्चात् एक लम्बा-सा व्यक्ति, जिसने मध्यम श्रेणी के रूसी ढंग का लम्बा कोट पहना था और टोपी को माथे के नीचे तक ुकाया हुआ था, कमरे के अन्दर रखी हुई मेज़ों के गिर्द घूमता हुआ ाहर निकला, किन्तु हैलियन के पास मुझे खड़ा हुआ देखकर वह झिझक गया। शंकित दृष्टि से मेरी ओर देखते हुए उसने रूसी भाषा में हैलियन से कहा। फिर वह एक तरफ जाने के लिए मुड़ा और साथ ही आश्चर्यजनक फुर्ती के साथ उसने एक काग़ज़ का टुकड़ा हैलियन के दाहिने हाथ में, जो ज़रा-सा आगे निकला हुआ था, दे दिया।

मैं बड़ी हैरानी के साथ इस घटना को देखता रह गया।

"यह क्या डक का आदमी था?" इसके बाद ही मैंने जल्दी से पूछा।

"हाँ।" हैलियन ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"परन्तु यह पत्र······यह तो शायद रूसी भाषा में लिखा हुआ है?"

"मैं इस भाषा का थोड़ा-सा ज्ञान रखती हूँ।" उसने शीघ्रता से पत्र पढ़ते हुए कहा और इसके पश्चात् कागज़ मोड़कर अन्दर की जेब में रख लिया।

हां, पत्र पढ़ते ही वह ज़ोर-ज़ोर से काँपने लगी। मैं नहीं कह सकता कि यह उस ठंडी वायु का प्रभाव था, या उस पत्र का।

"क्या कोई अशुभ समाचार लिखा हुआ है इसमें ?" मैंने दबी आवाज़ में पूछा।

"हाँ !" उसने उद्विग्नता से उत्तर दिया। इस समय उसके दांत ज़ोर-ज़ोर से बज रहे थे। मेरी ओर मुड़कर वह बोली—"आर्थर, तुम मुझे अन्दर ले चलो। मैं इस ठंडी हवा में खड़ा नहीं रह सकती।"

मैं आश्चर्य में डूबा उसको सहारा देकर कमरे में ले गया। एक ओर चीनी मिट्टी के बने हुए अग्निकुंड में तेज़ आग जल रही थी। मैंने एक कुर्सी खींचकर हैलियन को उस पर बिठाया, किन्तु उसकी सर्दी इससे पहले ही समाप्त हो चुकी थी। जल्दी से उठकर वह मेज़ के पास गई जिसके पिछली तरफ होटल का मुंशी बहुत से काग़ज़ और रजिस्टर सामने रखे बैठा था और इससे पहले कि मैं उसका आशय समझ सकता, वह इतने ऊंचे स्वर में जो हर तरफ सुना जा सकता था, कहने लगी—"श्रीमती आर्थर लेनाक्स के नाम कोई पत्र

जूद होंगे ? मैंने देखा, होटल का दारोग़ा हमसे आगे निकलकर ने पर चढ़ गया है और सबसे अच्छे कमरे का दरवाज़ा खोलकर मारे आने की प्रतीक्षा करने लगा है। निर्धन रूसवासियों का दृढ़ श्चय है कि सारे अमेरिकन धनाढ्य होते हैं। इसलिए उनकी आव-गत में आवश्यकता से अधिक ध्यान रखा जाता है।

जब हम कुर्सियों पर बैठ गये तो उसने बिल्कुल पूर्वी ढंग से झुक-र सलाम किया और नम्रतापूर्वक कहने लगा—"आज्ञा !"

"जो भी अच्छा स्वादिष्ट भोजन तैयार हो वह भेज दो।"

हमारे उत्तर से सम्भवतः उसे सन्तुष्टि न हुई। उसने भोजन और शराब का मीनू हमारे सामने उपस्थित किया। मैं जब चीज़ों के चुनाव में लगा हुआ था तो हैलियन ने अपना भारी कोट और टोपी उतारकर एक तरफ रख दी।

दारोग़ा के जाने के बाद मैं उसकी तरफ मुड़ा और कुछ कर्कश स्वर में कहने लगा—"क्यों भला ! मेरी पत्नी के पत्र यहाँ कैसे आते ? और तुम्हें उनकी प्रतीक्षा क्यों थी ?"

वह मेरी तरफ क्रूर दृष्टि से देखने लगी।

"क्या मैंने कोई ऐसी बात कही थी ?" उसने भोलेपन से पूछा।

"क्या खूब ! इतनी जल्दी भूल गईं !"

उसने उद्विग्नता के साथ दस्ताने उतारे और उन्हें कोट के पास रखते हुए कहने लगी—"शायद कोई ऐसा शब्द बेध्यानी में मेरे मुंह से निकल गया हो, परन्तु उसका कारण यह है कि वह पत्र पढ़कर जो होटल में एक व्यक्ति ने मुझे दिया था, मैं कुछ ऐसी बेसुध हो गई थी कि सब बातें भूल गई थी।"

"तो क्या वह कोई अशुभ समाचार है ?" मैंने घबराकर पूछा। क्योंकि बीस वर्ष के लम्बे विछोह के बाद भी डक की याद अब भी मेरे हृदय में बाकी थी और मैं उसे अपने भाइयों की भाँति ही प्रिय समझता था।

"हाँ !"

"मेरे मित्र और तुम्हारे पति के साथ तो कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई ?"

हां, पत्र पढ़ते ही वह ज़ोर-ज़ोर से काँपने लगी। मैं नहीं कह सकता कि यह उस ठंडी वायु का प्रभाव था, या उस पत्र का।

"क्या कोई अशुभ समाचार लिखा हुआ है इसमें ?" मैंने दबी आवाज़ में पूछा।

"हाँ !" उसने उद्विग्नता से उत्तर दिया। इस समय उसके दांत ज़ोर-ज़ोर से बज रहे थे। मेरी ओर मुड़कर वह बोली—"आर्थर, तुम मुझे अन्दर ले चलो। मैं इस ठंडी हवा में खड़ा नहीं रह सकती।"

मैं आश्चर्य में डूबा उसको सहारा देकर कमरे में ले गया। एक ओर चीनी मिट्टी के बने हुए अग्निकुंड में तेज़ आग जल रही थी। मैंने एक कुर्सी खींचकर हैलियन को उस पर बिठाया, किन्तु उसकी सर्दी इससे पहले ही समाप्त हो चुकी थी। जल्दी से उठकर वह मेज के पास गई जिसके पिछली तरफ होटल का मुंशी बहुत से काग़ज और रजिस्टर सामने रखे बैठा था और इससे पहले कि मैं उसका आशय समझ सकता, वह इतने ऊंचे स्वर में जो हर तरफ सुना जा सकता था, कहने लगी—"श्रीमती आर्थर लेनावस के नाम कोई पत्र हो तो दे दो।"

जब मुंशी ने पत्रों का अम्बार देखकर इन्कारी में सिर हिलाया तो वह बोली—"अच्छा ऊपर के कमरे में दो आदमियों के लिए खाना भेज दो, हम जाते हैं।"

मेरी तरफ देखकर मुस्कराते हुए फिर उसने कहा—"आओ आर्थर ऊपर चलें।" और तेज़ी से ज़ीने पर चढ़ने लगी।

उसके इस अनुरोध पर चकित मैं भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

ौजूद होंगे ? मैंने देखा, होटल का दारोग़ा हमसे आगे निकलकर ज़ीने पर चढ़ गया है और सबसे अच्छे कमरे का दरवाज़ा खोलकर हमारे आने की प्रतीक्षा करने लगा है। निर्धन रूसवासियों का दृढ़ निश्चय है कि सारे अमेरिकन धनाढ्य होते हैं। इसलिए उनकी आव-भगत में आवश्यकता से अधिक ध्यान रखा जाता है।

जब हम कुर्सियों पर बैठ गये तो उसने बिल्कुल पूर्वी ढंग से झुक-कर सलाम किया और नम्रतापूर्वक कहने लगा—"आज्ञा !"

"जो भी अच्छा स्वादिष्ट भोजन तैयार हो वह भेज दो।"

हमारे उत्तर से सम्भवतः उसे सन्तुष्टि न हुई। उसने भोजन और शराब का मीनू हमारे सामने उपस्थित किया। मैं जब चीज़ों के चुनाव में लगा हुआ था तो हैलियन ने अपना भारी कोट और टोपी उतारकर एक तरफ रख दी।

दारोग़ा के जाने के बाद मैं उसकी तरफ मुड़ा और कुछ कर्कश स्वर में कहने लगा—"क्यों भला ! मेरी पत्नी के पत्र यहाँ कैसे आते ? और तुम्हें उनकी प्रतीक्षा क्यों थी ?"

वह मेरी तरफ क्रूर दृष्टि से देखने लगी।

"क्या मैंने कोई ऐसी बात कही थी ?" उसने भोलेपन से पूछा।

"क्या खूब ! इतनी जल्दी भूल गई !"

उसने उद्विग्नता के साथ दस्ताने उतारे और उन्हें कोट के पास रखते हुए कहने लगी—"शायद कोई ऐसा शब्द बेध्यानी में मेरे मुंह से निकल गया हो, परन्तु उसका कारण यह है कि वह पत्र पढ़कर जो होटल में एक व्यक्ति ने मुझे दिया था, मैं कुछ ऐसी बेसुध हो गई थी कि सब बातें भूल गई थी।"

"तो क्या वह कोई अशुभ समाचार है ?" मैंने घबराकर पूछा। क्योंकि बीस वर्ष के लम्बे बिछोह के बाद भी डक की याद अब भी मेरे हृदय में बाकी थी और मैं उसे अपने भाइयों की भाँति ही प्रिय समझता था।

"हाँ !"

"मेरे मित्र और तुम्हारे पति के साथ तो कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई ?"

"चुप, चुप, कृपा करके सावधानी को मत छोड़िये।" वह
हिलाकर होठों से छुआकर बोली—"अब तक सब आदमी :
को मेरा पति समझते हैं।"

फिर अपना मुंह मेरे पास लाकर बढ़ती हुई बेचैनी :
बोली—"हाय! मैं कह नहीं सकती ? उफ, मेरे मालि
क्या होगा ?"

मैं घबरा गया। वास्तव में मेरे मित्र डक पर कोई भारी
आया जान पड़ता था ?

"परन्तु वह बात क्या है जिससे तुम इतनी दुखी हो ?'
अपनी कुर्सी को और अधिक उसके समीप सरकाते हुए पूछा।

उसकी आँखों में आँसुओं की बूंदें छलक आई और रेशमी :
में छिपा हुआ उसका वक्षस्थल तेज़ी से धड़कने लगा। उसव

रती हुई कमरे में चारों तरफ फैल रही थी।

"बस प्रिय, बस।" मैंने असावधानी में उसके सुन्दर चमकीले ालों को चूमते हुए कहा—"ऐसा न हो कि नौकर आ जाए।"

"नहीं आर्थर, तुम मुझे रोने दो। मेरे लिए सहन करना कठिन ।" उसने जोर-जोर से सुबकियां लेते हुए कहा—"तुम मेरे सच्चे मत्र और शुभाकांक्षी हो, परन्तु अब......तुम्हारे बिना मेरा क्या ाल होगा—पासपोर्ट मेरे पास नहीं। सामान मेरा सैंट पीटर्ज़बर्ग लिए बुक हो गया है। पति मेरा मौजूद नहीं। खेद है कि अब मेरे कड़े जाने और कैद किये जाने में कौन-सी कसर बाकी है?...बल्कि तो पैट्रोफ के उन शब्दों को याद करके, जो उसने जाली पासपोर्टों विषय में कहे थे......" उसने सुबकी लेकर कहा—"यूं भी डरती कि यदि कोई तुमसे पूछ बैठा तो क्या होगा? खेद है, मेरे स्वार्थ ौर दीवानेपन ने क्या रंग पैदा कर दिया। जब यह समाचार ख़बारों में छपेगा तो डक उसे पढ़कर क्या कहेगा?"

यह कहकर वह और भी ज़ोर-ज़ोर से कांपते हुए मेरे साथ सट ई।

यह हालत देखने में कष्टप्रद थी किन्तु आन्तरिक रूप में आनन्द ायक थी।

किन्तु सहसा उसके अन्तिम शब्दों में छिपी एक भावना प्रसन्नता ी उस लहर को ठंडा करती हुई मेरे दिमाग में दौड़ गई। डक तो या भाड़ में, यह हालात जब अखबारों में छपेंगे तो मेरी अपनी पत्नी या सोचेगी।

मुझे मौन देखकर उसके सजल नेत्र ऊपर को उठ गये। वह ांपती हुई कहने लगी—"कहिये, अब मैं क्या करूं?"

तुरन्त ही एक युक्ति मेरे मस्तिष्क में आ गई—"करना क्या है। रे साथ इसी गाड़ी से सैंट पीटर्ज़बर्ग चलो। मैं तुम्हें डक के पास जाऊंगा।"

वह सीधी होकर बैठ गई और एक विचित्र दृष्टि से मेरी ओर ते हुए कहने लगी—"और मैं भी कितनी मूर्ख हूँ कि अब तक का ध्यान ही न आया कि मेरे पास भी सैंट पीटर्ज़बर्ग तक का

ताओ मैं उसे क्या उत्तर दूंगा ? वैलटस्की को तो खैर जाने दो, उसने
री पत्नी को देखा तक नहीं है। किन्तु यह तो असम्भव है कि मेरी
टी अपनी मां की शक्ल पर धोखा खा जाए। और चूंकि मेरे पास-
ोर्ट और सामान की रसीद के अनुसार तुम मेरी पत्नी हो अतः यह
भी सम्भव नहीं कि मैं तुम्हें और किसी रूप में उनके सामने पेश कर
सकूं।"

सुनकर वह पहले तो सोच में पड़ गई, फिर कहने लगी—"आप की बेटी क्या सैंट पीटर्जबर्ग में है ?"

"नहीं, उससे थोड़ी दूर जासान में।"

"और आपने एटकोहनन से उसके नाम अपने आने का तार भेजा था क्या ?"

"हां"

"तो फिर उसका इस गाड़ी के पहुँचने तक सैंट पीटर्जबर्ग पहुंचना मुश्किल है।"

"क्यों, किस लिए ? तुम तो कहती थीं कि मैं इस देश की बातों से अनभिज्ञ हूं।" मैंने सिगार का सिरा दाँतों से चबाते हुए पूछा।

"मैं ऐसी अन्जान भी नहीं हूं।" उसने शीघ्रता से कहा—"डक के साथ रहते हुए मुझे पर्याप्त समय हो गया है। हाँ, आपको मेरे साथ जाने का अफसोस हो तो।"

"बिल्कुल नहीं।" मैंने कहा—"किन्तु यह पासपोर्ट की मुश्किल कुछ परेशान कर रही है।"

मेरे ऐसा कहने पर उसका रंग पीला पड़ गया। वह अवरुद्ध कंठ से कहने लगी—

"तो क्या तुम मुझे इस संकट के समय अकेला छोड़ जाओगे ?" और वह मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर प्यार करने लगी।

उस कोमल हाथ को छूते ही मेरी सारी शंकाएं दूर हो गईं।

"हरगिज नहीं।" मैंने जोर से कहा—"प्राण प्रिय, मैं तो केवल उन कठिनाइयों को तुम्हें बताना चाहता हूँ जो इस यात्रा में हमारे सामने आने वाली है और जिनसे मुझे और तुम्हें सावधान रहना चाहिये।"

मैं कुछ रुवल रखने के लिए विवश हो गया और कुछ नोट निकाल-कर पाकिट बुक में रख लिये।

"बस अब मुझे विश्वास हो गया। अब मैं सुबह का खाना तसल्ली से खा सकूंगी।"

इसके पश्चात् हम जाने के लिए उठे।

"आर्थर, सच कहना, तुम मुझसे बिछुड़कर प्रसन्न थे या अब?" उसने मुस्कराते हुए पूछा—

"अब—प्यारी अब!" मैंने उत्तर दिया। इस सन्देह की सज़ा में मैं एक और चुम्बन लेना चाहता था किन्तु उसने यह कहकर मुझे रोक दिया—"क्या करते हो? ऐसी भी क्या बेसबरी! नौकर देखेगा तो क्या कहेगा। याद रखो, हम इस समय पति-पत्नी हैं और पति-पत्नी का प्रेम एक सीमा तक होना चाहिये।"

मुझे उसकी इस दूरदर्शिता का कायल होना पड़ा। थोड़ी देर बाद हम हाथ में हाथ डाले जीने से उतरे। कई मुसाफ़िर अब तक मेजों पर बैठे हुए थे। उनमें से अधिकांश मेरी पत्नी को ललचाई हुई दृष्टि से देख रहे थे।

हम बाहर जा ही रहे थे कि होटल के मुंशी ने मुझको संकेत द्वारा बुलाया और कहने लगा—"क्षमा कीजियेगा, मैं केवल विवश होकर आपको एक कष्ट दे रहा हूँ।"

"क्या?" मैंने बेसबरी से पूछा।

"आप अपना और अपनी श्रीमती जी का पासपोर्ट दिखाइयेगा। दूसरे इस रजिस्टर में हस्ताक्षर कर दीजिये। यह एक प्रचलित प्रथा है; परन्तु क्या किया जाए! इस देश में पुलिस के नियम बहुत कठोर हैं और हमें विवश होकर उनपर अमल करना पड़ता है।"

मैंने पासपोर्ट दिखाने के बाद होटल के रजिस्टर पर लिख दिया—"आर्थर लेनाक्स और श्रीमती लेनाक्स।"

किन्तु मैं अपने मन में यह सोचे बिना न रह सका कि यह लिखा-वट यदि मेरी असली पत्नी की दृष्टि के सामने से गुजरे तो वह क्या कहे?

होटल के मुंशी की प्रार्थना पर हैलियन कुछ घबरा-सी गई थी।

क्योंकि मुझे अपनी बांह पर उसके हाथ की पकड़ कुछ अधिक दृढ़ होती हुई अनुभव हुई। किन्तु जब मैंने हस्ताक्षर कर दिये तो वह मेरे कन्धे के ऊपर से हस्ताक्षर देखते हुए कहने लगी—

"ओह, इस देश में पासपोर्टों का झगड़ा कैसा कष्टदायक है। भगवान् जाने कितने व्यक्ति इस कागज को देख चुके हैं और न जाने कितने और देखेंगे।"

इसके क्षण भर पश्चात् हम होटल के गर्म कमरे से निकलकर पत्थर के चिकने प्लेटफार्म पर फैले अन्धेरे में पहुंच गये। ठंडी-बर्फीली हवा सनसनाती हुई चल रही थी। हैलियन जोर से कांपकर भर्राए हुए स्वरों में कहने लगी—"इन लोगों के पासपोर्ट मांगते ही मैं बहुत डर जाती हूं। भगवान् की कृपा है, जिसने आपको मुझ असहाय की सहायता के लिए भेज दिया।"

मैंने उत्तर में कहा—"कोई बड़ी बात थोड़े ही है!" इतना कहकर मैं अभिमान से अपनी लम्बी काली मूछों पर हाथ फेरने लगा। हैलियन मेरे बालों के काले रंग को प्राकृतिक-रंग समझ बैठी थी। मैंने अभी उसको इस रहस्य से जानकारी करानी ठीक भी न समझी। तब भी आप से क्या पर्दा है, मैं वास्तव में अपने बालों के काले रंग के लिए सिकन्दरिया के प्रसिद्ध नाई अली खां का आभारी हूं। उस समय जब मैं मिस्र की फौज में काम करता था, उसी ने खिजाब का ऐसा नुस्खा बताया था जिसका ज्ञान योरुप के वैज्ञानिकों तक को भी न था।

हुए हल्के शरीर को प्रशंसा के साथ देखते हुए कहा—"मेरे विचार में अब तुम विश्राम करो। लेकिन हाँ, किसी और चीज़ की आवश्यकता तो नहीं है ?"

"मेरे स्लीपर न जाने कहाँ हैं ?" उसने बड़बड़ाते हुए कहा।

उसका वाक्य अभी पूरा भी न हुआ था कि मैंने बैग में से एक कामदार मखमली स्लीपरों की जोड़ी निकाली और घुटने मोड़कर उसके पाँव में उनको पहनाने लगा।

"ओह"—कहकर उसने अपना नन्हा-सा सुन्दर पाँव हटा लेने का प्रयत्न किया। मैंने "ठहरो" कहकर उसके एतराज़ को दूर किया गौरव के साथ उसके चमकीले बूटों के तस्मे खोलने लगा।

थोड़ी देर 'हाँ-ना' करने के बाद वह स्लीपर पहनने पर विव गई। मैंने एक अनुभवी सेविका की भाँति पहिले उसके बूट खोले, रेशमी जुर्राबों में लिपटे हुए पाँवों पर हाथ फेरा और इसके स्लीपर पहिना दिये।

ऐसा करते हुए मेरी दृष्टि जब उसके दोनों कोमल और टखनों पर गई, जो मोतिया रंग की जुर्राबों में और भी मोहक दि देते थे तो खून की एक लहर बरबस मेरे सिर की तरफ़ उठी औ उसके पाँवों को हाथ में ही लिए हुए पागलों की भांति कहा— भला, इक गेन्ज..... इसे देखे तो क्या कहे ?"

उसी समय प्लेटफार्म पर भीड़ का भयानक शोर मेरे क पड़ा। मैं उसे सुनकर बेचैनी के साथ खड़ा हो गया। कोई बरामदे में खड़ा हुआ हमारे कम्पार्टमेंट का दरवाज़ा खटखट था।

मैं दरवाज़ा खोलने के लिए मुड़ा ही था कि आराम से ले हेलियन झट उठकर बैठ गई और शंकित दृष्टि से मुझे देखने बाहर गार्ड हाथ में टोपी लिए खड़ा था। मुझे देखकर कुछ स्वर में वह कहने लगा—"क्षमा करना, मैं आपके विश्राम मे टाल रहा हूं।"

मैंने भवों के संकेत से पूछा—"क्यों क्या है ?"

"आपसे एक प्रार्थना है।" वह बोला—"आज इस ट्रेन

राते हुए फ्रांसीसी में कहा—"क्षमा कीजिए, मैं रूसी भाषा नहीं बोल सकती।"

इसपर वह स्त्री जो आयु में दूसरी से बड़ी थी, और जिसके विषय में मुझे मालूम हुआ कि दूसरी, उस युवती की भाभी है, हैलियन से फ्रांसीसी में बातचीत करने लगी। हैलियन को धन्यवाद देने के पश्चात वह मेरी तरफ मुड़ी और मुझसे भी उसी प्रकार संकोच भाव से आभार प्रकट किया। यद्यपि मेरा उत्तर हर प्रकार से शिष्टाचार-पूर्ण था, तथापि मेरे हृदय की बेचैनी छिपाने पर भी न छिप सकी। इतना शुक्र है कि वह मेरी वास्तविक दशा को न जान सकी।

बड़ी स्त्री गौरव तथा सौंदर्य की प्रतिमा थी। छोटी युवती की आयु अठारह वर्ष के लगभग होगी। उसका सुन्दर और भोला मुख उसे रूस के उच्च वंश से सम्बन्धित बताता था।

"मोसियो! शायद अमेरिकन हैं?" पहली ने मुस्कराकर मुझसे पूछा।

मैंने सिर झुकाकर अपनी स्वीकृति दी।

"और श्रीमती भी?"

श्रीमती डक ने मुसकराकर सिर झुका लिया।

"अब मैं जाता हूं।" मैंने हैलियन की ओर देखकर बड़बड़ाते हुए कहा—उत्तर में हैलियन पहिले हंसी, फिर शायद अपनी निर्दयता पर लज्जित होकर मेरे समीप आकर कहने लगी—"प्यारे आर्थर! रुष्ट न हो, जाओ! रात्रि कुशलता से बीते।" और उसने प्रेम से मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया।

"रात कुशलता से बीते।" मैं बुदबुदाया और यह कहकर मुड़ना ही चाहता था कि मेरे मस्तिष्क में तुरन्त ही एक विचार बिजली की तरह दौड़ गया। दोनों शहजादियों के सामने हैलियन को अपनी ओर खींचकर मैंने उसकी ठोड़ी को सहारा देते हुए उसका चेहरा ऊंचा उठाया और उसके लाल-लाल होठों को चूम लिया। काली मूंछों में दबा हुआ उसका सुन्दर चेहरा विवशता से हांप रहा था, किन्तु एक पत्नी के रूप में वह इस बात पर क्या आपत्ति कर सकती थी।

उसका चेहरा लज्जा से लाल हो गया था। और यह लालिमा उस

समय और भी ज्यादा बढ़ गई थी, जब बड़ी शहज़ादी ने छोटी से रूसी-भाषा में कुछ कहा और वह इसके उत्तर में हंसने लगी ।

इसके बाद मैं उस डिब्बे से चला गया ।

४

दूसरे डिब्बे की ओर जाते हुए ऐसा लगा जैसे मुझमें किसीने करेंट दौड़ा दिया हो । उस मधुर चुम्बन की मिठास अब तक मेरे मस्तिष्क में आनन्द की सृष्टि कर रही थी । शराबियों की भाँति लड़खड़ाती हुई चाल से चलते हुए मेरे विचारों ने एक सर्वथा नवीन युक्ति मेरे सामने रखी । कोई मेरे कानों में कह रहा था—'वह तेरी है । उसका रूप और सौंदर्य तेरी ही सम्पत्ति है, फिर तू इस सुन्दर अवसर को हाथ से क्यों खो रहा था । जा, उसके यौवन की बहारें लूट । रात भर अपना आँचल सन्तुष्टि से भर ले ।'

किन्तु नहीं······मैं नहीं कह सकता कि यह उन दो विश्वासी नीली आँखों की भावना थी, जो इस समय पेरिस में ऊपर को उठी हुई मेरी कुशलता के लिए भगवान से प्रार्थना कर रही होंगी अथवा प्रगाढ़ मित्र डक की याद की भावना थी । सारांश यह कि मैं अन्त में इस भावना को कुचलने में समर्थ हो गया ।

नये डिब्बे के कोने में बैठा हुआ मैं यह सोच-विचार कर ही रहा था कि ऊपर के तख्ते से अंग्रेजी में एक स्वर सुनाई दिया, जिसमें आधा जर्मनी और आधा रूसी स्वर मिला हुआ था ।

"आप क्या अमेरिका से पधार रहे हैं ?"

मैंने आंख उठाकर देखा । मेरा नया मित्र एक मोटा नाटे कद का व्यक्ति था । जिसका चौड़ा चेहरा, छोटी और चमकीली आंखें, तातारी मूंछें और सिर के बाल फांसीसी वहशियों की भांति उलझे हुए थे ।

यद्यपि उसकी आयु कोई सैंतालीस या पचास वर्ष के लगभग होगी तथापि फूले हुए शरीर और हल्की नीली ऐनक में छिपी आंखों के कारण उसके युवक होने का भ्रम होता था । उसके कपड़े साधारण

थे, और किसी भी प्रकार का प्रदर्शन या कृत्रिमता उनमें नहीं थी। सबसे बड़ी विशेषता थी उसकी आवाज़ में। उसकी आवाज़ में एक अजीब लोच, नम्रता और दृढ़ता का समावेश था। मैंने उसे बताया कि मैं अमेरिका का ही रहने वाला हूं और उस देश की सेना का पेन्शनर अफसर हूँ।

"किन्तु मैंने तो सुना था कि आप शहजादी पाल्टज़न के मित्र हैं—" उसने ईर्ष्या-भरे स्वरों में कहा—"अमेरिका निवासी हर जगह कितनी सुविधा से मेल-जोल कर लेते हैं।"

मुझे उसका अन्तिम वाक्य तीर जैसा तेज लगा। उसकी ईर्ष्या को भड़काने के लिए मैंने उसे उत्तर दिया—"मैं इस देश में पहली वार भ्रमण करने आया हूँ और सिटी में एम० वैल्टस्की के पास ठहरूंगा। मेरी बेटी का विवाह उनके भाई बसील से हुआ था, जिनके विषय में आपने शायद सुना हो। वह मार्कोप्लोना में बड़ी वीरता से लड़कर वीर गति को प्राप्त हुआ था।"

"आह! तो आप वैल्टस्की के नजदीकी सम्बन्धी हैं।" उसने कहा। और मुझे ऐसा लगा जैसे रूस के इस प्रसिद्ध परिवार की चर्चा ने उसकी दृष्टि में मेरी प्रतिष्ठा दुगनी कर दी है। वह एक आह के साथ आगे कहने लगा—"आपके जातीय गौरव का क्या वर्णन किया जाए। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि अमेरिका वालों की जाति महान है।"

इसके बाद हम परस्पर खुल गये। उसने एक सिगार स्वयं सुलगाया और दूसरा मुझे दिया। बातचीत के बीच में मैंने अपने सैनिक जीवन की अनेक महत्त्वशाली घटनाओं का वर्णन उसे सुनाया। उसने भी उन नवयुवक अमेरिकनों की कहानियां सुनाईं जो न्यूयार्क से सैंट पीटर्जबर्ग घूमने के लिए आ चुके थे।

थोड़ी देर बाद हमारा वार्तालाप कुछ मद्धम हो गया। अतः मैं निचली सीट पर लेटने के लिए सोच ही रहा था कि उसने कहा—"सम्भव है मैं आपको सोता छोड़कर रास्ते में ही उतर जाऊं। इसलिए अपना परिचय कार्ड अभी आपको देता हूँ। इस देश में रहते हुए कभी आपको मेरी सेवा की आवश्यकता हो तो अवश्य स्मरण

कीजियेगा ।"

यह कहकर उसने गत्ते का एक छोटा-सा चौकोर टुकड़ा मे हाथ में दे दिया। उस पर ये दो शब्द लिखे हुए थे—

वैरन फ्रेडरिक

पांचवां परिच्छेद

अन्तिम यात्रा

१

सवेरे जब मेरी आंखें खुलीं तो दिन काफी निकल आया था। रे के बरामदे में डाइनिंग कार वालों का नौकर दरवाजा खट-खटाकर इ बात की सूचना दे रहा था कि मैं उपस्थित हूं।

मैं उठा और अभी कपड़े ही पहन रहा था कि गार्ड टिकिट चै करता हुआ आ निकला। पाल्टजन शहजादियों पर मेरे अहसान क वह अब भी प्रशंसा कर रहा था। बातचीत से मालूम हुआ कि शह जादियों में बड़ी स्त्री पोलैण्ड के गवर्नर जनरल की पत्नी और छोटं गवर्नर की बहिन है।

मुझसे निवृत्त होकर वह पीछे मुड़ा ही था कि ऊपर के तख्ते वैरन-फ्रेडरिक की आवाज सुनाई दी। अब मैंने जाना कि योजना के अनुसार वह रास्ते में नहीं उतरा था और अब इसी गाड़ी से किस अगले स्थान पर जा रहा था।

रात को सोते समय उसने केवल अपना कोट और वास्क उतारी थी। उनको पहनते हुए उसने गार्ड को आवाज दी—"इध आओ।"

"कहिये, क्या है?" गार्ड ने उसकी तरफ मुड़ते हुए पूछा।

'तुम इस लाइन पर मालूम होता है नये-नये आये हो?"

"जी नहीं, मैं कई साल से काम कर रहा हूँ।" गार्ड ने उत्तर दिया।

"फिर तो तुम वड़े सूअर, गधे और पाजी हो। तुम को इतना मालूम नहीं कि यात्रियों के टिकिट चैक करते समय नीचे-ऊपर की दोनों सीटें देख लेनी चाहियें।" फ्रेडरिक ने क्रोधित स्वरों में कहा। और इतने कहने पर ही सन्तोष न करके वेचारे गार्ड का कान पकड़-कर ज़ोर-ज़ोर से हिलाया। फिर उसके कान के पास अपना मुंह ले जाकर कुछ कहा।

गार्ड जो उसके इस दुर्व्यवहार पर आश्चर्य-चकित था, सहसा मार खाए हुए कुत्ते की भांति नम्र बन गया। उसका रंग पीला पड़ गया, घुटने ज़ोर से हिलने लगे और कायरों की भाँति हाथ जोड़कर वह कहने लगा—"हज़ूर···अन्नदाता! मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। भूल हुई, भूल हुई। मेरा अपराध क्षमा कीजिये···भविष्य में ऐसा न होगा।"

"वस जाओ! मैं अधिक सफाई नहीं चाहता।" उस विचित्र मनुष्य ने हाथ का संकेत करते हुए कहा—"परन्तु देखो। गाड़ी अगले स्टेशन पर काफी देर तक ठहरे, क्योंकि मैं और ये मेरे मित्र होटल में बैठकर खाना खाएंगे। आप (मेरी ओर संकेत करके) मेरे अतिथि हैं।"

सैकड़ों बार झुक-झुककर प्रणाम करता हुआ गार्ड वापस चला

ग

स्टेशन पर हो जाया करती है, चारों ओर सन्नाटा बिखरा था।
में डूबे हुए पुरवैया वायु के तेज़ झोंके नाड़ियों तक का खून जमाते
चल रहे थे।

होटल में पहुंचकर मैंने सबसे पहिले अपनी पत्नी के
भोजन का थाल भिजवाया। थाल-वाहक के साथ ही मुझे हैलियन
धन्यवाद मिला। साथ में हैलियन ने यह सन्देशा भी भेजा था
मैं शीघ्र ही आप से मिलूंगी। पाल्टजन शहज़ादियों ने भी
नौकरानी के हाथ अपना खाना रेल के डिब्बे में ही मंगवा लिया थ

श्रीमती डक की आवश्यकताओं से निवृत्त होकर मैं और बं
अपनी पेट-पूजा की ओर झुके। वह स्वादिष्ट खाने हमने खाए ि
याद करके आज भी ज़बान चटखारे लेती है। मौसिम और बेमौ
की वह कौन-सी वस्तु थी जो हमारे सामने न परोसी गई थी। कास्पं
की दरियाई मछलियाँ, फ़िन्लैंन्ड के पले हुए तीतर और वैस्टफालि
के जंगली शिकार के मांस के साथ-साथ जान्सवर्ग के असली जखीरे
शाही शराब और क्यूबा के बढ़िया सिगार हमारे सामने उपस्थित ि
गये।

कर रहा था।" मैंने कहा—"अमेरिका के उद्देश्यों से रूस के ज़ार का क्या सम्बन्ध ?"

"मैं नहीं कह सकता कि उसका परस्पर कोई सम्बन्ध है अथवा नहीं ?" उसने मेरे विरोधों को हाथ के इशारे से रद्द करते हुए कहा—"और मैं आपको अपने विचारों को प्रकट करने से भी नहीं रोकता, किन्तु इतना ध्यान रखिये कि राजनैतिक विचार चाहे किसी भी रूप में हों, इस देश में वर्जित हैं। हर प्रकार के अपराधों में राजनैतिक अपराध यहां सबसे बड़ा अपराध समझा जाता है।"

मैंने इस अनुचित विवाद को आश्चर्य के साथ सुना।

और उससे भी अधिक आश्चर्य मुझे इस बात से हुआ कि होटल का मैनेजर जब कभी बैरन के सामने आता तो वह भी ऐसी मासूम और दीन अवस्था का प्रदर्शन करता, जैसे उसके मुंह में जबान ही न हो। इसके बाद जब हम भोजन से निवृत होकर ट्रेन की तरफ जा रहे थे तो वह हमारे पीछे दौड़ता हुआ आया। मेरे मित्र बैरन को साष्टांग प्रणाम करता हुआ, उसके पांवों को छूकर वह सम्मानपूर्वक बोला—"श्रीमान् ! भोजन में किसी प्रकार की त्रुटि तो नहीं थी ? यदि आज्ञा हो तो कुछ चीजें टोकरी में डालकर हजूर के डिब्बे में रखवा दूं। कम-से-कम एक बक्स सिगार और थोड़ी शैम्पियन तो अवश्य स्वीकार करें।"

इस प्रकार बहकता हुआ वह पीछे-पीछे चला आ रहा था और बैरन को उसका उत्तर तक देने की परवाह न थी। वह यूं अकड़ा जाता था जैसे कहीं का बादशाह हो। मैंने सोचा कि इतना घमंड तो शायद रूस के बादशाह में भी न होगा।

मैनेजर के बहुत अधिक अनुनय-विनय करने के पश्चात् उसने एक डिब्बा सिगारों का लेना स्वीकार कर लिया। इसके बाद जब होटलवाला अपनी भेंट स्वीकृत हो जाने पर फूला न समाता हुआ स्टेशन की तरफ़ दौड़ा जा रहा था, तो बैरन ने मुझसे कहा—

"पहले मेरा विचार पिछली ही रात को डोनावर्ग उतर जाने का था, किन्तु रास्ते में एक सूचना ऐसी मिली जिसके कारण अब मैं सीधा राजधानी जाऊंगा। गाड़ी चलने में अभी कुछ देर बाकी है।

आप बैठिये, मैं दो-एक काम करके आता हूँ।"

इतना कहकर वह एक ओर को चला गया और मैं सिगार हुआ प्लेट फ़ार्म पर टहलने लगा। मैं रह-रहकर सोच रहा जर्मन, कुछ अफ्रीकी और कुछ तातारी झलक वाला यह वस्तुत: कौन है जिससे रेलवे के सब कर्मचारी इस प्रकार काँपते हैं। बहुत कुछ सोच-विचार के पश्चात् जिस निश्चय पहुंचा वह यह था कि शायद वह रेलवे का कोई बड़ा अफ़सर इस समय दौरा कर रहा है। बैरन के कारण मेरे पास से ज रेलवे कर्मचारी मेरी ओर भी सम्मान की दृष्टि से देख रहे थे।

स्टेशन की बिल्डिंग रूसी ढंग पर बनी हुई थी। साधारण दीवारें, छत की जगह गोल गुम्बद और चारों किनारों पर चार छोटे गुम्बद। शेष सारा सामान लकड़ी का था।

प्लेट फार्म पर टहलता हुआ मैं अपने मित्र बैरन के आ सत्कार पर प्रसन्न हो रहा था। उसने यह सिद्ध कर दिया था कि में भी बहतरीन सिगार और अच्छी शराब मिल सकती है, हां वाला मनुष्य प्रभावशाली होना चाहिए।

एक तो स्वादिष्ट भोजन मिलने की प्रसन्नता, दूसरे शीतल

अधिक स्वतन्त्र विचारों के होते हैं। यह निर्णय करने के बाद मैं अपने मन में प्रसन्न होकर सिगार के कश लगा ही रहा था कि मुझे पीछे से एक मधुर स्वर सुनाई पड़ा—

"प्यारे प्रीतम ! उस स्वादिष्ट भोजन के लिए जो तुमने भेजा था, धन्यवाद !"

वह हैलियन थी, जो गाड़ी की खिड़की से बाहर झुकी हुई थी। सूर्य के प्रकाश से झिलमिलाते रत्नों से जड़ी अंगूठियों वाला उसका नन्हा-सा हाथ मेरे कन्धे पर टिक गया और उसकी भोली काली आँखें मेरी ओर देखने लगीं।

उत्तर देने की बजाय मैंने उसके कोमल हाथ को चूम लिया। वह हंसते हुए कहने लगी—"ठहरो, मैं बाहर आती हूँ। अभी गाड़ी चलने में देर है।"

एक क्षण पश्चात हम दोनों हाथों में हाथ डाले गाड़ी के आस-पास टहलते फिर रहे थे।

३

"आर्थर ! तुमने कितना स्वादिष्ट भोजन भेजा था। मैं नहीं जानती कि तुम्हारे इन एहसानों का बदला किस प्रकार चुकाऊँ ?"

"इस प्रकार।" यह कहते हुए मैं उसके गर्म ओठों का एक चुम्बन और लेना चाहता था कि वह हंसकर परे हट गई और चंचलता के साथ बोली—"बस ! इतनी कसरत ठीक नहीं। तुम तो पति के बदले प्रेमी बने जाते हो।"

मैं निरुत्तर हो गया। इसके बाद जब हम साथ-साथ टहल रहे थे तो मैंने भविष्य के लिए जो योजना बनाई थी, वह उसे बता दी।

"होटल डीला योरुप !" उसने अपने ठहरने के स्थान के बारे में सुनकर कहा—"आपकी सम्मति उचित है किन्तु इसमें एक कठिनाई अवश्य है।"

"क्या ?"

"मेरा ख्याल है कि पति-पत्नी के इस सम्बन्ध की खबर एम०

वैलटस्की के कानों तक अवश्य पहुंच जाएगी।"

मैं ज़ोर से चौंका—

"एम० वैलटस्की के कानों तक!" मैंने घबराहट के साथ पूछा—"क्यों? यह कैसे?"

"इसलिए कि पाल्टजन शहज़ादियाँ जो सैंट पीटर्ज़बर्ग जा रही हैं, वे एम० वैलटस्की को भली प्रकार जानती हैं।"

"और वे उससे चर्चा भी कर देंगी?"

"अवश्य—क्योंकि छोटी लड़की डोजिया की मंगनी एम० कान्स्टनटाइन वैलटस्की के बड़े भाई के लड़के साचा से हो चुकी है।"

"साचा! कैसा अजीब नाम है।"

"अजीब कुछ नहीं। साचा अलेक्जेन्डर की जाति में से है। मुझे खेद है कि तुम रूस की परिस्थितियों को नहीं जानते।"

"और तुम उनके बारे में अधिक जानती हो।" मैंने उत्तर दिया।

वह इस वाक्य पर घबरा गई किन्तु तुरन्त सम्भलकर कहने लगी—"आर्थर, तुम्हें अपनी पत्नी से नाराज नहीं, प्रसन्न होना चाहिये। क्या तुम नहीं जानते कि दोनों शहज़ादियां अभी से मुझको बहिन की भांति चाहने लगी हैं?"

"ओह! तो क्या मेरी तरह उनपर भी तुमने कोई जादू डाल दिया है?" मैंने उसकी तरफ़ मुड़कर पूछा।

उत्तर में वह बड़े ज़ोर से ठहाका मारकर हंसने लगी।

"क्या खूब।" मैंने तनिक कठोर होकर कहा—"तुम तो हंसती हो और यहां चिन्ता के मारे जान पर बनी हुई है।"

"नहीं प्यारे।" उसने मेरा हाथ अपना हाथ से दबाते हुए कहा—"मैं तुम्हारी कठिनाइयों पर नही, तुम्हारी भोली बातों पर हंसती हूँ। क्या वास्तव में मैंने तुमपर कोई जादू डाला है?"

"एक मुझपर ही क्या, तुम जिस से भी मिलती हो तुरन्त उसे अपने बस में कर लेती हो।" मैंने चारों ओर दृष्टि डालकर कहा।

और वास्तव में वे सारे यात्री जो हमारी तरह प्लेटफ़ार्म पर टहलते फिर रहे थे, मेरी बनावटी पत्नी को प्रशंसामयी दृष्टि से देख रहे थे। यहां तक ही नहीं, होटल के बैरे और कुली भी उसको [illegible]

छटा से प्रभावित होकर अपने काम करना भूल जाते थे। मेरी यात्रा का साथी मित्र भी जिसके अतिथि-सत्कार का मैं हृदय से आभारी था, हमारे पास से गुजरते हुए हल्की नीली ऐनक में से उसको देखने के लिए ठहर गया। इसके बाद हाथ का संकेत करके वह अपने डब्बे में चला गया।

उसके जाने के बाद श्रीमती डक ने साधारण ढंग से पूछा—"क्यों भला, यह कौन था ?"

"मैं स्वयं नहीं जानता।" मैंने उत्तर दिया—"हां, इसके महान व्यक्तित्व और असाधारण सम्मान को देखकर मैं यह सोचता हूँ कि वह निश्चय ही इस लाइन का बड़ा अफ़सर या रेलवे कम्पनी का बड़ा भागीदार होगा।"

"ओह, मेरे भोले बालम।" श्रीमती डक ने शोखी से हंसते हुए कहा—"क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि रूस में सब रेलें सरकारी हैं। इस देश की किसी भी लाइन का प्रबन्ध किसी कम्पनी के हाथ में नहीं है।" फिर वह बोली—"परन्तु सुनो, घंटी बज रही है।"

"अफ़सोस ! मैं भी कितना मूर्ख हूँ।" मैंने हैलियन को रेल में चढ़ाते हुए हंसकर कहा—"निस्संदेह, वह इस लाइन का बड़ा अफ़सर नहीं हो सकता, फिर भी वह कोई बड़ा आदमी अवश्य है। रेलवे के सब कर्मचारी उससे डरते हैं। मुझको केवल इतना ही मालूम है कि उसका नाम बैरन फ्रेडरिक है।"

हैलियन मेरी तरफ़ मुंह करके गाड़ी के पायदान पर खड़ी थी। सहसा लड़खड़ाकर गिरी और मेरी बाहों में सिमट गई। आह, यदि मैं उसके सहारे के लिए वहां न होता, तो भगवान जाने उसे कितनी चोट आती !

"क्या हुआ ?" मैंने उसको सहमा हुआ देखकर प्रेम से पूछा।

"कुछ नहीं। यूं ही चक्कर आ गया था।" वह बोली।

किन्तु यह बात मुझसे छिपी न रह सकी कि वह जो कुछ कह रही थी, वह केवल एक बहाना मात्र था; उसपर मैंने उसको सहारा देकर दोबारा ऊपर चढ़ाया। वह खिड़की में खड़ी होकर फीकी मुस्कराहट के साथ कहने लगी—"तब तो नाश्ते पर तुम्हारी और

पुस्तक खोल ली थी। विचारधारा रह-रहकर अपनी व्यक्तिगत समस्याओं की ओर चली जाती थी।

पाल्टज़न शहज़ादियाँ वैलटस्की परिवार के व्यक्तियों से भली भाँति परिचित थीं। हैलियन का मेरी पत्नी होना भी उनको मालूम था। इसलिए सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि मैं जब एम० वैलटस्की और अपनी बेटी से मिलूंगा तो हैलियन के बारे में क्या सफ़ाई पेश करूंगा।

सिगार के कश लगाता हुआ मैं इस प्रश्न के विभिन्न पहलुओं पर विचार करता रहा, किन्तु कोई भी सन्तोषजनक उत्तर मुझे न मिला। अन्त में मैंने सोच लिया कि यदि मुझे इस रहस्य को खोलना ही पड़ा तो मैं सारा हाल एम० वैलटस्की को बता दूंगा। वह एक अनुभवी तथा प्रौढ़ होने की हैसियत से न केवल इस समस्या को सुलझा लेंगे, बल्कि इस घटना को मेरी विवाहिता पत्नी के कानों तक भी न पहुंचने का प्रबंध कर देंगे।

मैं यह सब कुछ सोच ही रहा था कि बैरन की हल्की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी।

"आप जब बर्लिन से चले थे तो क्या इस गाड़ी में कई एक सुन्दर स्त्रियां सवार थीं?"

उसने कागजों को एक ओर रख दिया था और दो उंगलियों में सिगार थामे हल्के नीले चश्मे से मुझे देख रहा था।

"शायद हों।" मैंने पुस्तक बन्द करते हुए उत्तर दिया—"लेकिन मेरी पत्नी से बढ़कर सुन्दर कोई भी न थी।"

'खूब"—उसने मुस्कराते हुए कहा—"पति होते हुए भी आप अपनी पत्नी के प्रेमी ही हैं। यद्यपि यह गुण आजकल के पतियों में बहुत कम पाया जाता है।"

फिर जरा ठहरकर वह बोला—"मेरे विचार में श्रीमतीजी की सौतेली बेटी का विवाह वसील वैलटस्की से हुआ है।"

"जी नहीं। श्रीमती की अपनी बेटी का।" मैंने सफाई पेश की।

"परन्तु आप तो कह रहे थे कि आपकी लड़की की गोद में बच्चा है।" उसने आश्चर्यचकित होकर मुझको देखा।

की आज्ञा तार द्वारा पहिले ही रवाना कर दी गई थी इसलिए जहां तक हो सका एक से एक स्वादिष्ट और उत्तम खाद्यपदार्थ परोसे गए थे। जब हम लोग खाने के कमरे में गये तो वहां कुछ और भी व्यक्ति उपस्थित थे, जिनमें मेरा मित्र बैरन फ्रेडरिक भी सम्मिलित था। मैंने देखा कि अन्य व्यक्तियों की भांति वह भी पाल्टजन शाहज़ादियों से प्रभावित जान पड़ता था।

रूसी शहजादियां स्वभाव की बहुत ही अच्छी थीं। उनके थोड़े से सम्पर्क ने ही मेरी पत्नी में जिन्दादिली के आसार पैदा कर दिये थे। रह गया मैं, तो मैं यात्रा की समाप्ति समीप आते देखकर जी ही जी में सहमा जाता था, तो भी दिखावे के लिए मुझे उनकी सम्पूर्ण खुशियों में भाग लेना पड़ा।

५

भोजन समाप्त हुआ और हम चारों, मैं, मेरी पत्नी और शाहजादियां बाहर प्लेटफार्म पर आ गये। गाड़ी के चलने की प्रतीक्षा में हम उसके पास ही टहल रहे थे। हैलियन और डोज़िया एक ओर, और मैं तथा उसकी भावज दूसरी ओर। मैंने देखा कि हैलियन और डोजिया का जोड़ा एक ऐसा आकर्षक जोड़ा बन गया था जिसपर प्रत्येक यात्री की निगाहें उठ रही थीं।

"देखिये ! कितनी तन्मयता से बातें हो रही हैं।" पोलैन्ड के गवर्नर की पत्नी ने हंसकर उनकी तरफ संकेत करते हुए मुझसे कहा।

मैंने देखा, कुछ दूर पर खड़ा बैरन भी अपनी चुन्धी आंखों से उस मनमोहक जोड़े को देख रहा था। मैं नहीं कह सकता कि यह मेरा भ्रम था या क्या ? परन्तु फिर भी जब हैलियन और डोजिया टहलते हुए उसके पास से गुजरतीं, तो मेरी बनावटी पत्नी का स्वर तेज़ हो जाता था। ऐसा लगता था मानो वह बैरन को रूस की शाहजादी से अपनी प्रगाढ़ता का प्रमाण देना चाहती थी।

'भगवान ही जानता है' मैंने अपने मन में कहा—'उसकी इस भाव-भंगिमा से तो ऐसा मालूम होता है कि वह उस मूर्ख बैरन

जब मैं अपने डिब्बे में वापिस आया तो बैरन फ्रेडरिक उदास सूरत बनाए बैठा था। वह तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से मुझे देखने लगा। ऐसा लगता था जैसे मेरी लम्बी अनुपस्थिति पर वह खेद प्रकट कर रहा हो। फिर हमारे बीच अनिश्चित विषयों पर वार्तालाप होता रहा, परन्तु मैंने देखा कि हैलियन का सौंदर्य उसपर भी जादू डाल चुका था। दो-तीन बार उसने उसके अनुपम रूप-लावण्य की चर्चा बड़े आश्चर्यजनक ढंग से की थी।

मेरा रक्त जो तेज़ शैम्पियन के कारण पहले ही गरमाया हुआ था, हैलियन की प्रशंसा सुनकर और भी अधिक गर्म हो गया। बैरन पर रौब डालने की नीयत से मैंने यह भी कह दिया कि वह अमेरिका के वान्डर विल्ट ईस्टर खान्दान की लड़की है। यह कहने के बाद फ्रेडरिक की दृष्टि में सचमुच मेरा महत्त्व बहुत बढ़ गया।

इस प्रकार बातें करते हुए यात्रा पूरी हो गई। दिन ढलने के बाद रूस के मुख्य स्थान दिखलाई देने आरम्भ हो गये थे। हरे-भरे बाग और बगीचे दिखाई देने के बाद अब सैंट आइजक के गिरजे का बड़ा गुम्बद दिखाई देने लगा था। गाड़ी और भी तेज़ चाल से अब पैटर-होफ के उन स्थानों को पार कर रही थी, जिनके वृक्षों की ठंडी और मीठी छांव में रूस के राजसी प्रेमियों ने सौंदर्य और प्रेम का रसा-

मुझे इस विचार की सत्यता शीघ्र ही पता लग गई। थोड़ा
बाद ही जब मेरे साथ वाली शाहजादी गाड़ी में बैठ गई तो बैर
एकान्त देखकर मुझसे प्रार्थना की कि मैं शाहज़ादियों से उसका
चय करा दूं। मना करना शिष्टाचार के विरुद्ध था अतः मैं उ
उनके पास ले गया और प्रचलित प्रथा के अनुसार कहा—"मेरी
श्रीमती लेनाक्स...बैरन फ्रेडरिक।"

मेरी आशा के प्रतिकूल वह उससे सहर्ष मिली। उसने डो
से भी उसका परिचय कराया यद्यपि डोज़िया ने बैरन की इतनी
परवाह न की, जितनी कि वह अपने गोद के कुत्ते की करती थी।

इस शुष्क व्यवहार के कारण बैरन शीघ्र ही वहां से विदा
गया। जाने से पहिले उसने मेरी पत्नी का हाथ सम्मानपूर्वक
हाथ में लेकर झप-झपाती नज़रों से उसे देखते हुए धीरे से कहा
"भगवान ने इस आयु में आपको धैयता प्रदान किया है। बधाई है

जब मैं अपने डिब्बे में वापिस आया तो बैरन फ्रेडरिक उदास सूरत बनाए बैठा था। वह तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से मुझे देखने लगा। ऐसा लगता था जैसे मेरी लम्बी अनुपस्थिति पर वह खेद प्रकट कर रहा हो। फिर हमारे बीच अनिश्चित विषयों पर वार्तालाप होता रहा, परन्तु मैंने देखा कि हैलियन का सौंदर्य उसपर भी जादू डाल चुका था। दो-तीन बार उसने उसके अनुपम रूप-लावणय की चर्चा बड़े आश्चर्यजनक ढंग से की थी।

मेरा रक्त जो तेज़ शैम्पियन के कारण पहले ही गरमाया हुआ था, हैलियन की प्रशंसा सुनकर और भी अधिक गर्म हो गया। बैरन पर रौब डालने की नीयत से मैंने यह भी कह दिया कि वह अमेरिका के वान्डर विल्ट ईस्टर खान्दान की लड़की है। यह कहने के बाद फ्रेडरिक की दृष्टि में सचमुच मेरा महत्त्व बहुत बढ़ गया।

इस प्रकार बातें करते हुए यात्रा पूरी हो गई। दिन ढलने के बाद रूस के मुख्य स्थान दिखलाई देने आरम्भ हो गये थे। हरे-भरे बाग और बगीचे दिखाई देने के बाद अब सैंट आइज़क के गिरजे का बड़ा गुम्बद दिखाई देने लगा था। गाड़ी और भी तेज़ चाल से अब पैंटर-होफ के उन स्थानों को पार कर रही थी, जिनके वृक्षों की ठंडी और मीठी छांव में रूस के राजसी प्रेमियों ने सौंदर्य और प्रेम का रसास्वादन किया था।

गेट शयना के चौड़े संगमर्मर के पुल को पार करके हमारी गाड़ी धुंधली बैरकों और कोठियों के पास से होती हुई, बजती हुई घंटियों और सीटियों की तेज़ आवाज़ों के बीच स्टेशन पर खड़ी हो गई।

हम अब ज़ार रूस के शहर सैंट पीटर्ज़बर्ग में पहुंच गये थे।

लिए डिब्बों में घुस पड़े। मैंने कुछ कुलियों को यह कहकर कि हमारे ट्रंक लगेज-ग्राफिस से छुड़ाकर होटल डीला योरुप ले ग्राग्रो, सबसे पहले रूसी शाहज़ादियों के उतरने में सहायता की। मेरे देखते-देखते वे उन भद्र पुरुषों से घिर गईं जिनमें से प्रत्येक व्यक्ति ग्रादर-सत्कार के साथ उन्हें ग्रपने साथ ले जाने का प्रयत्न कर रहा था।

इसके बाद मैं हैलियन की ग्रोर मुड़ा। उसके स्वागत के लिए भी सैंकड़ों ग्रांखें पृथ्वी पर बिछी हुई थीं। यद्यपि उनमें कोई भी उससे परिचित न था तथापि सौंदर्य ग्रपरिचितों पर भी परिचितों जैसा ग्रधिकार कर लेता है।

मैं उसको एम० वैलटस्की ग्रौर ग्रपने ग्रन्य सम्बन्धियों के ग्राने से पहले ही होटल में ले जाने की सोच रहा था कि बड़ी शाहज़ादी हंसते हुए रास्ता रोककर खड़ी हो गई ग्रौर कहने लगी—"कर्नल लेनावस ! ठहरिये, ग्राप ग्रपनी सुन्दर पत्नी को यूं छिपाकर न ले जा सकेंगे। लाइये, मैं इनका परिचय भी ग्रपने सम्बन्धियों से करा दूं।"

फिर उन लोगों की ग्रोर मुड़कर उसने कहा—"ग्राप एम० वैल-टस्की की बहुत ही निकट सम्बन्धी हैं। इसलिए शीघ्र ही ग्रापसे मेल-जोल होने की ग्राशा है। तो भी इस बीच में······यह कहते हुए उसने मुझे ग्रौर मेरी बनावटी पत्नी को ग्रपने परिचितों से मिलाना ग्रारम्भ कर दिया। मुझको तो खैर कौन पूछता था, किन्तु मेरी पत्नी को बहुत शीघ्र कई चाहने वालों ने घेर लिया। ग्रौर जैसा कि उस देश की प्रथा है, हर ग्रोर से प्रीतिभोज के निमन्त्रण ग्राने ग्रारम्भ हो गये।

उस समय मैंने देखा कि मेरा मित्र फ्रेडरिक उस सुसज्जित जन समूह को ईर्ष्यालु दृष्टि से देख रहा था। रेलवे में बेशक उसकी शान होगी, किन्तु इस समय दरबारी व्यक्तियों के बीच में किसीने उसे पूछा तक नहीं था।

मैं ग्रपने कुलियों को कुछ समझाने के लिए मुड़ा ही था कि एक प्रभावशाली व्यक्ति जिसके साथ एक वर्दीपोश नौकर भी था, यात्रियों को चीरता हुग्रा इस प्रकार दिखाई दिया जैसे किसी ग्रादमी को ढूंढ़ रहा हो।

शहज़ादी पाल्टजन को देखकर उसने उसका ग्रभिवादन करने में

लिए टोपी उतारी तो वह जल्दी से उसकी ओर मुड़कर कहने लगी—

"आह कान्स्टनटाइन ! शायद आप अपने सम्बन्धियों को ढूंढते फिर रहे हैं ?"

"जी हां ! मैं कर्नल लेनावस को तलाश कर रहा हूँ।" उसने उत्तर दिया।

मुझे मालूम हुआ कि वह मेरी बेटी का जेठ वैलटस्की था। उसकी सूरत देखते ही मेरा लहू सूख गया।

हैलियन मेरे साथ थी। वहां उपस्थित स्त्रियां उसको मेरी पत्नी समझे हुए थीं। हाय ! अब क्या होगा ? किस तरह मैं अपने रहस्य को छिपाए रख सकूंगा। यद्यपि एम० वैलटस्की मेरी पत्नी की सूरत से परिचित न था, तथापि उसकी भौजाई (मेरी बेटी) अपनी मां को पहिचानने में कैसे धोखा खा सकेगी।

उन शहजादियों का सत्यानाश हो, जिन्होंने मेरे किये-कराये पर पानी फेर दिया। यदि मैं एक बार नज़र बचाकर वहां से चला जाता तो हैलियन को होटल पहुंचाने के बाद वैलटस्की से मिलने के लिए मेरे पास पर्याप्त समय था।

"देखिये वह आपके सामने खड़े हैं।" यह शहज़ादी पाल्टजन की आवाज़ थी, जो मेरी ओर संकेत करके वैलटस्की से बोल रही थी।

दूसरे ही क्षण वैलटस्की ने मुझे ज़ोर से पकड़कर अपनी चौड़ी छाती से चिपटा लिया।

मुझे याद नहीं कि मेरे मुंह से क्या निकला और मैंने उसके आवेशपूर्ण स्वागत का धन्यवाद किन शब्दों में किया। व्याकुलता के कारण मैं ज्ञान-शून्य-सा हो रहा था। मेरी आंखों के सामने धुन्ध छा रही थी ! मैं सोच रहा था कि हैलियन का रहस्य अब प्रकट हुए विना न रहेगा। मैंने हाथ के इशारे से उसे बहुतेरा टल जाने के लिए कहा, किन्तु वह निश्चिन्त-सी खड़ी नये मित्रों तथा उन दोनों सहेलियों से हंस-हंसकर बातें करती रही।

"लाइये, सामान की बिलटी मुझे दीजिये।" एम० वैलटस्की मुझसे कह रहा था—"मेरी गाड़ी बाहर खड़ी है।"

"किन्तु पहिले आप उनके सबसे मूल्यवान सामान को तो संभालिये।" बड़ी शहज़ादी ने हंसते हुए कहा—"इनकी श्रीमती जी इनके साथ ही हैं। जाइये, जाकर उनका अभिवादन कीजिये।"

"क्या आप मारग्रेट की माता जी को भी साथ ले आए।" वैलटस्की ने विस्मय से कहा—"आपने तार में इसकी सूचना क्यों न दी।"

"मैं···अर···आप अच्छी तरह जानते हैं। मैं अपनी पत्नी को प्रायः साथ ही रखता हूं। "मैंने बनावटी मुस्कराहट से कहा। धन्यवाद है भगवान् का कि वैलटस्की ने मेरी इस व्याकुलता को नहीं देखा। वह मुझे छोड़कर तुरन्त हैलियन के पास जा पहुंचा।

"मैंने उसका परिचय कराने का काफी प्रयत्न किया, किन्तु मेरे शब्द ज़बान की नोक पर आकर रुक गये। सौभाग्यवश बड़ी शहज़ादी ने परिचय कराने का काम अपने ऊपर लेकर मुझे इस नाटक में भाग लेने से रोक दिया, वरना भगवान् ही जानता है कि किस लज्जा और अपमान के साथ मैं उस अपरिचित धोखेबाज स्त्री को मारग्रेट की मां के रूप में पेश करने के लिए विवश होता।

"ठहरिये! आपके परिचय कराने का सौभाग्य मैं प्राप्त करूंगी।" शहज़ादी ने कहा—"आप श्रीमती लेनावस और आप कान्स्टनटाइन वैलटस्की, प्रतिष्ठित कुल से सम्बन्ध रखने वाले तथा आप राज-दरबार की सुन्दरियों में सर्वाधिक सर्वप्रिय।"

एम० वैलटस्की ने झुककर हैलियन के हाथ को चूमा और [illegible]राते हुए कहा—"श्रीमती लेनावस! रूस की भूमि में आपका स्वागत। मुबारक हो। आपकी बेटी मारग्रेट, खेद है, अस्वस्थ होने के कारण न आ सकी। वह अपने देहात के मकान पर ही रहती है।"

मैंने यह सुनकर सौ-सौ बार भगवान का धन्यवाद किया कि मारग्रेट अपनी नकली मां को पहिचानने के लिए घर पर उपस्थित नहीं है।

हैलियन का मुंह बेचैनी के कारण पीला पड़ गया था। वैलटस्की ने उसे अपनी बेटी की अस्वस्थता के कारण उत्पन्न हुई ही छाया समझते हुए कहा—"परन्तु आप दुःखी न हों, उसे साधारण-सा रोग

है। शीघ्र ही वह स्वस्थ हो जाएगी।"

इसके बाद वह अपने भाई की सुन्दर सास को, जिसका अभी तक उसने केवल नाम ही सुना था, और जिसे देखने का मौका अब उसे पहली बार ही मिला था, प्रशंसा की दृष्टि से देखते हुए उसने कहा—

"श्रीमती लेनावस, भगवान ने आपका दामाद युवावस्था में ही छीन लिया, किन्तु उसकी यादगार आपका धेवता जीवित है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप संसार भर में सबसे अल्प आयु की और सबसे सुन्दर नानी हैं।" और यह कहते हुए उसने उसके हाथ को उतने ही आवेश के साथ एक चुम्बन और दिया।

उत्तर में मेरी बनावटी पत्नी ने कुछ बातें मेरी असली पत्नी के लिए कहीं। जिन्हें सुनकर मैं विवशता से दाँत भींच कर रह गया।

"विदा राजकुमारी।" एम० वैलटस्की ने शहज़ादी पाल्टज़न और उसकी ननद की तरफ देखकर कहा। इसके बाद वह हैलियन को अपने साथ लेकर फाटक की ओर चल दिया और अपनी मूर्खता पर स्वयं को मन ही मन में कोसता हुआ मैं भी उनके पीछे-पीछे चलने लगा।

अभी तक लगभग बीसियों व्यक्ति हैलियन से मेरी पत्नी के रूप में मिल चुके थे। भगवान् ही जानता था कि मेरे लिए इस उलझन से छुटकारा पाने की भी कोई सूरत पैदा होगी या नहीं।

७

जब हम सब गाड़ी में बैठ चुके और कोचवान घोड़ों की लगाम हाथ में ले चुका तो सहसा मेरे मन में एक विचार उठा।

हैलियन को अपनी पत्नी के रूप में वैलटस्की के मकान पर ले जाकर रखना, अतिथि-सत्कार करने वाले के प्रति शिष्टाचार नहीं कहा जा सकता।

अतः जल्दी से एक हाथ मैंने कान्स्टनटाइन के कन्धे पर रखकर कहा—"आप हमें अपने घर ले जा रहे हैं। मैं भली भांति जानता हूँ कि उसमें आपने हमारे आराम का भी पूरा प्रबन्ध किया होगा,······ परन्तु···मैं नहीं चाहता कि मैं अपना और श्रीमतीजी के आतिथ्य-

सत्कार का बोझ आप पर डालूं।"

"वाह, यह आप क्या कह रहे हैं ?" एम० वैलटस्की ने उत्तर दिया—"बोझ कैसा ? आप तो खैर मेरे घनिष्ट सम्बन्धी हैं और अपने आने की सूचना भी दे चुके हैं। यदि बिना सूचना दिये अतिथियों की आधी रेजमेंट भी मेरे मकान पर आ जाए, तो भी समा सकती है।"

मैंने क्रोध भरी आंखों से हैलियन की ओर देखा। इशारा समझकर वह भी कहने लगी—"श्रीमान, आपके इस आग्रह का हार्दिक धन्यवाद ! किन्तु इस समय आप हमें मजबूर न करें। मेरे ट्रंक होटल डीला योरुप चले गये हैं। ऐसी दशा में आशा है आप हमें कष्टों में डालना उचित नहीं समझेंगे।"

"खैर ! ऐसी असभ्यता तो मैं कभी नहीं कर सकता !" एम० वैलटस्की ने उत्तर दिया—"तब भी !" विवश होकर उसने कहा—"आज यदि आपका आना असम्भव हो तो मैं विवश नहीं करता, किन्तु कल आने का वायदा अवश्य कीजिये। इसके लिए मैं हरगिज़ भी इन्कार न सुनूंगा।"

"बहुत अच्छा······कल हम आपके पास अवश्य आ जाएंगे।" मैंने इस ज़रा-सी देर के छुटकारे को ही ग़नीमत समझा।

"बस, तो कल पधारने के वायदे पर मैं आपको तंग नहीं करता। किन्तु चलिये, मैं इसी गाड़ी में आपको होटल तक छोड़ आऊं।"

उसने गाड़ीवान को होटल चलने का आदेश दिया और हम टयाले पत्थरों के बने हुए विशाल मकानों और गिरजों के पास से होते हुए, होटल की तरफ हो लिए। रास्ते भर श्रीमती एक एक चतुर अभिनेत्री की भांति उनसे अपनी बेटी यानी मारग्रेट के स्वास्थ्य के बारे में अनेक प्रकार के प्रश्न करती रही।

"आप नहीं जानते कि वह प्यारी लड़की मुझे कितनी याद करती है ?" वह थोड़ी-थोड़ी देर के बाद कह देती—"आप मां की ममता का हाल नहीं जानते।"

इसके थोड़ी देर पश्चात् हम होटल में पहुंच गये। एम० वैलटस्की ने यह कहते हुए हम से विदा ली—"मेरे दोनों भतीजे, नाना

और बोरिस शीघ्र ही आपकी सेवा में उपस्थित होंगे। किन्तु कर्नल लेनाक्स, यदि श्रीमती जी यात्रा की थकावट से आराम करना चाहती हों तो आप कुछ समय के लिए कल हमारी कुटिया पर पधारें।" फिर उसने हैलियन की ओर मुड़कर कहा—"मेरी श्रीमती जी किसी भी समय आपके दर्शनों को अवश्य आयेंगी।"

और हैलियन के हाथ को एक बार फिर चूमकर उसी गाड़ी से वापस लौट गये।

८

होटल में हमें बड़े कमरों का एक सुन्दर सैट मिला था, जिसकी खिड़कियों से बाज़ार का मनमोहक दृश्य देखा जा सकता था।

प्रथम तो हम अमेरिकन थे इस पर भी एम० वैलटस्की के साथ आने से हमारा रौब और भी जम गया था। इसके अतिरिक्त योरुप के होटलों में यात्रियों के व्यक्तित्व का अनुमान प्रायः उनके सामान की अधिकता से लगाया जाता है—और हैलियन का सामान होटल के मुंशी को तथा अन्य कर्मचारियों को चकित और अच्छी तरह परेशान करनेवाला था।

कमरों का जो सैट हमें मिला था उसमें एक कमरा बीच में था और उसके दोनों तरफ़ दो सुन्दर कमरे थे। उसमें से एक में हैलियन के ट्रंक सजा दिये गये थे और दूसरा मेरे सामान के लिए रखा गया था। बैठक के ठीक पीछे एक और कमरा था जो सोने के लिए था। यद्यपि एक विवाहित दम्पति के लिए वहां हर प्रकार की सुविधा और सुख प्राप्त थे, किन्तु मेरे लिए वहां की ये सब विशेषताएं बेकार थीं। इसका कारण यह था कि सैंट पीटरजबर्ग पहुँचने के बाद डक की अमानत को लौटाने का समय भी समीप आ गया था।

बैठक में पहुँचकर हैलियन ने ओवरकोट और टोपी उतार दी और यह कहते हुए अपने कमरे में चली गई—

"आर्थर, मैं आधे घंटे का अवकाश चाहती हूं। भोजन करने से पूर्व रेल-यात्रा की गर्द झाड़ लेना आवश्यक है। मैं अपने वस्त्र बदलूंगी,

आप भी अपने वस्त्र बदल लो ।"

अतः मैं भी अपने वस्त्र बदलने के लिए अपने कमरे में चल गया।

आध घंटे बाद जब मैं वापस लौटा तो मेरे शरीर पर शाम की अमेरिकन पोशाक, मेरी टाई में हीरे का पिन लगा हुआ था और मेरे गठीले शरीर पर के वस्त्र काफी सज रहे थे। मैंने आते ही, बैरे से कहा—

"तीन आदमियों का भोजन लाकर यहाँ रखो।"

"तीन का क्यों ?" यह मेरी प्यारी हैलियन की आवाज़ थी, जो वस्त्र बदलकर अपने कमरे से बाहर आ रही थी।

उसकी नंगी सफेद भुजाओं, सीने, कन्धों और सुन्दर सुसज्जित केशों में कई बहुमूल्य हीरे झिलमिल-झिलमिल कर रहे थे। उसके शरीर पर श्वेत रंग के महीन वस्त्र थे, जिनमें उसकी रूप-छटा कभी संगमरमर की मूर्ति की भाँति और कभी जल-परियों की रानी के समान दिखलाई देती थी। उसने मेरे समीप आकर पूछा—"तीसरा व्यक्ति कौन आयेगा ?"

"डक" मैंने उत्तर दिया—"क्यों न उसे खाना खाने से पहिले ही ढूंढ़ लिया जाए।"

"आह डक।" उसने अपनी हीरों की पहुँची को ठीक करते हुए कहा—"मेरे विचार में उसकी खोज भोजन के पश्चात् ही की जानी चाहिये।"

"चलो, यूंही सही।" मैंने मुसकराते हुए उत्तर दिया—"डक ने हमें बहुत कष्ट पहुंचाया है इसलिए हम भी उसको परेशान करेंगे।"

सच पूछिये तो मुझे हैलियन की सलाह से बहुत प्रसन्नता हुई थी। डक की चीज़ उसके हवाले करने से पहिले मैं अपनी सब इच्छाएं पूर्ण कर लेना चाहता था।

तभी सहसा बैरे की तरफ मुड़कर हैलियन कहने लगी—"श्रीमती आर्थर लेनाक्स के नाम कोई पत्र हो तो उसे ले आओ।"

बेयरा सलाम करके पत्र लेने चला गया, तो मुझे बहुत क्रोध आया। वस्तुतः इस आश्चर्यजनक घटना ने मेरी प्रसन्नता को किरकिरा

करके रख दिया था। ऐसी ही बात उसने वल्ना में कही थी। उस समय तो वह बहाना करके टाल गई थी, परन्तु अब, उसका बार-बार मेरी पत्नी के नाम के पत्र मांगना···उफ, यह एक अक्षम्य अपराध था।

"तुम अपना अभिनय वास्तव में बड़ी सुन्दरता के साथ कर रही हो।" मैंने व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा—और इसके पश्चात् कठोर शब्दों में कहना आरम्भ किया—"मेरी लारा का नाम तुमने लिया, मेरी बेटी के सम्बन्धियों से तुमने मेल किया; यहाँ तक कि मारग्रेट की मां भी तुम बनीं, किन्तु यहां पर मेरे विचार से यह सब समाप्त हो जाना चाहिये। मुझे खेद है कि मैं तुम्हें इससे अधिक बढ़ने की आज्ञा नहीं दे सकता। मैंने तुमको सीमा पार ले आने का वचन दिया था। अच्छा तो यही था कि हम वल्ना के स्टेशन पर ही अलग हो जाते, किन्तु तुम्हारा अनुरोध और विकलता देखकर मैं इस नाटक को इस शहर तक चलाते रहने के लिए तैयार हो गया था। खैर, अब इसकी समाप्ति होनी चाहिये। तुम्हारे चले जाने के बाद कुछ गड़बड़ अवश्य होगी और मैं यह भी जानता हूं कि डक को दुनिया वालों के सामने और मुझे अपनी पत्नी के सामने उत्तर देना मुश्किल हो जाएगा; किन्तु यह सारी बातें देखकर मैंने निर्णय कर लिया है कि जितनी शीघ्र सम्भव हो सकेगा गेन्ज को तलाश करके मैं तुम्हें उसके हवाले कर दूंगा। मैं तुम्हारे साथ नेकी और डक पर एहसान करके बहुत भर पाया। अब हाथ जोड़कर उसकी अमानत मैं उसे सौंप देना चाहता हूं।"

इसके बाद हैलियन के झुंझलाते हुए चेहरे की ओर देखकर मैं अपने शब्दों की कठोरता कम करने के लिए यह कहना ही चाहता था कि क्यों भजा, डक गेन्ज इस दृश्य को देखकर क्या कहेगा ? कि सहसा आश्चर्यचकित होकर रुक गया। मैंने देखा—

नौकर एक तश्तरी में पत्र रखे हुए ला रहा था। मेरी पत्नी श्रीमती आर्थर लेनाक्स के नाम भेजा हुआ पत्र ? जो पेरिस में अपने घर पर बैठी हुई थी।

आवेश के कारण मुंह से न जाने क्या निकलता-निकलता रह

चिन्ता करो।"

"क्यों क्या हुआ ?" मैंने व्याकुलता से पूछा।

क्षण भर में ही उस भोली-भाली रमणी ने जो ऐट कोहनन की सीमा पर दीनतापूर्वक मेरी प्रार्थना कर रही थी, और जिसके दुख ने वलना के स्टेशन पर मुझे इतना मोम बना दिया था, अब एक नवीन नैराश्य का रूप धारण कर लिया था। उसकी आँखों में एक विचित्र प्रकार की चमक पैदा हो गई थी। उसके गुलाबी होठों के आस-पास गम्भीरता के चिह्न दृष्टिगोचर हो रहे थे। इतना ही नहीं, उसने एक छोटा-सा बुलडाग रिवाल्वर भी निकाल लिया था।

मैं आश्चर्य में डूबा हुआ उसे देख रहा था। क्या यह वही भोली हैलियन थी, जिसकी सहमी हुई सूरत पर मैंने दया की थी। सच जानिये, स्त्रियों में काया-पलट का ऐसा अनोखा उदाहरण न तो मैंने कभी देखा था और न भविष्य में देखना नसीब होगा।

यह सोचकर कि शायद उसका दिमाग़ ख़राब हो गया है, मैं कुछ कहना ही चाहता था कि उसके हाथ के संकेत ने मुझे रोक दिया—

"खामोश"—दबे हुए आवेशपूर्ण स्वरों में वह बोली—"यह समय दिल्लगी का नहीं है। हम पर एक ऐसा भारी संकट आने वाला है जिसका हमें गुमान तक न होगा। मुझे कोई ऐसी तरकीब सोचने दो कि मैं अपने आपको और तुम्हें भी उससे बचाने का प्रयत्न कर सकूं।"

"परन्तु यह पत्र जो अभी तुमने पढ़ा है क्या डक गेञ्ज ने भेजा है ?" मैंने पूछा।

उसने बेसबरी के साथ कहा—"डक गेञ्ज गया चूल्हे में, मैं नहीं जानती वह कौन है ?"

"तो वह···वह तुम्हारा पति नहीं है ?" मैंने कुछ हकलाते हुए पूछा।

"बिल्कुल नहीं—डक गेञ्ज मेरा पति नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि कोई भी मेरा पति नहीं है।"

मेरा चेहरा लटक गया। अचेतन-सी अवस्था में मैंने दोनों हाथ ऊपर उठाकर कहा—"हे भगवान् ! तेरा ही आसरा है।"

"परन्तु पैरिस से चलते समय तुमको मेरी यात्रा का हाल मालूम ही कब था ?" मैंने बढ़ते हुए आश्चर्य के साथ पूछा।

"मुझे खूब अच्छी तरह मालूम था।" उसने हल्की-सी घृणा के साथ उत्तर दिया—"क्या आप यह समझते हैं कि हम अपने कामों को बिना सारी बातें सोचे ही आरम्भ कर देते हैं ? बिल्कुल नहीं, आपके रूस आने के बारे में हमको बहुत दिन पहिले मालूम हो गया था।" रुक-रुककर वह बोली—"बात यह है कि हमारी पार्टी के लिए किसी भी व्यक्ति को रूस भेजकर यातायात का सिलसिला नये सिरे से आरम्भ करना आवश्यक था। ऐसी दशा में मैं क्या इस बात का विश्वास प्राप्त किये बिना ही रवाना हो सकती थी कि रूस देश में प्रवेश करने के लिये मुझे क्या करना होगा ? मुझको यह भली प्रकार मालूम था कि पासपोर्ट के बिना मेरा पकड़ा जाना और सजा पाना निश्चित है। बस, मुझे यह बात मालूम हो गई कि आप पैरिस से सेंट पीटर्सबर्ग जा रहे हैं। आपके पास दो यात्रियों का पासपोर्ट है और आपकी पत्नी कुछ कारणों से आपके साथ जाने को तैयार नहीं है। इन बातों के अतिरिक्त यह बात भी मालूम कर ली गई, कि आप स्वभाव से सौंदर्य-प्रेमी हैं।

ये सब बातें जानने के बाद मैं आपकी ही ट्रेन से रवाना हुई, और पैरिस से बर्लिन तथा बर्लिन से ऐट कोहनन पहुंच गई। इसके पश्चात आपको बनावटी पति बनाकर बाकी यात्रा पूरी करनी मेरे लिए कितनी सरल सिद्ध हुई, यह आपको ज्ञात ही है।"

"यह धोखा ! यह दगा ! ऐ आकाश !" मैंने आवेश में बरबस हाथ मलते हुए कहा, किन्तु वह कहने लगी—

"खैर, विश्वास रखिये, मैं आपका साथ अवश्य छोड़ देती, यदि प्रिय ने साथ दिया होता तो किन्तु सुनो, यह क्या आवाज़ थी ?" वास्तव में बन्द दरवाज़े के बाहर कुछ आहट हो रही थी। उसे सुनकर वह दबे पांव दरवाज़े के पास गई और उसे धीरे से खोलकर इधर-उधर देखा। इसके बाद हंसते हुए वापस आकर कहने लगी—"प्यारे पार्टनर ! इतने गुम-सुम क्यों हो। खाना ठण्डा हुआ जा रहा है।" सुनकर मैं सम्भल गया। तभी होटल के दो नौकर खाना परसने

"सुनो !" हैलियन फुसफुसाई—"मैं वल्ला के स्टेशन पर ही तु
से अलग होना चाहती थी, परन्तु उस पत्र ने जो उस स्थान पर मिल
था, इस इरादे को बदलने के लिए मुझे विवश कर दिया । इसके बा
तुमने मुझे अपने साथ यहाँ लाना स्वीकार किया । जिसके लिए
आपको धन्यवाद देती हूँ ।···और अब इस पत्र ने सिद्ध कर दिया
कि हम यहाँ पर भी सुरक्षित नहीं हैं । इस होटल के अन्दर औ
बाहर असंख्य जासूस हमारे पीछे लगे हुए हैं । परन्तु हे मेरे भगवान्
तुम कैसे पुरुष हो कि इतने ही में सहमे जा रहे हो । कोई घबराहट
का शब्द तुम्हारे मुख से न निकल आए, इसलिए लो सिग्रेट, अपने
होठों से लगा लो ।"

मूर्खों की भाँति मैंने सिगरेट का सिरा उसके हाथ से लेकर अपने
मुंह में लगा लिया ।

"ठहरो ! मैं इसे सुलगा देती हूँ ।" उसने दियासलाई जलाकर
सिगरेट सुलगाते हुए कहा—"तुम्हारे हाथ बहुत अधिक काँप रहे हैं ।
इस समय यदि मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊंगी तो वह सन्देह जो
तुम्हारे विरुद्ध पैदा हो चुका है और भी दृढ़ हो जाएगा ।"

"किन्तु क्यों······किस लिए ? क्या हम स्वतन्त्र देश अमेरिका
के निवासी नहीं हैं ?" मैंने पूछा ।

"तुम हो, मैं नहीं हूँ ।" उसने कहा—"वैसे मैं तुम्हारी बोली बो

है । दूसरी सूरत में हम दोनों के सामने संकट आ सकता है, बल्कि मु
से अधिक आपपर संकट आ सकता है । गिरफ्तारी और दंड के माम
में वैसे हम बराबर हैं, किन्तु आपके लिए बदनामी और भी भयान
है । सोचिये तो, जब यह खबर आपकी बेटी और पत्नी के कानों त
पहुंचेगी तो वे क्या कहेंगी । इसलिए यदि आपको अपने लिए नहीं, त
अपने सम्बन्धियों को अपमान से बचने के लिए खामोशी और समझ
दारी से काम लेना चाहिये । बस यही वह तरीका है जिससे आप अपन
पत्नी से दोबारा मिलने की आशा रख सकते हैं ।"

"तुम अपनी रक्षा की चिन्ता करो, मेरे लिए एक रास्ता और भ
है ।" मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा ।

वह क्या है ?"

"होटल के मैनेजर से कहकर पुलिस को बुलवाना और तुम्हें
उनके हवाले कर देना ।" मैंने उत्तर दिया । वह घृणा से मुंह बिचका-
कर बोली—"वाह, क्या वीर पुरुषों का-सा कर्तव्य है !" मैं नहीं
जानती थी कि अमेरीकन सैनिक अफसरों के सामने वीरता का यही
आदर्श होता है । एक असहाय और निर्बल स्त्री को गिरफ्तार करा-
कर अपमान तथा मृत्यु के हवाले करके अपने प्राण बचाना भी क्या
गौरव की बात होगी ?" फिर दो क्षण सांस लेकर वह बोली—

"पिछले दो दिनों में आपके स्वभाव का जो थोड़ा-सा अन्दाजा
मैंने लगाया है उसके आधार पर मैं कह सकती हूँ कि अन्य अमेरिकनों
की दृष्टि में वीरता का आदर्श चाहे कुछ भी रहा हो, किन्तु कम से
कम आप इतने कायर और भीरु नहीं हैं कि ऐसा नीच कर्म करें।
आपपर मुझे पूरा विश्वास है और मेरा दिल भी कहता है कि आप
एक स्त्री को मानवीय स्वभाव की सर्वश्रेष्ठ वस्तु विश्वास पर अवि-
श्वास करने का अवसर न देंगे ।"

एक हाथ मेरी बांह पर रखे हुए उसने एक बार फिर मेरी ओर
विनम्र दृष्टि से देखा । सम्भवतः वह मेरे धैर्य को डगमगाने का प्रयत्न
कर रही थी । उसके जाल से बचने के लिए मैंने मुंह दूसरी ओर फिरा
लिया । इतना होने पर भी उसके चेहरे पर एक मधुर मुस्कान खेल
रही थी ।

मेरी टाँगें लड़खड़ाने और शरीर कांपने लगा था।

"और जो कहीं अब भी उसके मन में सन्देह उत्पन्न हो गया।" हैलियन ने बढ़ते हुए भय के साथ कहा—'तो हे मेरे भगवान्! फिर क्या होगा।"

अब मैं उसकी बातों का उत्तर दिए बिना न रह सका। हठात् मैं चिल्लाया—"भगवान् उस डक गेन्ज का सत्यानाश करे। न तुम उसका नाम लेतीं और न मैं इस मुसीबत का मुंह देखता।"

उसके होठों पर एक हल्की-सी मुस्कराहट दिखाई दी।

"अपने बचपन के मित्र को गालियाँ न दो।" उसने घृणा के स्वर में कहा—"डक बेचारे का कुछ दोष नहीं है। उसका नाम मैंने केवल इसलिए लिया था कि तुम्हारे हृदय की शंका दूर हो जाए। अन्यथा उस सहमी हुई दशा में, जब तुम जर्मन सीमा में वापस जाने के लिए भाग-दौड़ कर रहे थे, यह रहस्य अवश्य प्रकट हो जाता। तुम्हारे सारे हालात मैंने पैरिस में ही जान लिये थे, किन्तु डक गेन्ज का मुझको नाम ही याद आता था। यही कारण था कि जब तुमने उसकी बहिन मेमी का हाल पूछा तो मैं सन्तोषजनक उत्तर न दे सकी थी। और यही कारण था कि मैं उसकी मूंछों के फैशन से भी अपरिचित थी। इसके बाद तुमने मेरा पारिवारिक नाम जानने के लिए जोर दिया तो मैं बहुत परेशान थी कि तुमको क्या उत्तर दूं। तभी अचानक एस्टर और वान्डर बिल्ट के दो प्रसिद्ध नाम मेरे मस्तिष्क में आ गये और मैंने उनको ही अपने नाम के साथ जोड़कर तुमको बता दिया।"

कुछ समय के लिए वह चुप हो गई। इसके बाद एक ठंडी आह भरकर डबडबाई हुई आँखों से मेरी ओर देखते हुए कहने लगी—

"आर्थर! शायद तुमको मेरी बात पर विश्वास न आये, किन्तु मैं सच कहती हूँ। इस शहर में पहुँच जाने के बाद मैं अवश्य तुमसे अलग हो जाती, यदि उस भयानक व्यक्ति बैरन फ्रेडरिक की भय-भयाती आँखें धुंधले चश्मे के पीछे से मेरी ओर न घूर रही होतीं। उसके वे सन्देह भरे शब्द, कि इस छोटी-सी आयु में तुम एक बच्चे की नानी हो? मेरे कानों में गूंज रहे थे। मैं अच्छी तरह जानती थी कि यदि मैं उसके सामने रेल के स्टेशन पर तुम से अलग हो गई तो

के तीर बरसाती हुई हल्की-सी चीख मारकर अपने कमरे में घुस गई और दरवाज़ा बन्द कर लिया।

उसका मन्द हास्य मुझे बन्द दरवाज़े के उस पार से सुनाई दिया। वह मेरी कामनाओं का सही उत्तर था। थककर मैं वहीं कुर्सी पर बैठ गया। वह बन्द दरवाज़ की ओट में सौ बार भी मुझे देखकर हंसे तो क्या होता है ? रूसी नियमानुसार वह मेरी पत्नी बन चुकी थी और पति-पत्नी की लड़ाई में स्त्री ही हर बार नहीं हंसती।

शैम्पियन की एक गिलास मैं एक ही सांस में पी गया। इसके बाद मैं मेज़ पर बिखरे और बचे हुए भोजन की ओर देखते हुए कल्पना करने लगा—

"यह मेरे विवाह का प्रीतिभोज है। भय से भरा, चिन्ताओं से परिपूर्ण।"

किन्तु शराब के तेज़ नशे ने मेरी इन सब चिन्ताओं को दूर कर दिया। हैलियन अब मेरी थी। यह ठीक था कि भोग-विलास के लिए हमारे पास समय बहुत कम था और हमारी सुखदायक कल्पनाओं पर संकट के बादल छाए थे। तथापि वह एक आनन्ददायी समय था। भले ही भविष्य कैसा भी दुखपूर्ण क्यों न हो।

हो गया। मैं अपने उपकार और उसके छलबल सब भूल गया। समाज के प्रति अपना कर्तव्य और उस स्त्री से अपना सद्व्यवहार, सभी कुछ भूलकर एक बात जो मुझको याद रही, वह थी—उसकी विवशता और रूस की मदान्ध शराबी पुलिस की अंधेरगर्दी।

३

"ठीक है।" मैं घुटी हुई आवाज में बोला—"जब तक मैं रूस में हूँ तुम मेरी पत्नी हो।"

उसके चिन्तित चेहरे पर हर्ष की एक रेखा-सी दौड़ गई।

"तब क्या आपको इस बात का खेद नहीं है कि मैं डक गेन्ज की पत्नी नहीं हूँ।" उसने मतवाली आँखों से मुझे देखते हुए पूछा।

"भगवान का धन्यवाद है कि तुम मेरे किसी मित्र की पत्नी नहीं हो।" मैंने तीव्र उमंगों की प्रबलता से काँपते हुए कहा।

उसी समय दरवाजे पर हल्की-सी आहट हुई। एक क्षण पश्चात ही होटल का मैनेजर रजिस्टर में हस्ताक्षर कराने और पुलिस के दफ्तर में भेजने के लिए हमारा पासपोर्ट लेने आ गया।

मैंने पासपोर्ट उसे दे दिया और रजिस्टर में लिख दिया—

"कर्नल लेनाक्स और श्रीमती लेनाक्स।"

उसके जाने के बाद मैंने दृष्टि उठाकर उस सुन्दरी को देखा जो सन्तुष्ट और शान्त बनी अपने कमरे के दरवाजे के पास खड़ी थी।

उसकी दृष्टि से दो घड़ी पहिले के वे सब छलबल नष्ट हो गये थे जो थोड़ी देर पहिले कर रही थी। उनका स्थान अब भोलेपन ने ले लिया था। मुझे अपनी ओर देखते हुए पाकर वह रूठे हुए बच्चों की भाँति होंठ बिसूरकर कहने लगी—"यह जानने के बाद कि मैं डक गेन्ज की कुछ भी नहीं हूँ, आगे होने वाली कृपायें स्वप्न मात्र ही तो न रह जाएंगी?"

"नहीं," मैंने आवेश में भरकर उसकी ओर जाते हुए कहा—"वह अब पहिले से भी अधिक होंगी।"

किन्तु इससे पहिले कि मैं उसके पास पहुंचता, वह चंचल नयनों

उसने सम्मानपूर्वक मुझसे पूछा।

"हाँ! सब चीजें ले जाओ।" मैंने उत्तर दिया और बरांडी का और गिलास भरकर पी गया।

अभी मैं पूरी तरह संभलने भी न पाया था कि होटल का दूसरा नौकर बोरिस और अलेक्जेन्डर वैलटस्की के कार्ड लेकर अन्दर आ गया। कान्सटनटाइन के वायदे के अनुसार उसके दोनों भतीजे मेरी और श्रीमतीजी की सेवा में अभिवादन के लिए उपस्थित हुए थे।

मैंने वे कार्ड पढ़े। एक पर लिखा था लेफ्टिनेन्ट बोरिस वैलटस्की, इम्पीरियल नेवी और दूसरे पर छपा था—मेजर अलेक्जेन्डर वैल-टस्की, स्वीयर गारद।

"उनको आने दो।" मैंने प्रतीक्षा में खड़े हुए नौकर से कहा। वैसे मैं अपनी वर्तमान स्थित में किसीसे भी मिलने का इच्छुक न था। फिर भी मुझे इन्कार का कोई बहाना नहीं मिल सका।

जब नौकर चला गया तो मैंने हैलियन के कमरे के पास जाकर दरवाजा खटखटाया। कमरे के अन्दर से मुझे उत्तर मिला—"मैं

दूसरा खंड

पहिला परिच्छेद

सुहाग रात

१

मैं सहसा चौंक उठा ।

कोई मेरे कमरे का दरवाज़ा खटखटा रहा था । मेरे मस्तिष्क में बिजली सी दौड़ गई । क्या हमारे जाली पासपोर्टों की खबर तीसरे सैक्शन वालों को हो गई ? क्या बैरन फ्रेडरिक का सन्देह वास्तव में इतना पक्का निकला ? क्या उसी के आदमी दरवाज़े के बाहर खड़े हैं ? मैंने रूसी लेखक टिपनियाक की एक पुस्तक में पढ़ा था कि रूसी पुलिस इस प्रकार की गिरफ्तारियाँ प्रायः रात के समय करती है । फिर क्या आश्चर्य है कि मेरे और हैलियन के गिरफ्तार होने का समय भी आ गया हो या हो सकता है वह लोग...... ।

तभी एक अजीब प्रकार की भयानक झंकार मेरे कानों में पहुँची । मैं बुदबुदाया—"हे मेरे भगवान् ! यह हथकड़ियों की आवाज है क्या ?"

मेरे माथे पर पसीने की बूँदें झलक आईं । भय की एक लहर मेरे सिर से पाँव तक दौड़ गई । मैं लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े के समीप गया और उसे खोल दिया ।

एक बैरा चाँदी का थाल लिये हुए बाहर गैलरी में खड़ा था । वह शायद चमचे से थाल को बजा रहा होगा और उसी से वह आवाज उत्पन्न हुई थी, जिससे मैं डर गया था ।

"यदि आज्ञा हो तो मेज पर से खाने का सामान उठा लूँ ।"

विश्वास की झलक थी। इसके अतिरिक्त उसके हाथ मिलाने में भी हार्दिक उत्साह था; परन्तु उसका भाई हृदय और स्वभाव में उससे उतना ही विपरीत था, जितना कि वह वस्त्रों में और कद में। उसकी काली चमकीली आँखें, सिर के बाल घूमे हुए और मूछें बहुत मोटी पली हुई थीं। उसकी बातचीत का ढंग कुछ ऐसा था जिससे वह बड़ा भयानक दिखाई पड़ता था। औपचारिकता के पश्चात् बोरिस ने विनम्र स्वर में कहा—"शायद हम असमय आए हैं; क्योंकि मैं देखता हूँ कि आप कुछ बेचैन हैं।"

उसकी ये बातें सुनकर मैं संभल गया। उस समय मेरी जरा-सी भी लापरवाही सारे रहस्य का भांडा फोड़ सकती थी।

"श्रीमतीजी भी इस लम्बी यात्रा के कारण अवश्य कुछ थक गई होंगी।" उसने बातचीत का सिलसिला जारी रखते हुए कहा—"फिर भी हम उनके दर्शन किये बिना वापस नहीं जाएंगे।" कहकर वह अपने भाई की ओर मुड़ा और हंसकर कहने लगा—"क्यों साचा?"

साचा! यही वह युवक था जिसकी सगाई डोजिया शहज़ादी से हो चुकी थी। मैंने मुस्कुराते हुए पूछा—"परन्तु ऐसे लम्बे-चौड़े युवक के लिए जैसे तुम हो, यह छोटा-सा शब्द क्यों?"

"ओह! वास्तव मे बात यह है कि स्त्रियाँ इन्हें इसी नाम से पुकारना पसन्द करती हैं।" बोरिस ने कहा।

अलक्जेन्डर हंसने लगा।

"एक बात और भी है।" उसने मेरी ओर देखते हुए कहा, "मित्र मुझे साचा और शत्रु मुझे अलेक्जेन्डर कहते हैं। किन्तु मैं आशा करता हूं कि आप मुझे साचा ही कहेंगे।"

उसी समय हैलियन के कमरे का दरवाजा खुला और उसने बाहर आते हुए उसके अन्तिम शब्द सुन लिये। चंचल दृष्टि से लम्बे-चौ[illegible] युवक की ओर देखकर वह कहने लगी—"मैं भी यही कहूंगी।"

"क्यों नहीं। पहिले आप, पीछे और।" यह कहते हुए अलेक्जेन्डर उठा और दो कदम बढ़कर उसने मेरी बनावटी पत्नी के माथे को इस प्रकार चूमा, जिसे मेरे विचार मे रस्म और रिवाज की सीमा से नहीं

"पर क्या तुम देखते नहीं कि इसके अतिरिक्त शेष चारा ही क्या है।" उसने उत्तर दिया—"क्या मैं यह कहती फिरूं कि मेरा नाम लारा नहीं है ? मैं तो यह कहती हूँ कि तुम भी मुझे लारा कहकर पुकारो तो अच्छा है।"

"यह असम्भव है ! ऐसा कभी नहीं होगा !"

"तो इस सूरत में तुम मुझे 'श्रीमतीजी' कह सकते हो। यदि हैलियन ही कहना हो तो बहाना कर देना कि यह इसका प्यार का नाम है।"

"परन्तु तुम इस मामले की बढ़ती हुई उलझनों की उपेक्षा कर रही हो।" मैंने कहा—"कल एम० वैलटस्की की पत्नी मिलने के लिए आएगी। उसके सामने तो तुम लारा बन सकती हो, किन्तु उसके बाद जब वह तुम्हें अपने मकान पर बुलाएगी और मेरी लड़की के छोटे बच्चे की नानी समझकर तुम्हारा स्वागत करेगी, तो फिर क्या होगा ? मैं ऐसी स्वच्छन्दता की बिल्कुल आज्ञा नहीं दे सकता। मुझे विवश होकर एम० वैलटस्की को पूरा हाल बताना ही पड़ेगा।"

"अरे भाई साचा ! तुम अपने व्यसन मुझपर क्यों लादते
बोरिस ने कहा—"क्लब की तफरीह का शौक तो उल्टा तुम्हें है।
हां, याद आ गया।" उसने जल्दी से मेरी तरफ मुड़कर कहा—'
कान्सटनटाइन ने आपका नाम भी क्लब के रजिस्टर में लिखव
है। इसलिए आशा है कि आपसे क्लब में बार-बार भेंट होगी।

यह कहते हुए उसने मेरा हाथ हिलाया और श्रीमती क
झुकाकर नमस्कार किया। हाथ मिलाना तो खैर उसके भाई
का भी उतना ही आवेशपूर्ण था, परन्तु उसने हैलियन को
करने की बजाय देश की प्रथा की आड़ में एक विदाई-चुम्बन
लिया। मैं समझता हूँ कि वह चुम्बन आवश्यकता से अधिव
और लम्बा था।

मैंने अपने मन में उसे और हैलियन को कोसा तो बहुत,
कह क्या सकता था? देवते और नानी में चाहे वे एक ही आयु
न हों, अनुचित सम्बन्ध की कल्पना करना भी पाप समझा जाता

में याद नहीं करोगे।"

उसकी बातें सुनकर मैं बोझिल-सा बना एक सोफे पर गिर गया। यह दूसरा मौका था जब हैलियन के धैर्य ने मेरे विश्वास को डगमगा दिया था।

वह भी वहीं मेरी बगल में बैठ गई और मेरे हाथ को नम्रता से चूमकर कहने लगी—"आश्चर्य है कि तुम इतने बड़े और समझदार होकर भी साचा से मेरी बातों पर सन्देह करने लगे। तुमने यह नहीं सोचा कि वह ही क्या, मैं प्रत्येक रूसी से घृणा करती हूँ। मैं किसी रूसी से प्रेम करूं, यह असम्भव है······मैं जिसकी मां······।"

सहसा वह कुछ कहते-कहते रुक गई और उसके हाथों की मुट्ठियाँ ज़ोर से कस गईं।

"किन्तु नहीं।" उसने एक क्षण बाद फिर आरम्भ किया—"मैं अपने खानदान की लम्बी-चौड़ी बातें सुनाकर तुम्हारा समय नष्ट करना नहीं चाहती। हाँ, इतना अवश्य है कि मेरे राजनैतिक हालात इस योग्य हैं कि तुम उन्हें जानो। विशेषत: इसलिए कि एक-दूसरे से हम दोनों को मिलाने का कारण वही बने थे। मैं जिस पार्टी से सम्बन्ध रखती हूँ—वह इस देश में नये सिरे से सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है। पहिले हमारे इस कार्यक्रम का सिलसिला यहां के गुप्तचर विभाग के हाथों नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया था और नया सिलसिला बनाए बिना न केवल हमारा उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, प्रत्युत हमारी पार्टी का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। केवल इस चीज़ को सामने रखकर मैंने अपने प्राण हथेली पर रखे और सैकड़ों विपत्तियों का सामना करते हुए तुम्हारी सहायता से मैं इस जगह तक पहुंच सकी हूं। अब भगवान करे कि जिस प्रकार यह यात्रा पूरी हुई है, उसी प्रकार दूसरी भी पूर्ण हो जाए।"

बनाए न रख सकूंगा।" मैंने निर्णयात्मक स्वरों में उत्तर दिया। इस बाद मैंने टोपी ओढ़ ली और ओवरकोट पहिनते हुए दरवाज़े की ओ जाने लगा। हैलियन का रंग पीला पड़ गया।

"कहाँ जाओगे?" उसने निराशापूर्ण स्वर में पूछा।

"अपने मित्र और तुम्हारे शत्रु, वैरन फ्रेडरिक के पास।" मैं चुभते हुए व्यंग्य में उसे उत्तर दिया।

सुनकर हैलियन ने एक लम्बी आह भरी और फिर भर्राई हु आवाज़ में कहने लगी—"बहुत अच्छा! यदि तुम जाना ही चाह हो तो जाओ, मैं तुम्हें नहीं रोक सकती। परन्तु जाने से पहिले मेर अपराध क्षमा करते जाओ। यह ध्यान रखो कि मैं वह अन्तिम स्त्र हूंगी जिससे तुम मिलोगे और तुम वह आखरी पुरुष होगे जिससे मेर आखिरी मिलन होगा।"

मैं ठहर गया। एक प्रकार का भयानक सन्देह मेरे हृदय मे उत्पन्न हो गया था।

"अन्तिम स्त्री······अन्तिम पुरुष······क्षमा करना, मैं तुम्हार मतलब नहीं समझा।"

"वैसे यह काम कुछ इतना कठिन नहीं है। तुम पुलिस से मुख बरी करने जा रहे हो, किन्तु याद रखना कि वापस तुम भी न आ सकोगे। मुझको गिरफ्तार करने से पहले वह तुमको भी सन्देह मे पकड़ लेंगे। इसलिए बिछुड़ने से पहिले क्या एक दूसरे के अपरा क्षमा कर देना हमारा कर्तव्य नहीं है?"

यह कहते हुए वह दो कदम आगे बढ़कर मेरे पास आ गई। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया। अब उसके स्वर में एक विचित्र प्रकार की उदासी-सी उत्पन्न हो गई थी।

"जाओ! भगवान् रक्षा करे।" उसने कहा—"मैं तुमको क्षमा करती हूं, परन्तु तुम भी इस बात का वचन दो कि हर प्रकार के संकट और विपत्तियों को सहन करते हुए उस समय भी जब वे लोग तुम्हारे गले में तौक और पांवों में बेड़ियां पहिनाकर साइबेरिया के वर्फी स्थान या जंगल में ले जा रहे होंगे, तब भी तुम मुझ जैसी स्त्री को जो जान-बूझकर तुम्हारी सारी विपत्तियों का कारण बनी, मुझे क्षमा

में याद नहीं करोगे।"

उसकी बातें सुनकर मैं बोझिल-सा बना एक सोफे पर गिर गया। यह दूसरा मौका था जब हैलियन के धैर्य ने मेरे विश्वास को डगमगा दिया था।

वह भी वहीं मेरी बगल में बैठ गई और मेरे हाथ को नम्रता से चूमकर कहने लगी—"आश्चर्य है कि तुम इतने बड़े और समझदार होकर भी साचा से मेरी बातों पर सन्देह करने लगे। तुमने यह नहीं सोचा कि वह ही क्या, मैं प्रत्येक रूसी से घृणा करती हूँ। मैं किसी रूसी से प्रेम करूं, यह असम्भव है······मैं जिसकी मां······।"

सहसा वह कुछ कहते-कहते रुक गई और उसके हाथों की मुट्ठियाँ जोर से कस गईं।

"किन्तु नहीं।" उसने एक क्षण बाद फिर आरम्भ किया—"मैं अपने खानदान की लम्बी-चौड़ी बातें सुनाकर तुम्हारा समय नष्ट करना नहीं चाहती। हाँ, इतना अवश्य है कि मेरे राजनैतिक हालात इस योग्य हैं कि तुम उन्हें जानो। विशेषत: इसलिए कि एक-दूसरे से हम दोनों को मिलाने का कारण वही बने थे। मैं जिस पार्टी से सम्बन्ध रखती हूँ—वह इस देश में नये सिरे से सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है। पहिले हमारे इस कार्यक्रम का सिलसिला यहां के गुप्तचर विभाग के हाथों नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया था और नया सिलसिला बनाए बिना न केवल हमारा उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, प्रत्युत हमारी पार्टी का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। केवल इस चीज़ को सामने रखकर मैंने अपने प्राण हथेली पर रखे और सैकड़ों विपत्तियों का सामना करते हुए तुम्हारी सहायता से मैं इस जगह तक पहुंच सकी हूं। अब भगवान करे कि जिस प्रकार यह यात्रा पूरी हुई है, उसी प्रकार दूसरी भी पूर्ण हो जाए।"

"परन्तु मैं तो तुम्हारी पार्टी से कोई सम्बन्ध नहीं रखता था।" मैंने आपत्ति प्रकट की—"फिर मुझे व्यर्थ में इस झंझट में क्यों घसीटा गया?"

नहीं हो सकती थी।"

"तुम बड़ी विचित्र पत्नी हो कि अपने पति से बचने के लिए बन्द दरवाजों में छिपती हो।" मैंने इस बात-चीत को जान-बूझकर अपनी ओर घुमाते हुए कहा।

मेरी बात पर वह मुसकराने लगी। किन्तु इस मुसकराहट में न तो सौन्दर्य था और न ही मधुरता।

"यह तुम्हारा दूसरा एहसान है जो तुम मुझपर करते हो।" उसने कहा—"तुम्हारी उदारता और सज्जनता देखकर मुझे पूरी आशा है कि मेरे इस बनावटी सम्बन्ध से तुम अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न न करोगे।"

"क्या खूब।" मैंने झुंझलाकर उत्तर दिया—"तुम्हारे लिये मैंने झूठ बोला, पाप किया और भयानक अपराध का अपराधी बना, किन्तु तुम मेरे लिए इतना सा......काम भी नहीं कर सकती हो।"

"तो क्या आप अपने एहसान के बदले मेरी इज्जत लेना चाहते हैं ?" उसने रौब के साथ प्रश्न किया।

"मैं केवल वही अधिकार चाहता हूं जो अधिकार एक पति को पत्नी पर समाज और कानून दोनों की ओर से प्राप्त होता है।"

अभी तक वह मुझे क्रोध से देख रही थी, किन्तु तत्काल ही वह भीगी बिल्ली के समान बन गई। फिर वह धीरे-धीरे कुछ सोचते हुए कहने लगी—

"अपना जीवन मैं अपने देश को अर्पण कर चुकी हूं और यदि आवश्यकता हुई तो अपनी इज्जत और आबरू भी उसपर कुर्बान कर दूंगी। किन्तु तुमसे जो इतना उदार, कृपालु और ऊंचे विचारों का व्यक्ति है, मैं यह पूछना चाहती हूं कि एक असहाय, निर्बल और विपत्तियों से घिरी हुई स्त्री को पतन के लिए मजबूर करना क्या वीर पुरुषों का काम है ? यदि है तो बहुत अच्छा। जो मन में आये करो। मेरा विरोध करना व्यर्थ है। मेरा जीवन, मेरी लाज, मेरा सतीत्व सब तुम्हारे हाथ में है। तुम यदि दयालु हो तो दया करो और कायर हो तो मौके से लाभ उठा लो। परन्तु याद रखो कि निर्बल की निर्बलता से लाभ उठाना पुरुषत्व नहीं, कायरता का चिह्न है।"

इतना कहकर उसने मेरा हाथ छोड़ दिया और एक बार मेरी ओर देखा। इसके बाद गर्वीली मुद्रा में वह अपने कमरे की ओर चली गई। इस बार उसने अपना दरवाजा भी खुला छोड़ दिया था।

मैं उठकर खड़ा हो गया। मेरे हृदय में पाप और पुण्य का संघर्ष छिड़ा हुआ था।

आखिरकार मैंने बाहर का दरवाज़ा खोल दिया। मेरे पीछे से आवाज आई—"कहाँ जा रहे हो?"

बाहर जाता हूँ।"

"बैरन फ्रेडरिक के पास?"

"नहीं, पिकेट क्लब में।"

उसकी आवाज़ फिर आई—"भगवान तुम्हारा भला करे। सपूत अमेरीकन ऐसे ही होने चाहियें।"

३

मैं लड़खड़ाता हुआ होटल की ड्योढी में जा पहुंचा।

अधिक रात बीत जाने के कारण चारों ओर घोर निस्तब्धता छाई हुई थी। गैस के प्रकाश में ऊंघते हुए दरबान और होटल के मुंशी के अतिरिक्त वहां और कोई दिखलाई नहीं देता था।

तीन घंटे पहिले जब मैं इसी रास्ते से होकर अन्दर आया था, तब भी मैं काफी परेशान था। किन्तु इतना नहीं जितना कि इस समय था। अब मेरी दशा अत्यन्त खराब थी।

अपने चारों ओर मुझे खुफिया पुलिस का भ्रम हो रहा था। तनिक-सी आहट भी मुझे उसके अफसरों के दबे पांव चलने का धोखा देती थी और मैं एक भयानक राजनैतिक अपराधी, शायद किसी नहलिस्ट पार्टी का नेता, डरता-सा, सहमा हुआ-सा, थर-थर काँपता धीरे-धीरे कदम उठाता जा रहा था।

होटल का मुंशी कुर्सी की पीठ पर झुका हुआ बैठा था। मुझे देखकर वह सीधा होकर बैठ गया।

"कहिये क्या आज्ञा है?" उसने मुझे घबराया हुआ देखकर

पूछा—"कोई सामान खो गया है क्या ?"

उसका स्वर निःसंदेह सहानुभूतिपूर्ण था, किन्तु दूध का जला हुआ छाछ को भी फूंक-फूंककर पीता है। मुझे सन्देह हुआ कि कहीं उसने यह प्रश्न जान-बूझकर मुझे बनाने के लिए ही न पूछा हो। क्या मालूम यह भी रूस की खुफ़िया पुलिस का ही कोई कर्मचारी हो। क्योंकि रूसी उपन्यासों में पढ़ चुका था कि तीसरे सेक्शन के आदमी होटलों और सरायों में जगह-जगह पर फैले हुए हैं।

"न······नहीं तो !" मैंने घबराकर उत्तर दिया—"मैं जरा पिकेट क्लब जाऊंगा, कृपया उसका पता बता दीजिये।"

पिकेट क्लब की चर्चा ने मेरी इज्जत दुगनी कर दी। बड़े-बड़े गिने-चुने व्यक्ति ही पिकेट क्लब के सदस्य थे। प्रत्येक व्यक्ति उस जगह नहीं पहुंच सकता था।

अतः मुंशी ने एक आदमी मेरे साथ कर दिया। फाटक के दोनों ओर खड़े दरबानों ने झुककर अभिवादन किया। जब मैं और मेरा पथ-प्रदर्शक सीढ़ियों से उतरे, तो उन दोनों दरबानों ने किसी भाषा में एक दूसरे से कुछ कहा भी, जिसका मतलब तो मैं नहीं समझ सका, किन्तु इस विचार से कि कहीं वे भी खुफ़िया पुलिस के आदमी न हों, मैं घबरा अवश्य गया। वास्तव में शक्की मनुष्य बहुत ही कायर होता है। उसको हर बात में खतरा ही खतरा दिखाई देता है।

ड्योढ़ी से निकलकर मेरे साथी ने एक गाड़ी किराये पर ली और अपनी बोली में गाड़ीवान से कुछ कहा। गाड़ीवान ने घोड़ों को चाबुक लगाया। गाड़ी चल पड़ी और न्यूस्की बाजार के विशाल भवनों की छाया में मेरे हृदय को कुछ सांत्वना मिली। थोड़ी देर बाद मेरी गाड़ी ग्रेन्ड मोरिस काया में पहुंचकर पिकेट क्लब के सामने जाकर रुकी, तो मुझे पूर्ण सन्तोष हुआ।

एम० बैलटस्की की कृपा से मुझे क्लब के अन्दर प्रवेश करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। शीघ्र ही मुझे एक विशाल और सुसज्जित उस कमरे में पहुंचा दिया जहां सारे योरुप और सम्भवतः सारे संसार भर से अधिक मोटी रकमों का जुआ खेला जाता है। अब तक मैं सम-

पूछा—"कोई सामान खो गया है क्या ?"

उसका स्वर निःसंदेह सहानुभूतिपूर्ण था, किन्तु दूध का जला हुआ छाछ को भी फूंक-फूंककर पीता है। मुझे सन्देह हुआ कि कहीं उसने यह प्रश्न जान-बूझकर मुझे बनाने के लिए ही न पूछा हो। क्या मालूम यह भी रूस की खुफ़िया पुलिस का ही कोई कर्मचारी हो। क्योंकि रूसी उपन्यासों में पढ़ चुका था कि तीसरे सेक्शन के आदमी होटलों और सरायों में जगह-जगह पर फैले हुए हैं।

"न······नहीं तो !" मैंने घबराकर उत्तर दिया—"मैं ज़रा पिकेट क्लब जाऊंगा, कृपया उसका पता बता दीजिये।"

पिकेट क्लब की चर्चा ने मेरी इज्जत दुगनी कर दी। बड़े-बड़े गिने-चुने व्यक्ति ही पिकेट क्लब के सदस्य थे। प्रत्येक व्यक्ति उस जगह नहीं पहुंच सकता था।

अतः मुंशी ने एक आदमी मेरे साथ कर दिया। फाटक के दोनों ओर खड़े दरबानों ने झुककर अभिवादन किया। जब मैं और मेरा पथ-प्रदर्शक सीढ़ियों से उतरे, तो उन दोनों दरबानों ने किसी भाषा में एक दूसरे से कुछ कहा भी, जिसका मतलब तो मैं नहीं समझ सका, किन्तु इस विचार से कि कहीं वे भी खुफ़िया पुलिस के आदमी न हों, मैं घबरा अवश्य गया। वास्तव में शक्की मनुष्य बहुत ही कायर होता है। उसको हर बात में खतरा ही खतरा दिखलाई देता है।

ड्योढ़ी से निकलकर मेरे साथी ने एक गाड़ी किराये पर ली और अपनी बोली में गाड़ीवान से कुछ कहा। गाड़ीवान ने घोड़ों को चाबुक लगाया। गाड़ी चल पड़ी और न्यूस्की बाजार के विशाल भवनों की छाया में मेरे हृदय को कुछ सांत्वना मिली। थोड़ी देर बाद मेरी गाड़ी ग्रेन्ड मोरिस काया में पहुंचकर पिकेट क्लब के सामने जाकर रुकी, तो मुझे पूर्ण सन्तोष हुआ।

एम० वैल्टस्की की कृपा से मुझे क्लब के अन्दर प्रवेश करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। शीघ्र ही मुझे एक विशाल और सुसज्जित उस कमरे में पहुंचा दिया जहां सारे योरप और सम्भवतः सारे संसार भर से अधिक मोटी रकमों का जुआ खेला जाता है। अब तक मैं सम-

भता था कि अमेरिका के निवासी ही सबसे बड़े जुआरी हैं, किन्तु यहाँ मालूम हुआ कि तातारी जाति जुए में अमेरिकन और हिन्दोस्तानियों की भी उस्ताद है। वे लोग अपने घोड़े, कम्बल, बन्दूक, पत्नी और बच्चों तक को दाँव पर लगा देते हैं।

वहां बहुत से अफ़सर सुन्दर वर्दियां और ऐसे तमगे लटकाए जिनको उन्होंने दो या दो से अधिक युद्धों में भाग लेने पर प्राप्त किया था, जुआ खेल रहे थे। जुए में उन तमगों को भी दाव पर लगा रहे थे।

एक तरफ़ बोरिस कुछ मित्रों सहित बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था। मुझे देखकर वह बेताबी से उठा और मेरे पास आकर निस्संकोच भाव से कहने लगा—

"आप आ गये, अच्छा हुआ। मैं इस छोटी-सी सभा की ओर से आपका स्वागत करता हूँ। साचा अपने खेल में तल्लीन है।" यह कहते हुए उसने उस मेज़ की ओर संकेत किया जिसके पास बैठा उसका छोटा भाई अन्धाधुन्ध ताश की बाज़ियाँ हार रहा था। बोरिस फिर बोला—"लीजिए मैं आपका परिचय सब मित्रों से करा दूं। वैसे आपकी ख्याति पत्नी के कारण पहिले ही फैल चुकी है।"

एक-एक करके उसने मेरा परिचय सभी महानुभावों से कराया, जिनमें से प्रत्येक ने मुझसे मिलकर प्रसन्नता प्रकट करने के साथ-साथ कहा—"श्रीमतीजी को साथ लाकर अपने पैरिस को सुनसान और सैंट पीटर्ज़बर्ग को आबाद कर दिया है।"

इसके पश्चात् वहां मूल्यवान सिगारों और बर्फ में लगी हुई शैम्पियन का दौर चलने लगा। मैंने सिगारों को पीकर और अधिक से अधिक पैग चढ़ाकर अपने दुख-दर्द और चिन्ताओं को भुला देने का प्रयत्न किया। इसके बाद क्लब के सदस्यों में चलते जुए में भाग लेते हुए कुछ रूबल (रूसी सिक्के) मेज़ पर रखे। मुझे आशा के प्रतिकूल इतनी सफलता प्राप्त हुई कि कई दिनों तक को फिज़ूल खर्ची करने के लिए काफी रुपया मुझे मिल गया।

मेज़ के दूसरे सिरे पर बैठा हुआ साचा बहुत कुछ धन हार चुका था। मेरी सफलता देखकर ईर्ष्यापूर्ण स्वरों में कहने लगा—

"कर्नल साहब, इधर मेरे पास आकर बैठिये। शायद आपके सौभाग्य का कुछ असर मुझपर भी पड़ जाए।" फिर एक क्षण पश्चात स्वयं ही वह बोला—"नहीं, मेरे लिए शिकायत का कारण क्यों हो ? एक कहावत प्रसिद्ध है कि हारा जुआरी ही प्रेम की बाज़ी जीतता है।"

"बस तो तुम्हारी प्रेम सफलताओं का यही कारण समझना चाहिये।" उपस्थित व्यक्तियों में से एक ने कहा—"भाई साचा ! मेरी मानो तो भविष्य में ताश को हाथ में लेना ही छोड़ दो। कहीं ऐसा न हो कि जुए की जीत प्रेम की हार सिद्ध हो।"

"आप सच कहते हैं।" साचा बोला और इसके साथ ही गाली देकर उसने ताश के पत्ते मेज पर फेंक दिये।

"सुनो भाई !" बोरिस ने उसको समझाते हुए कहा—"जुआ खेलना अमीरों के लिए मनोरंजन और गिरे व्यक्तियों के लिए नफे का काम है। तुम्हें चाहिए कि इस खेल में हमेशा समान भाव से काम लो। वरना यदि इसकी खबर ज़ार के कानों तक पहुंच गई तो···"

"ओह ! बड़े भाई, तुम कैसी भोली बातें करते हो।" साचा ने

बोरिस ने जब यह दशा देखी तो घृणा से मुंह फेर लिया। चूंकि मैं वापस जाने के लिए आग्रह कर रहा था, इसलिए वह कहने लगा—"साचा को तो जब देखो प्रेम और ताश की चिन्ता लगी रहती है, चलिये मैं ही आपको होटल तक छोड़ आता हूँ।"

जब हम दोनों क्लब की सीढ़ियों से उतरे तो पूर्व दिशा में आकाश पर सवेरे की सफेदी धीरे-धीरे प्रकट हो रही थी। हम पैदल ही होटल की ओर चल दिये। रास्ते में बोरिस की बातचीत अधिकांश अपने भाई के विषय में ही थी।

"बड़ा ही भावुक लड़का है।" उसने बताया—"परन्तु आशा है कि विवाह के बाद सुधर जाएगा। गाड़ी में आपकी भेंट डोजिया पाल्टज़न यानी शहज़ादी डोजिया से हुई होगी। वह उसकी भावी पत्नी है। आपने देखा कि कैसी सुन्दर और प्यारी लड़की है, परन्तु साचा उससे भी असन्तुष्ट है। मैं नहीं जानता क्यों? परन्तु सुन्दर और युवा स्त्रियां उसपर खूब रीझती हैं।"

ये शब्द शायद उसने मुझे सावधान करने के लिए कहे थे। होटल में साचा और हैलियन के रहस्यपूर्ण वार्तालाप को वह भली प्रकार देख चुका था। अतः मैंने उसकी बात का बुरा नहीं माना।

बातों के दौरान यह भी पता चला कि काउन्टेस अगनातीफ के यहाँ नाच का कार्यक्रम है और दरबार के प्रायः सभी बड़े-बड़े व्यक्ति उसमें सम्मिलित होंगे।

"मेरे खयाल में—" उसने कहा—"आपके लिए इस उत्सव में सम्मिलित होना मुश्किल न होगा। क्योंकि काउन्टेस ऐसे उत्सवों में सुन्दर और युवा स्त्रियों को अवश्य निमन्त्रित करती हैं।"

सहसा हमारे वार्तालाप का सिलसिला रुक गया। हमने देखा कि छः-सात व्यक्ति जो बिना वर्दी के सिपाही मालूम होते थे, एक गली से निकलकर एक और छोटे कूचे में घुस गये।

चौराहे पर पहुँचकर हमने देखा कि वे लोग एक मकान के आगे घेरा डाले खड़े हैं। इतने में उस मकान का दरवाज़ा खुला और वे सब लोग अन्दर चले गये। मकान के अन्दर के हिस्से में घूमने-फिरने की कुछ विचित्र प्रकार की आवाजें आती हुई सुनाई दीं। फिर सहसा

... की चीख मेरे कानों में पहुंची, और इसके बाद गहरा स
छा गया।

"शायद कहीं आग लग गई है?" मैंने बोरिस से कहा। मैं
यता करने के विचार से उस ओर दौड़ना चाहता ही था कि
मुझे रोक लिया।

"मत जाओ।" वह दबी आवाज़ में बोला—"झगड़ा पुलि
सम्बन्धित है, हमारे वहाँ जाने की आवश्यकता नहीं।"

"परन्तु यह तो कुछ और ही दिखाई पड़ता है।" मैंने गली
नुक्कड़ पर आकर ठहरी बंदगाड़ी को देखते हुए कहा—"शायद वि
ने किसीको कत्ल कर दिया......।"

देखते ही देखते वे आदमी एक स्त्री और दो पुरुषों की मुश्कें
हुए बाहर आये और उन्हें बेबस मुर्गों की भाँति गाड़ी में धकेल दि

"आइये चलें।" बोरिस ने मेरा हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा
"यदि यह घटना कत्ल की है तो कल दैनिक पत्रिकाओं में प्रका
हो जाएगी, और यदि जैसा मेरा अपना विचार है...तो?" कह
वह चुप हो गया।

"अजीब ठण्डा देश है।" मैंने विस्मय से कहा—"ऐसी घटना य
मेरिका में हो जाए तो दो दर्जन रिपोर्टर मौके पर आ जाएं अ
निक पत्रिकाओं में उसका पूर्ण विवरण और चार कालमों में हेडि
देकर प्रकाशित करें।"

"खैर, अमेरिका की बात अमेरिका में छोड़िये। अमेरिकन पत्रिका
और अमेरिकन संवाददाता इस देश में एक दिन भी जीवित नहीं र
सकते।"

ये अन्तिम शब्द उसने कुछ इस ढंग से कहे कि उस घटना को
उनसे विस्तारपूर्वक सुनने का तकाजा न रख सका। इसलिए शे
रास्ता ख़ामोशी से पूरा हो गया।

होटल के दरवाज़े पर उन्होंने मुझे विदाई दी और चले गये।

जब मैं अपनी बैठक में पहुंचा तो प्रत्येक वस्तु यथा-स्थान रखी हुई थी। गैस के लैम्पों का प्रकाश मद्धम था। हैलियन के कमरे का दरवाजा भी खुला हुआ था। एक बार तो मेरे जी में आया कि मैं सीधा अपने कमरे में ही जाकर सो रहूं–किन्तु फिर कुछ सोचकर मैं उसे निद्रामग्न दशा में देखने के लिए खुले दरवाज़े से घुस गया।

किन्तु आश्चर्य ! उसका कमरा खाली था। उसका बिस्तर बिछा हुआ था, किन्तु न उसपर शिकन थी न सलवट। ऐसा लगता था जैसे वह उसपर सोई भी नहीं थी।

"हे मेरे भगवान् ! हैलियन को तो मालूम करूं कहाँ गई।" मैं बुदबुदाया।

मैंने उसे ट्रन्कों के पीछे, सोफे की ओट में, पलंग के नीचे, हर जगह तलाश किया, किन्तु उसका चिह्न तक दिखाई न दिया।

उसकी सब चीज़ें और पहनने के आभूषण तक सब डिब्बों में सुरक्षित थे परन्तु हैलियन···वह कहीं दिखाई नहीं देती थी।

वह कहाँ गई ? किधर गायब हो गई ? क्या मेरी अनुपस्थिति में रहस्य प्रकट हो गया है ? क्या पुलिस उसे गिरफ्तार करके ले गई है ? सारी बातों ने मेरे हृदय में तूफान पैदा कर दिए।

मैं इस समय अपने लिए नहीं उसके लिए डर रहा था। वे सब खतरे जिनमें उसने मुझे डाला था, सब मेरे मस्तिष्क से एकदम निकल गये थे। केवल दो बातें मेरे हृदय को कष्ट पहुंचा रही थीं। एक तो यह कि वह कहीं विपत्तिग्रस्त न हो गई हो, और दूसरे···यह कि वह किसी दूसरे के पास न चली गई हो।

थोड़ी देर बाद मुझे ध्यान आया कि अब क्या करना चाहिए ? क्या होटल वालों को खबर कर दूं ? किन्तु नहीं, इससे और भी अधिक झगड़ा बढ़ने की सम्भावना थी ? इसके साथ ही सम्पूर्ण रहस्य प्रकट हो जाने का भय भी था। इसलिए उचित यही था कि चुप रहूं और यह प्रकट करूं कि मुझे उसके गायब हो जाने का ज्ञान तक नहीं है।

यह निश्चय करके मैंने कपड़े उतारे और सलीपर पहिनकर अपने

"इस धींगा-धींगी का हाल तो मैं बाद मैं पूछूंगी। परन्तु बताओ कि इस प्रकार सोते हुए चीखने-चिल्लाने और शोर मचाने क्या मतलब था ?"

"ओह ! तुम मेरे भयानक स्वप्नों का हाल पूछती हो। देखा कि रूसी पुलिस मुझको गिरफ्तार करके ले गई है और मैं तुम खातिर कोड़े पर कोड़े खा रहा हूं।"

ये शब्द मैंने कुछ ऐसे हास्यास्पद ढंग से कहे कि वह हंसने ल वह इतना हंसी कि उसके पेट में बल पड़ गये। उसकी इस हरकत मुझे क्रोध तो आया, किन्तु मैं चुप रहा।

आखिर जब उसकी हंसी कम हुई तो कहने लगी—

"खैर, घबराने की कोई बात नहीं है। तुमने सुना ही होगा स्वप्न का प्रभाव उल्टा हुआ करता है।" इसके बाद वह गम्भी से कहने लगी—"अच्छा बैठो ! हम नाश्ता करते हुए सोचेंगे कि दशा में हमें क्या करना चाहिये।"

मैं उसकी बगल में बैठ गया। और जब वह प्याली में चाय रही थी तो मैंने पूछा—"यह बताओ कि रात को तुम कहां गई थीं

"खेद है कि मैं इसका उत्तर नहीं दे सकती ?" उसने कहा "और इसी में भलाई भी है कि मैं जो काम कर रही हूं, उसका विव जानकर तुम को लाभ तो कुछ नहीं होगा। हाँ, उससे तुम्हारी शानियाँ अवश्य बढ़ जाएंगी। इतना मैं अवश्य कह सकती हूं कि काम रात-रात में ही बहुत कुछ हो चुका है। होटल वालों को भी बारे में किसी प्रकार का सन्देह नहीं हुआ, वे ये समझते हैं कि मैं

लाकर दिखाई।

"यह क्या ?"

"ये उन प्रीतिभोजों के पत्र हैं जो सोसाइटी की ओर से आ रहे हैं। अब मैं सोचती हूं कि इनको स्वीकार करूं या न करूं ?"

उसने वे पत्र मेरे आगे डाल दिये। कई ऊंचे घरानों के पत्र उनमें सम्मिलित थे। मैंने देखा कि एक पत्र काउन्टैस अगनातीफ का भी था।

"अब मैं यदि इन प्रीतिभोजों को स्वीकार करूं तो मुश्किल, और न करूं तो और भी मुश्किल। इसलिए कि पहली दशा सन्देहजनक है और दूसरी दशा रहस्य के प्रकट होने में सहायता देने वाली है। बताओ, तुम क्या सलाह देते हो ?"

"पहले यह बताओ कि तुम इस देश में कब तक रहना चाहती हो ?"

"जब तक मेरा काम पूरा न हो जाए।"

"अन्दाज़े से ?"

"अधिक से अधिक तीन दिन। वैसे जिस गति से मैंने काम आरम्भ किया है, उससे तो काम आज तीसरे पहर तक समाप्त हो जाना चाहिए।"

"उस काम को समाप्त करते ही क्या तुम बिना किसी अड़चन के यहां से विदा हो जाओगी ?"

"हां! उसके बाद मैं तुरन्त चली जाऊंगी। किन्तु तुम मेरे वापस लौटने का प्रबन्ध कर सकोगे क्या ?"

"कर सकने का क्या मतलब, करना ही पड़ेगा।"

"ठीक है, किन्तु याद रखो चूहे का पिंजरे में घुस जाना तो आसान है परन्तु बाहर निकलना कठिन होता है ?"

"मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा, "प्रयत्न यह करना चाहिये कि किसी को भी हम दोनों पर किसी प्रकार का सन्देह न हो। इसमें पहली सावधानी यह रखनी है कि मैं पैरिस में अपनी पत्नी को एक पत्र लिखकर उसे पत्र या तार भेजने से मना कर दूं। सम्भव है कि यह रहस्य उसके द्वारा ही प्रकट हो जाए।"

"हां, निस्संदेह ऐसा करना आवश्यक है।"

"फिर सावधानी के विचार से"—मैंने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा—"मैं अपना पत्र अमरीकी राजदूत के पत्रों के साथ उसी के थैले में बंद करके भेजूंगा। ताकि ऐसा न हो कि कोई उसे रास्ते में खोल ले। इसके अतिरिक्त पत्र को दोहरे लिफाफे में बन्द कर के बाहर वाले पर अपने पैरिसी साहूकार का पता लिख दूंगा क्यों?"

"बस, यह ढंग सुरक्षित है। किन्तु मेरी बेटी···"

"आह! मेरी बेटी मारग्रेट।" मैंने दूसरे शब्द पर जोर देकर कहा—"बड़ी कठिनाई तो उसके यहाँ आ जाने पर होगी। वह तीन दिन के अन्दर-अन्दर इस जगह पर आ जाएगी।"

"इसलिए ऐसा प्रवन्ध करो कि वह न आए।"

"परन्तु मैं क्या प्रवन्ध करूं? क्या कोई पिता अपनी बेटी को अपने पास आने से मना कर सकता है?"

"खैर, कुछ भी हो, यह काम तो करना ही पड़ेगा। तुम उसे तार दे दो कि मैं इस समय काम में व्यस्त हूं और कुछ दिनों के लिए शायद बाहर जाने पर विवश हो जाऊं। इसके बाद वापस आकर तुम्हें ले जाऊंगा। रह गई सोसाइटी? तो तुम श्रीमती वैलटस्की से न मिलना, या उसे टालने का प्रयत्न करना।"

"ठीक है, जैसे जी चाहे करो।···मैंने विवश होकर कहा—"मैं तो चूहे के पिंजरे में आ चुका। अब तो भगवान ही बाहर निकाल सकता है।"

इसके पश्चात विवश होकर मैंने उसे अपनी बेटी मारग्रेट के सारे-हालात बतला दिये। मेरी पत्नी और मारग्रेट की मां का अभिनय करते हुए उसे प्रत्येक बात जान लेना आवश्यक था।

"मुसीबत तो यह है।" मैं इन सब उपदेशों की समाप्ति पर बोला, "स्त्री अपने स्वभाव के अनुसार ज़रा-सी देर भी बिना बोले नहीं रह सकती, और यही उसकी बुद्धिहीनता का प्रमाण है।"

वह तीखी नज़रों से मुझे देखकर मुस्कराने लगी। इसके बाद बोली—"अच्छा मेरे बुद्धिमान पतिदेव! मैं तुम्हारे बताए हुए उपदेशों पर चलूंगी···किन्तु एक बात और है।" वह सहसा कहने लगी, "धृष्टता क्षमा हो तो कहूं।"

"हाँ-हाँ, अवश्य कहो।"

"तुम अपनी बेटी से मिलने और उसकी जायदाद का प्रबन्ध करने आये थे, यदि यह काम किये बिना ही वापस चले गये तो फिर भी लोगों को सन्देह होगा।"

"नहीं, मैं यह मौका आने ही नहीं दूंगा।" मैंने उत्तर दिया। "कानूनी बातों को मैं आज ही तय करता हूँ। रह गया मिलना, सो उसका प्रबन्ध भी जिस प्रकार होगा कर लिया जाएगा।"

२

इसके बाद मेरे हृदय का बोझ कुछ हल्का हो गया। हम दोनों इकट्ठे ही होटल से विदा हुए और लम्बे-चौड़े बाज़ार न्यूस्की में पहुंच गये।

चौराहे पर किराये की बहुत-सी बन्द गाड़ियाँ खड़ी थीं। हैलियन ने इशारे से एक को बुलाया और गाड़ीवान से रूसी भाषा में कुछ कहा। उत्तर में गाड़ीवान ने सिर के इशारे से हाँ कहा। हैलियन मेरी ओर मुड़कर कहने लगी—

"रास्ते का प्रबन्ध मुझपर रहने दो। मैं सारी बातें गाड़ी में बैठकर समझा दूंगी। यह आदमी कुछ विश्वासी दिखाई देता है और शहर की हर जगह से परिचित भी जान पड़ता है।"

हम बैठ गये तो गाड़ी चलने लगी। मुझे मालूम हुआ कि गाड़ी पहिले अमेरीकन राजदूत के दफ्तर में जाएगी। दूतावास में पहुँचकर मैंने अपना कार्ड अन्दर भेजा। शीघ्र ही चपरासी मुझे उपराजदूत के पास ले गया।

मेरे पूछने पर मुझे पता चला कि मेरे नाम पैरिस से एक पत्र आया हुआ है। मैंने धड़कते हुए हृदय से वह पत्र लेकर बिना खोले जेब में रख लिया। इसके बाद मैं दूतावास के उच्चाधिकारी के पास गया और उसको अपना कार्ड दिखाया।

"मेरे योग्य कोई सेवा हो तो कहिये?" उस अधिकारी ने कहा।

"मैं केवल यह चाहता हूँ कि मेरी कुछ चिट्ठियां दूतावास की डाक

के साथ सरकारी थैलों में बन्द करके पैरिस भेज दी जाएं।"

"खेद है, मैं ऐसा करने में असमर्थ हूँ।" अधिकारी ने कहा—"बात यह है कि पिछले दिनों कुछ छोटे देशों के राजदूतों ने भारी रिश्वत लेकर नहलिस्टों के अनुचित पत्र सरकारी डाक के थैलों में बन्द कर दिये थे। उसी समय से यह घोषणा कर दी गई है कि सब थैले गुप्तचर विभाग के किसी उत्तरदायी अफसर के सामने बन्द किये जाएं। हमारी ओर से यह प्रतिबन्ध लगाया गया है कि किसीका कोई भी व्यक्तिगत पत्र सरकारी डाक में सम्मिलित न किया जाए। अधिक से अधिक मैं इतना कर सकता हूँ कि बाहर से आये हुए आपके पत्रों को सावधानी से रख लिया करूं। इससे अधिक कुछ भी करने के लिए मैं विवश हूँ।"

मैं इस बात को मान गया। मेरी प्रार्थना पर उन्होंने एक सिफारिशी पत्र भी एक प्रसिद्ध वकील के नाम मुझे लिखकर दे दिया।

उनको धन्यवाद देकर जब मैं बाहर निकला तो हैलियन गाड़ी में बैठी हुई मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे देखकर कहने लगी—

"क्या हुआ, इतने उदास क्यों हो?"

मैंने डाक के बारे में सारी कठिनाइयां उसको कह सुनाईं।

"अच्छा, चिन्ता न करो।" वह सन्तोषजनक स्वर में कहने लगी—"मैं सब प्रबन्ध कर दूंगी।" इसके बाद उसने गाड़ीवान को तार-घर चलने को कहा।

तार-घर पहुँचकर मैंने अपनी बेटी के नाम एक तार दिया। उस तार में अपना पता अमेरिकन राजदूत की मार्फत लिखते हुए मैंने यह भी लिखा कि इस समय तुम यहाँ आने का कष्ट न करना। मैंने सुना है कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। फिर मैं भी कुछ आवश्यक कामों में उलझा हुआ हूं। उनसे अवकाश मिलते ही मैं तुम्हें सूचित कर [illegible] समाचार पत्र में लिखा हुआ है।"

[illegible] ?" मैंने हैलियन से कहा—"मैं अपना पैरिस से आया हुआ [illegible] और उसका उत्तर लिखना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मुझे एक पत्र मारग्रेट को भी लिखना है……"

"अच्छा चलो, मैं इसका भी प्रबन्ध कर दूंगी।"

उसने गाड़ीवान से रूसी भाषा में कुछ कहा। सुनकर गाड़ीवान

पहिले तो चौंका, इसके बाद उसने सहमती में सिर हिला दिया। गाड़ी में हम फिर एक बार किसी अज्ञात दिशा की ओर चले। रास्ते के बाजारों में हमने लन्दन के जैन्टलमैन, पैरिस की सुन्दरियाँ, जड़ाऊ पेटियाँ बांधे सुन्दर ईरानी, उज्जड़ कृषक, गंवार चीनी, यहूदी, तुर्की के अतिरिक्त और भी कई प्रकार के मनुष्यों को देखा।

बड़े गिरजाघर और आइज़क के ऊंचे गुम्बद के पास से होते हुए हम चौकों, बारकों, भवनों और यादगारों का चक्कर काट, नहरों के पक्के पुलों को पार करते हुए आगे ही आगे चलते गये। अनन्तर गाड़ी एक तंग गली में प्रवेश करके एक छोटी-सी दुकान के सामने ठहर गई। मेरा अनुमान है कि वह स्थान तार-घर से कम से कम दो मील की दूरी पर अवश्य होगा।

वह बहुत ही मामूली-सी दुकान थी। एक बड़ा दरवाज़ा और दोनों ओर दो शीशे की अलमारियाँसामान के नमूने दिखाने के लिए बनी हुई थीं। सामने ही एक सादा बोर्ड टंगा हुआ था, जिस पर लिखा था—

लोबर्न

इस जगह पैरिस के नमूने के कपड़े सीये जाते हैं।

इस स्थान पर मेरी सुन्दर प्रेयसी ने खिड़की खोली और मुझे गाड़ी से उतरने का संकेत करके गाड़ीवान से कुछ कहा। उन शब्दों में से मेरी समझ में केवल यह ही आया कि दो घण्टे बाद इसी जगह आ जाना। इसके पश्चात वह मेरी ओर मुड़कर कहने लगी—"आओ।"

मैं उसके पीछे-पीछे चल दिया। दुकान के अन्दर जाने से पहले उसने जाली की महीन नकाब मुंह पर डाल ली, और तेज चाल में चलती हुई दुकान की सीढ़ियों पर चढ़कर अन्दर चली गई। चारों ओर एक दृष्टि डालने के पश्चात मैं भी उसके पीछे अन्दर चला गया। अन्य बाज़ारों के प्रतिकूल इस बाज़ार में भयानक सन्नाटा छाया था।

गाड़ीवान ने घोड़ों को चाबुक लगाया और चला गया।

दुकान के काउन्टर पर एक सुन्दर फ्रान्सिसी महिला सुन्दर वस्त्रों

"परन्तु क्या बात है तुम्हारे हाथ भीगे और ठंडे क्यों हैं ?" उसने पूछा। फिर इसके बाद स्वयं ही बोली—"मेरे विचार में तुम बहुत अधिक भयभीत हो गये हो। अच्छा जाओ, होटल या क्लब में जाकर कुछ पियो और इस स्थान को भूल जाने का प्रयत्न करो। तुम्हारे ये पत्र भिजवा दिये जाएंगे। मैं भी थोड़ी देर बाद वापस आ जाऊंगी। साचा मिले तो उससे इतना कह देना कि मैं पांच बजे से पहिले उससे नहीं मिल सकती।"

मैंने संकेत द्वारा अपनी स्वीकृति दी। बाहर निकलकर मैंने सावधानीपूर्वक चारों ओर देखा।

गली एक सिरे से दूसरे सिरे तक बिल्कुल सुनसान पड़ी थी। केवल एक छोटा-सा लड़का पतंग उड़ाता हुआ फिर रहा था। मैं डरा, शायद यह भी किसी मुखबिर का इशारा न हो। इस विचार के आते ही मैंने चाल तेज़ कर दी और अन्धाधुन्ध चलता हुआ गली से बाहर निकल गया। फिर भी मेरे माथे पर पसीने की ठंडी बूंदें काफी देर तक बहती रहीं।

केवल तीन दिन मुझको इस जगह पर और रहना था। परन्तु वे दिन······जिनमें हरेक दिन सौ साल के बराबर लम्बा था। काश! मेरे लिए आज ही, इसी समय इस मनहूस शहर से निकल जाना सम्भव होता ? परन्तु यह बात केवल कल्पना मात्र ही थी। मैं जानता था कि रहस्य को छुपाए रखने के लिए भरसक प्रयत्न करना पड़ेगा। ज़रा-सी असावधानी कितनी ही विपत्तियों को आमन्त्रण दे सकती थी। मैं यह भी जानता था कि जब तक मैं इस देश में रहूंगा, मुझे नहलिस्टों का साथी बनकर रहना पड़ेगा।

सहसा एक आवाज़ ने मेरे विचारों की शृंखला को तोड़ दिया। किसीने मुझे पुकारा था—

"ठहरिये, कर्नल लेनाक्स !"

मैं घबराकर पीछे की ओर मुड़ा।

"हे भगवान् ! रक्षा करो। यह तो गुप्तचर विभाग का बैरन फ्रेडरिक है।" मैं बुदबुदाया।

सचमुच बैरन फ्रेडरिक मुस्कुराते हुए मेरी ओर देख रहा था। यह मेरा सौभाग्य ही समझिये कि लम्बी-लम्बी डग भरता हुआ मैं नहलिस्टों के अड्डे से लगभग एक मील दूर निकल आया था। वरना भगवान् ही जाने क्या होता?

इस समय मैं एक रौनक वाले बाज़ार में खड़ा था, जिसमें सैंकड़ों व्यक्ति इधर से उधर आ-जा रहे थे। ऐसी जगह पर भला मुझपर क्या सन्देह किया जा सकता था?

दोनों हाथों से हृदय को थामकर उससे हाथ मिलाने के लिए मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"नमस्कार। बैरन फ्रेडरिक······चित्त तो प्रसन्न है?" मैं बोला और फिर घड़ी देखकर कहने लगा—"कल की यात्रा में आपने मेरे प्रति जो अतिथि-सत्कार प्रदर्शित किया था, यदि आज्ञा हो तो आज उसका भार मैं अपने ऊपर ले लूं।"

"हां-हां। मैं आपको निराश नहीं करता।" उसने उत्तर दिया—"एक छोटा-सा रेस्तोराँ मुझको याद है। उस जगह चलो, खाना खाते हुए बातें करेंगे।"

कुछ मिनट बाद हम रेस्तोरां में पहुंच गये, जिसके दरवाज़े पर बोर्ड टंगा हुआ था—

वशीर रेस्तोराँ फ्रंकाए

उस तंग अन्धेरी गली को, जिसमें वह रेस्तोराँ था, आश्चर्यचकित दृष्टि से देखते हुए मैंने मुस्कुराकर कहा—

"बहुत ही गुप्त स्थान है। मैं शायद कभी इसको तलाश भी न कर सकता था।"

बैरन ने हाथ के संकेत द्वारा मुझे उसके अन्दर चलने के लि

किसी विवशता में कन्धों को हिलाकर कहा—"आपको स्मरण ह
कि कुछ वर्ष पहिले वाशिंगटन में प्रेज़ीडेन्ट' गार फील्ड के साथ
दुर्घटना हुई थी।"

"हां, याद है।" मैंने उत्तर दिया—"उसको कत्ल कर दिया ग
था।"

"चुप-चुप", बैरन ने शीघ्रता से टोका—"ऐसा नृशंस शब्द प्रय
मत करो। मैं जो बात पूछना चाहता था वह यह है कि इस दुर्घट
के बाद वाशिंगटन पुलिस के चीफ कमिश्नर का क्या हुआ?"

"कुछ नहीं, उस बेचारे का अपराध ही क्या था? वह अप
ओहदे पर उसी प्रकार काम करता रहा था।"

"आह! कितना सौभाग्यशाली है वह देश, जहाँ ऐसी दुर्घटना
इतनी आसानी से भुला दी जा सकती हैं। कितने सौभाग्यशाली हैं
मनुष्य, जो उस देश की पुलिस में काम करते हैं। आप जानते हैं कि
यदि ऐसी घटना इस देश में हो जाए तो क्या हो?"

"नहीं, पर मेरा विचार है कि उस पुलिस अधिकारी को नौकर
से अलग कर दिया जाएगा।"

"क्या खूब! नौकरी से अलग कर दिया जाएगा।" उसने व्यंग्य-
पूर्ण स्वरों में उत्तर दिया—"अरे मित्र, भगवान् न करे कि ऐसी घटना
इस देश में हो, वरना सरकार सर्वदा प्राणों के बदले प्राण मांगा
करती है।"

कार्य देखा।"

"कब ? किस जगह ?" उसने विकल होकर पूछा।

इसके उत्तर में मैंने रात वाली वही विचित्र घटना कह सुनाई, जो मैंने पिकेट क्लब से वापस आते हुए बोरिस के साथ देखी थी।

"ओह। मैं समझा।" उसने सरसरी ढंग से कहा—"वे लोग इसी योग्य थे कि पकड़े जाते। किन्तु जब तक वह······बड़ी मछली स्वतन्त्र है, इन मच्छरों के शिकर से क्या लाभ ?"

कहते-कहते उसकी झपझपाती छोटी आँखों में तेज़ चमक पैदा हो गई।

"कौन-सी मछली ?"

बैरन ने सन्देह से मेरी ओर देखा और कहा—"वह भयानक और चालाक स्त्री, जिसको मैं भी अपना सबसे बड़ा शत्रु समझता हूँ, काश मेरे हाथ आ जाए।"

यह कहते हुए उसने अपनी दोनों मुट्ठियाँ ज़ोर से कसीं। फिर सहसा उठते हुए कहने लगा—

"भगवान् भला करे। मैं जाता हूँ, बहुत देर हो गई।"

सहसा कुछ सोचकर वह मेरी ओर मुड़ा और पूछने लगा—"यह तो बताइये कि इस तरफ आते हुए बर्लिन या एटकोहनन के बीच आपने कोई ऐसी असाधारण सुन्दर स्त्री को तो गाड़ी में बैठा हुआ नहीं देखा, जिसके बालों का रंग काला, आंखे भूरी और चेहरे पर बचपन का भोलापन बरसता हो ?"

मेरा हृदय ज़ोर-ज़ोर से धक-धक कर रहा था। उसका संकेत स्पष्ट रूप से हैलियन की ओर था। उद्विग्नता को दबाकर मैंने धैर्यपूर्ण स्वर में उत्तर दिया—

"देखी थी।"

"सच ! क्या वास्तव में देखी थी ?" उसने आवेश और जिज्ञासा के वशीभूत होकर पूछा, "कौन थी वह ?"

"मैं उसे जानता हूँ।"

फ्रेडरिक के मुख पर चमक आ गई। टोपी हाथ से रखते हुए वह बोला—"तो बताइये वह कौन थी ?"

ही कितना होता है। इतना समय तो समान खोलने और बाँधने में लग जाता है।" हैलियन ने हाथ के संकेत से बिखरा हुआ सामान दिखाकर कहा।

इसके लिए मैं अपने यहाँ से दो स्त्रियों को भेज सकती हूँ। ओल्गा ने शर्त रख दी।

मैं नहीं जानता था कि हैलियन इसका क्या उत्तर देती, परन्तु सौभाग्यवश यह बातचीत यहीं पर रह गई। दरवाज़ा खुला और दोनों पाल्टज़न शहज़ादियाँ मुस्कराती हुई कमरे के अन्दर आ गई।

"हम यह जानने के लिए आई हैं,"—बड़ी शहज़ादी ने समीप आकर कहा—"कि श्रीमती अगनातीफ का निमन्त्रण जो हमने कल रात भिजवाया था, वह आपको मिला या नहीं। इसके अतिरिक्त हम यह भी कहना चाहती थीं कि दूसरे अतिथियों से आपका परिचय हमारे ही द्वारा होना चाहिये।"

"न-न, यह न होगा।" श्रीमती वैलटस्की ने शीघ्रतापूर्वक कहा—"यह क्योंकि मेरे रिश्तेदार हैं इसलिए मेरा अधिकार पहिले है।"

और इस प्रश्न पर एक साधारण-सा मैत्रीपूर्ण वाद-विवाद हो गया। पाल्टज़न शहज़ादियां रेल के सफर में की गई मैत्री की दुहाई दे रही थीं और श्रीमती ओल्गा अपने सम्बन्धी होने की दलीलें उपस्थित कर रही थीं।

भगवान ही जाने यह हालत कब तक रही कि अचानक एम० कान्स्टनटाइन का छोटा भतीजा साचा वैलटस्की आ गया।

"आखिरकार प्यारी लारा···" उसने मेरी पत्नी को पहिले से भी अधिक आवेशपूर्ण चुम्बन देते हुए कहा। इसके पश्चात वह कुछ और कहना चाहता था कि चौंककर पीछे हट गया और चुन्धी आंखों से इधर-उधर देखने लगा। वास्तव में हर्षातिरेक में उसने यह न देखा कि उसकी भावी पत्नी एक ओर खड़ी है।

"साचा, तुम मुझसे तो कह रहे थे कि आज दिन भर ड्यूटी पर रहोगे, किन्तु फिर यहां आने की फुर्सत तुम्हें कैसे मिली?"

"ओह···अरे······हां···बात यह है।" साचा ने होंठ चबाकर कठिनता से उत्तर दिया—"मैंने बड़ी कठिनता से आधे घंटे की छुट्टी

अपने एकान्त स्थान से निकलकर आगे आई और मेरी पत्नी से गा
के लिए आग्रह करने लगी—

"देखिये, इन्कार न कीजियेगा। मैं आपको रेल में गुनगुनाते सु
चुकी हूँ।"

"बहुत अच्छा। यदि आपको अपने अतिथि का संगीत सुनना
तो मैं भी इन्कार नहीं कर सकती।" हैलियन ने मुस्कराकर उत्त
दिया—"किन्तु अभ्यास न होने के कारण यदि बेसुर हो जाऊं तो क्षम
कर दीजियेगा।"

क्षण भर के पश्चात ही 'स्वानी रौर' का वह चित्ताकर्षक संगी
जिसे प्रसिद्ध अभिनेत्री नैलसन अपने मधुर स्वरों में गाया करती थ
आरंभ हो गया। उस समय तक मैं हैलियन की गायन-कला से सर्व
अनभिज्ञ था, परन्तु उस गीत को सुनने के साथ-साथ हैलियन की भा
भंगिमाओं को देखकर मैं यह मानने के लिए विवश हो गया कि दूस
गुणों के अतिरिक्त वह गान-विद्या में भी निपुण है। उसके स्वरों
इतनी वेदना, इतनी लोच और इतना अधिक दर्द था कि हम में
बहुतों ने दिल थाम लिया। जब दूसरी बार फरमाइश हुई तो उस
'होम स्वीट होम' का प्रसिद्ध गीत उसी मधुरता से गाकर सुनाय

गीत समाप्त हुआ तो अधिकांश श्रोताओं के नेत्रों में आंसू चमक
थे। यहाँ तक कि हैलियन की नशीली और साचा की प्रेममयी आंखें
कुछ धुली-धुली-सी प्रतीत होती थीं। डोजिया देखने में तो शा
स्वभाव की लड़की थी किन्तु इस समय उसकी पलकें आंसुओं से भी
दिखाई देती थीं।

का पता आपको मालूम ही है।" यह कहते हुए उसने अपना कार्ड निकाला और एक स्त्री को दे दिया।

अतिथियों में यह अन्तिम स्त्री थी। जब वह चली गई तो मैं आगे बढ़ा और हैलियन के पास जाकर दबी हुई आवाज़ में बोला—"ओह! तुमने तो गजब कर दिया।"

"क्यों? किसलिए?"

तुमने भूलकर अपना असली कार्ड उस स्त्री को दे दिया। अब जिस समय वह तुम्हारा असली नाम और पता पढ़ेगी तो...उफ...गजब ही हो जाएगा।" मैंने फिर कहा।

सुनकर वह मुस्कराने लगी, बोली—"तुम कैसी बातें किया करते हो। मैं क्या इतनी मूर्खा हूँ कि अपना असली कार्ड दे देती? लो ज़रा, इसको देखो।"

यह कहते हुए उसने एक हाथ से अपना कार्ड केस और दूसरे से एक कार्ड निकाला। और उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब मैंने देखा कि केस पर मेरी विवाहिता पत्नी का नाम और कार्ड पर उसका नाम और पता लिखा हुआ था।

"मैं इन्हें पहिले से ही छिपाकर अपने साथ ले आई थी।" उसने कहा—"मेरा स्वभाव है कि जो काम करना हो उसमें आलस्य नहीं करती।"

मैं इसका क्या उत्तर दे सकता था, केवल अपने मन में यह सोचने के अतिरिक्त कि एक बहुत बड़ी मक्कार, जासूस और दूरदर्शी स्त्री से पाला पड़ा है। क्षण भर पश्चात ही वह फिर कहने लगी—

"यह तो बताओ, तुमको मेरा गाना पसन्द आया या नहीं?"

"तुम्हारे संगीत से मैं तो क्या कोई देवता भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।" मैं बोला—"परन्तु ये अमेरिकन राग तुमने कैसे सीख लिये?"

"श्रीमती आर्थर लेनाक्स का अभिनय आरम्भ करने से पूर्व ही मैंने इन्हें याद कर लिया था।" उसने मुस्कुराकर उत्तर दिया।

"किन्तु कई एक बातें और हैं जिनके विषय में मैं तुम से पूछना चाहता हूँ।"

ने एकान्त स्थान से निकलकर आगे आई और मेरी पर
.. .लिए आग्रह करने लगी—

"देखिये, इन्कार न कीजियेगा। मैं आपको रेल में गुन चुकी हूँ।"

"बहुत अच्छा। यदि आपको अपने अतिथि का संगीत तो मैं भी इन्कार नहीं कर सकती।" हैलियन ने मुस्करा दिया—"किन्तु अभ्यास न होने के कारण यदि बेसुर हो जाउ कर दीजियेगा।"

क्षण भर के पश्चात ही 'स्वानी रीर' का वह चित्ताकर्ष जिसे प्रसिद्ध अभिनेत्री नैलसन अपने मधुर स्वरों में गाया क आरंभ हो गया। उस समय तक मैं हैलियन की गायन-कला अनभिज्ञ था, परन्तु उस गीत को सुनने के साथ-साथ हैलियन भंगिमाओं को देखकर मैं यह मानने के लिए विवश हो गया गुणों के अतिरिक्त वह गान-विद्या में भी निपुण है। उसके इतनी वेदना, इतनी लोच और इतना अधिक दर्द था कि बहुतों ने दिल थाम लिया। जब दूसरी बार फरमाइश हुई 'होम स्वीट होम' का प्रसिद्ध गीत उसी मधुरता से गाकर

गीत समाप्त हुआ तो अधिकांश श्रोताओं के नेत्रों में आंसू थे। यहाँ तक कि हैलियन की नशीली और साचा की प्रेममयी कुछ धुली-धुली-सी प्रतीत होती थीं। डोज़िया देखने में तं स्वभाव की लड़की थी किन्तु इस समय उसकी पलकें आंसुओं दिखाई देती थीं।

का पता आपको मालूम ही है।" यह कहते हुए उसने अपना कार्ड निकाला और एक स्त्री को दे दिया।

अतिथियों में यह अन्तिम स्त्री थी। जब वह चली गई तो मैं आगे बढ़ा और हैलियन के पास जाकर दबी हुई आवाज़ में बोला—"ओह ! तुमने तो गज़ब कर दिया।"

"क्यों ? किसलिए ?"

तुमने भूलकर अपना असली कार्ड उस स्त्री को दे दिया। अब जिस समय वह तुम्हारा असली नाम और पता पढ़ेगी तो···उफ···गज़ब ही हो जाएगा।" मैंने फिर कहा।

सुनकर वह मुस्कराने लगी, बोली—"तुम कैसी बातें किया करते हो। मैं क्या इतनी मूर्खा हूँ कि अपना असली कार्ड दे देती ? लो ज़रा, इसको देखो।"

यह कहते हुए उसने एक हाथ से अपना कार्ड केस और दूसरे से एक कार्ड निकाला। और उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब मैंने देखा कि केस पर मेरी विवाहिता पत्नी का नाम और कार्ड पर उसका नाम और पता लिखा हुआ था।

"मैं इन्हें पहिले से ही छिपाकर अपने साथ ले आई थी।" उसने कहा—"मेरा स्वभाव है कि जो काम करना हो उसमें आलस्य नहीं करती।"

मैं इसका क्या उत्तर दे सकता था, केवल अपने मन में यह सोचने के अतिरिक्त कि एक बहुत बड़ी मक्कार, जासूस और दूरदर्शी स्त्री से पाला पड़ा है। क्षण भर पश्चात ही वह फिर कहने लगी—

"यह तो बताओ, तुमको मेरा गाना पसन्द आया या नहीं ?"

"तुम्हारे संगीत से मैं तो क्या कोई देवता भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।" मैं बोला—"परन्तु ये अमेरिकन राग तुमने कैसे सीख लिये ?"

"श्रीमती आर्थर लेनाक्स का अभिनय आरम्भ करने से पूर्व ही मैंने इन्हें याद कर लिया था।" उसने मुस्कुराकर उत्तर दिया।

"किन्तु कई एक बातें और हैं जिनके विषय में मैं तुम से पूछना चाहता हूँ।"

"यह तुम्हारी नानी मां नहीं है।" ओलगा ने हंसते हुए कहा।

"क्यों नहीं, भाई की नानी माँ सो हमारी नानी माँ।" और इसके पश्चात हैलियन को प्यार करते हुए सोफी बोली—"भाई साचा तो आपको परियों जैसी नानी कहा करते हैं..."

मेरी पत्नी ने चुप कराने के लिए सोफ़ी का मुंह चूमना आरम्भ कर दिया, परन्तु मैंने देखा कि स्वयं उसका चेहरा भी किसी आन्तरिक वेदना से लाल हो रहा था।

नन्हीं-सी बालिका की इस स्पष्टवादिता से सारे कमरे में एक भारी मौन छा गया था।

"चुप रहो सोफी, चुप रहो।" श्रीमती वैलटस्की ने कहा—"तेरी तो वह बात है कि नन्ही-सी जान और गज भर की ज़बान।"

"परन्तु मामा, मैं झूठ नहीं कहती।" सोफी ने उत्तर दिया—"नई नानी माँ सचमुच परियों से भी अधिक सुन्दर हैं।"

"बस, अब तुम जाओ अपने कमरे में चली जाओ। नहीं तो तुम इनके परियों जैसे वस्त्र अवश्य खराब कर दोगी।" ओलगा ने हंसते हुए कहा।

संकेत पाकर मेडम वाज़ल डेलाने उसे अपने साथ ले जाने को बढ़ी तो सोफी हैलियन की गोद में से उतरकर असमंजस की अवस्था में खड़ी हो गई। इसके पश्चात विनम्र दृष्टि से देखते हुए मां से कहने लगी—"मामा, आपके खा चुकने के बाद मैं फिर आ जाऊंगी।" परन्तु इससे पहिले कि मां कुछ उत्तर देतीं, युवा फ्रान्सिसिन उसको अपने साथ दूसरे कमरे में ले गई।

लड़की के चले जाने के बाद बोरिस को साथ लेकर मैं उस बड़े कमरे के विभिन्न भागों को देखने में व्यस्त हो गया। वह मुझे दीवार पर लगे हुए चित्र दिखाने लगा।

रात का अन्धेरा चारों ओर छा गया था, परन्तु चन्द्रमा के निखरे हुए प्रकाश में नेवा नदी का ठंडा पानी बहता हुआ स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था। उस सफेद चमकदार पानी पर मुझे विभिन्न प्रकार की नावें तैरती हुई दिखाई दीं।

मुझको इस दृश्य में तल्लीन देखकर बोरिस ने कहा—"यह याता-

"क्या ?"

"सबसे पहिले साचा......"

"ओह ! यह कहानी बहुत लम्बी है; इसे फिर सुनाऊंगी।" वह बेचैनी से कहने लगी। फिर कलाई घड़ी देखकर बोली—"क्या तुम भूल गये कि हमें रात का खाना ओल्गा के यहाँ खाना है। इस लिए कपड़े बदल लो। मैं भी बदल लेती हूं।"

और इससे पहिले कि मैं उसे रोक पाता, वह बड़ी फुर्ती से अपने कमरे की ओर दौड़ गई।

मैं उठकर उसकी ओर जा ही रहा था कि उसने झट दरवाजा बंद कर लिया। मैं विवश होकर वापस चला आया।

घंटे भर बाद ही हम अंग्रेज़ी घाट पर खड़े थे। हमारे आगे-पीछे सुन्दर नेवा नदी बह रही थी और सामने वैलटस्की के महल के बड़े-बड़े विशाल द्वार थे। हैलियन को साथ लेकर उस मकान में प्रवेश करते समय मैं अत्यन्त लज्जा का अनुभव कर रहा था। कितनी चिन्तनीय स्थिति थी कि मैं एक अपरिचित और भयानक स्त्री को अपनी पत्नी के रूप में उन सम्बन्धियों के मकान पर लिये जा रहा था जो उसे मेरी प्रिय पुत्री जान मारग्रेट की माँ समझे हुए थे।

जिस बड़े कमरे में हमें पहुंचाया गया, उसमें वैलटस्की परिवार के लगभग सभी सदस्य उपस्थित थे—कान्स्टनटाइन, उनकी पत्नी ओल्गा, दोनों भतीजे साचा और बोरिस, दो छोटे लड़के, जो रूस के राजदरबार में किसी न किसी पद पर नियुक्त थे और एक नौ वर्ष की छोटी-सी प्यारी लड़की सोफ़ी।

"यह तुम्हारी नानी मां नहीं है।" ओल्गा ने हंसते हुए कहा।

"क्यों नहीं, भाई की नानी माँ सो हमारी नानी माँ।" और इसके पश्चात हैलियन को प्यार करते हुए सोफी बोली—"भाई साचा तो आपको परियों जैसी नानी कहा करते हैं..."

मेरी पत्नी ने चुप कराने के लिए सोफ़ी का मुंह चूमना आरम्भ कर दिया, परन्तु मैंने देखा कि स्वयं उसका चेहरा भी किसी आन्तरिक वेदना से लाल हो रहा था।

नन्हीं-सी बालिका की इस स्पष्टवादिता से सारे कमरे में एक भारी मौन छा गया था।

"चुप रहो सोफी, चुप रहो।" श्रीमती वैलटस्की ने कहा—"तेरी तो वह बात है कि नन्हीं-सी जान और गज भर की ज़बान।"

"परन्तु मामा, मैं झूठ नहीं कहती।" सोफी ने उत्तर दिया—"नई नानी माँ सचमुच परियों से भी अधिक सुन्दर हैं।"

"बस, अब तुम जाओ अपने कमरे में चली जाओ। नहीं तो तुम इनके परियों जैसे वस्त्र अवश्य खराब कर दोगी।" ओल्गा ने हंसते हुए कहा।

संकेत पाकर मेडम बाज़ल डेलाने उसे अपने साथ ले जाने को बढ़ी तो सोफी हैलियन की गोद में से उतरकर असमंजस की अवस्था में खड़ी हो गई। इसके पश्चात विनम्र दृष्टि से देखते हुए मां से कहने लगी—"मामा, आपके खा चुकने के बाद मैं फिर आ जाऊंगी।" परन्तु इससे पहिले कि मां कुछ उत्तर देतीं, युवा फ्रान्सिसिन उसको अपने साथ दूसरे कमरे में ले गई।

लड़की के चले जाने के बाद बोरिस को साथ लेकर मैं उस बड़े कमरे के विभिन्न भागों को देखने में व्यस्त हो गया। वह मुझे दीवार पर लगे हुए चित्र दिखाने लगा।

रात का अन्धेरा चारों ओर छा गया था, परन्तु चन्द्रमा के निखरे हुए प्रकाश में नेवा नदी का ठंडा पानी बहता हुआ स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था। उस सफेद चमकदार पानी पर मुझे विभिन्न प्रकार की नावें तैरती हुई दिखाई दीं।

मुझको इस दृश्य में तल्लीन देखकर बोरिस ने कहा—"यह याता

यात अब शीघ्र ही समाप्त होने वाला है। सर्दियाँ आ गई हैं। कुछ दिनों में ही पानी जम जाएगा और इसके बाद नावों के स्थान पर स्लेज गाड़ियां चला करेंगी।"

उसी समय मेरी दृष्टि नदी के झिलमिलाते हुए पानी से होती हुई एक गगनचुम्बी अट्टालिका पर पड़ी। उसे देखकर मैं सहसा चौंक पड़ा। वह 'रूसी बैंस्टील' (कैदखाना) था जिसके तहखानों में सैकड़ों अभागे जंजीरों से जकड़े हुए अब भी पड़े कराहते होंगे।

"यह जो आप देख रहे हैं," बोरिस ने मेरी दृष्टि का पीछा करते हुए कहा—"पहिले यह पीटर और पाल का वह प्रसिद्ध किला था..."

"अब जिसमें राजनैतिक कैदी रखे जाते हैं। क्यों?" मैंने हल्की थर्राई हुई आवाज़ में कहा।

"जी, वही।"

सहसा हैलियन की मीठी साँस मेरे कपोलों को छूती हुई गुजर गई। वह कह रही थी—"प्यारे आर्थर, तुम यहाँ दृश्य देखने में व्यस्त हो और उधर श्रीमती वैलटस्की भोजन की मेज़ पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

इसके पश्चात सब व्यक्ति भोजनालय की ओर चल दिये। नदी के किनारे पर उस भयानक किले को देखने के बाद मुझपर कुछ ऐसी उदासी छा गई थी कि ओलगा की प्रसन्नता से भरी हुई बातें भी उस को दूर न कर सकीं। यही वह खूनी स्थान था, जिसमें असंख्य राजनैतिक कैदियों ने सिसक-सिसककर प्राण त्यागे थे। उसी की एक अंधेरी कोठरी में सुनहरी ऐलजाबेथ की युवा पुत्री ने जंजीरों में जकड़े हुए हाथ सिर के ऊपर उठाकर जीवन से उस वक्त तक संघर्ष किया था, जब तक नदी के पानी ने कोठरी में आकर उसे डुबा न दिया था। वे सब अभागे कैदी जो किसी कारणवश ज़ार का कोपभाजन बन जाते थे, उसी में रखे जाते थे। ऐसे ही सैकड़ों विचार मेरे हृदय को

से या हैलियन के संसर्ग से बहुत मदमस्त हो गया था। शीघ्र ही उस वार्तालाप ने मोहक रूप धारण कर लिया। मैंने अपने फौजी जीवन की कुछ कहानियाँ सुनाईं। और अन्तिम कहानी मैंने आयरिश कार्पोरल फलैट्रस्टी के विषय में सुनाई जिसे पाँच अमेरीकन जंगलियों ने घेर लिया था। और जिसने उनको पानी के बदले शराब पिलाकर पहिले चेतना शून्य किया और फिर मौत के घाट उतार दिया। फिर दूसरे दिन उनकी खोपड़ियों को पेटी में लटकाकर कवायद के लिए परेड में उपस्थित हुआ। वह किस्सा तो इतना पसन्द किया गया कि सबके सब हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये। हैलियन की तो यह हालत थी, कि मैं डरा कि कहीं वह अचेत न हो जाए।

"ज़रा सोचिये," साचा ने तनिक शान्ति हो जाने पर कहा—"सब से अधिक श्रीमती लेनाक्स इस कहानी पर हंसी हैं जबकि वह कई बार इसको सुन चुकी होंगी।

"कई सौ बार।" हैलियन ने कठिनता से हंसी को दबाते हुए उत्तर दिया—"किन्तु हर बार मुझे इसके सुनने में नवीन आनन्द प्राप्त होता है।"

"हालाँकि मारग्रेट एक बार कहती थी," श्रीमती वैलटस्की ने कहा—"कि जब कभी पापा ऐसी कहानियाँ सुनाते हैं तो अम्मा चुप हो जाया करती हैं।"

"ओह! यह ठीक है।" हैलियन ने शीघ्रतापूर्वक कहा—"घर पर मैं वास्तव में ऐसी व्यर्थ की बेतुकी बातें पसन्द नहीं करती, परन्तु मित्र मंडली में···अवश्य ही सबकी खुशी में शामिल होना पड़ता है। क्यों आर्थर?"

मैं मौन रहा। हां, उस चालाक स्त्री की हाजिरजवाबी की सराहना किये बिना न रह सका।

इसके थोड़ी देर बाद स्त्रियाँ उठ गईं और पुरुष अपने सामने शराब तथा सिगार रखकर बैठ गये। थोड़ी देर यूं ही मामूली बातें होती रहीं। इसके पश्चात् बोरिस और साचा कुछ बहाना करके मेज़ पर से उठ खड़े हुए। बोरिस का जाना तो इसलिए उचित था क्योंकि मुझे उसके चाचा से निजी बातें करनी थीं। परन्तु साचा का उठना

स्थान उसके आदमियों से खाली है।" फिर जरा आवाज को दबाकर वह कहने लगा—"आपको शायद विश्वास न हो, परन्तु मैं झूठ नहीं बोलता। सम्भव है मेरे अपने नौकरों में भी कुछ खुफिया पुलिस के आदमी हों।"

"किन्तु यह तो बताइये कि इतनी जासूसी की क्या आवश्यकता है। हर स्थान पर पुलिस के आदमी क्यों छिपे फिरते हैं ?"

"नहलिस्टों की खोज में।"

"परन्तु मैंने तो सुना था कि इस देश में नहलिस्टों का खात्मा हो गया और अब यहाँ उनका कोई आदमी शेष नहीं रहा।"

कान्सटनटाइन के हृदय से एक गहरी आह निकली। वह कहने लगे—"काश ऐसा होता ! किन्तु वास्तविकता तो यह है कि नहलिस्ट संस्था कभी भी समाप्त नहीं हो सकती। इसकी राख से भी नया जीवन निकल आता है। नहलिस्ट मिट चुके, परन्तु वे मिटकर भी जीवित रहेंगे।"

पूछने लगा—

"वह कैसा पत्र था जो अभी साचा ने तुमको दिया था?"

"पत्र······कैसा पत्र?" हैलियन ने चकित होकर भोलेपन से प्रश्न किया।

"इन्कार न करो।" मैंने आवेश में भरकर कहा—"क्या उसने हाथ मिलाते समय एक पत्र तुम्हारे हाथ में नहीं दिया था?"

हैलियन ने मुंह फेर लिया। वह बोली—

"मान लो यदि दे भी दिया तो तुम्हें इससे क्या? मेरे व्यक्तिगत पत्रों से किसीको क्या वास्ता?"

"बहुत खूब! मेरा कुछ वास्ता ही नहीं। मैं तुम्हारा वह पति हूं, जिसकी पत्नी बनकर तुम सारी दुनिया को उल्लू बना रही हो···किन्तु याद रखो तुम्हें पत्नी बनाकर मैंने तुम्हारे प्रति एक पति के सब अधिकार प्राप्त कर लिये हैं और इसी हैसियत से मैं तुमको आज्ञा देता हूँ कि वह पत्र जो साचा ने तुमको दिया था, मेरे हवाले कर दो।"

जिस तेज़ स्वर में मैंने ये शब्द कहे थे, हैलियन उनसे प्रभावित हो गई।

"रुष्ट मत होओ मेरे पतिदेव, रुष्ट मत होओ।" हैलियन ने उत्तर में विनम्र होकर कहा और मुड़ा हुआ पत्र निकालकर चुपके से मेरे हाथ में दे दिया। मैंने उसको उसी तरह जेब में रख लिया।

वह कुछ देर तक चुपचाप मेरी ओर देखती रही, फिर इसके पश्चात् ज़ोर से ठहाका मारकर पीछे को झुक गई।

शत्रुता प्रकट करने का मौका दिया जाए। पुलिस पहिले ही सन्देह कर रही है। उसके गुप्तचर जगह-जगह फैले हुए हैं। जरा-सी भी असावधानी हो गई तो बस भगवान् ही मालिक है। सौतिया डाह स्त्री से अनेक प्रकार का झूठ बुलवा देता है।"

वह सुकड़कर मेरे साथ लग गई और विनम्र दृष्टि से देखते हुए कहने लगी—"प्राणनाथ! रुष्ट मत होओ। जो कुछ भी तुम कहोगे, वही करूंगी, और कभी भी तुमको रुष्ट होने का अवसर न दूंगी।"

वह अपनी निर्दयता पर बहुत ही लज्जित दिखाई देती थी।

"मैं जब काहिरा में था", मैंने फिर कहा—"तो एक आयरिश मुसलमान दन्नीवे से मेरी प्रतिदिन भेंट होती थी। तीस पत्नियां उसके अन्तःपुर में मौजूद थीं और वह उन सबके साथ एक जैसा व्यवहार करता था; परन्तु एक पत्नी ने किसी बात से असंतुष्ट होकर बाकियों की चुगली खाना आरम्भ किया। ऐसी-ऐसी मन-घड़न्त कहानियां उसने उन स्त्रियों के विषय में सुनानी आरम्भ कीं कि क्रोध और शराब के नशे में उसने एक-एक करके सबको मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद वह इतना उदास हो गया कि मैंने फिर कभी उसके मुख पर हर्ष की रेखाएं नहीं देखीं।"

एक दिन उसने मुझसे कहा—"मेरी उन्तीस पत्नियों की एक वर्ष के अन्दर ही अन्दर मृत्यु हो गई यद्यपि उनको किसी प्रकार की बीमारी नहीं हुई थी। फिर वास्तविकता एक दिन प्रकट हो ही गई। उसके बाद उसने तीसवीं को थैले में बन्द करके जीवित ही नील नदी में धकेल दिया। इससे जो बात मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ। वह यह है······"

"प्यारे आर्थर! कितनी भयानक कहानियां तुम्हें याद हैं।" हैलियन ने सुन्दर कटोरीदार आंखों से मेरी ओर देखते हुए कहा—"बुरा न मानो तो कहूँ······

"क्या?"

हर बात में तुम्हारी आज्ञा का पालन करने का वायदा करती

; कहते हुए उसने अपनी सुन्दर गुदगुदी बाहें मेरी गर्दन में डाल
सिर को इस तरह मेरी छाती से लगा दिया कि मेरा बहादुर
; ज़ोर से धक-धक करने लगा।

२

मरे में हैलियन की विनम्रता और भी बढ़ गई। में अपना कोट
रहा था तो वह कहने लगी—"प्राणनाथ! ठहरो, मैं उतरवाती

ौकरों के सामने वह बड़ी पतिभक्त और आज्ञाकारिणी पत्नी
ती थी। चूंकि एक नौकर अब भी काम पूछने के लिए आ गया
ालिए मैं उसकी इस बात से बहुत प्रसन्न हुआ। हैलियन ने अपने
सी ढंग की बनी चाय मंगाई। मैं उस समय कोई तेज़ भोजन
था। इसलिए मैंने काकंग लाने की आज्ञा दी।
प्रिय आर्थर!" नौकर के जाने के बाद वह कहने लगी—"तुम
बदल लो। मैं भी बदल लेती हूँ। दस मिनट के बाद फिर हम
मरे में मिलेंगे। चाय पीते हुए तुम्हें मैं एक ऐसा शुभ समा-
ुनाऊंगी कि तुम नाच उठोगे।"
तः हम दोनों कपड़े बदलने के लिए अपने-अपने कमरे में चले
। दस मिनट से पहले ही एक सुन्दर गाउन पहिनकर, मैं बैठक में
गया। एक क्षण पश्चात् ही वह भी आ पहुंची। वह सादा और
ेद कपड़े का टी गाउन पहिने हुए थी, जो यदि लैस और फीते से कढ़ी
न होती तो उसे संगमरमर की प्रतिमा का रूप दे देती। हैलियन
उस अर्धनग्न अवस्था में देखकर मेरे हृदय की शेष शंकाएं भी दूर
गईं और मैं किसी सीमा तक उस शुभ सूचना का मतलब भी समझ
ा, जो शीघ्र ही सुनी जाने वाली थी।
राजसी ढंग से बैठकर वह चाय उंडेलते हुए कहने लगी—"लो
नो, आज मैंने अपना काम सब तरह से पूरा कर लिया है।"

मेरी इच्छाओं पर एक तरह से ओस-सी पड़ गई। धीमे स्वर में मैंने पूछा—"तो क्या यातायात······"

"चुप! चुप!" वह उंगली से संकेत करके कहने लगी—"शब्द की बजाए संकेत ही पर्याप्त है।"

"यानी, तुम अब रूस से वापस जाने को तैयार हो?"

"हाँ, जितनी भी जल्दी वापसी का पासपोर्ट मिल जाए।"

"बहुत अच्छा।" मैंने उत्तर दिया—"कल तक मेरा काम भी समाप्त हो जाएगा। इसके बाद मैं पासपोर्ट के लिए प्रार्थनापत्र भेजूंगा। आशा है, परसों हम दोनों इस पिंजरे से निकल जाएंगे।"

इस सफलता की खुशी को मैंने अपने ढंग से मनाने के विचार से उसके कोमल शरीर को भुजाओं में लेकर अपनी ओर खींचा, और उसके गुलाबी होठों का चुम्बन लिया ही चाहता था कि उसने आशा के प्रतिकूल मेरी भुजाओं से छूटने का प्रयत्न करते हुए बहुत ही धीमे स्वरों में कहा—

"बस, बस, अब मेरी दशा पर दया करो।"

चकित होकर मैं उसके मुख को देखने लगा—

"क्या कहती हो?" मेरे मुंह से एकबारगी निकला और मैं विस्मय के साथ उसका क्रोध-भरा चेहरा देखने लगा।

"बस, यही कि इस चूमने-चाटने को यहीं समाप्त कर दो।" उसने क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखते हुए कहा—"अब वह समय बीत गया। अब परस्पर सन्धि का समय आ गया है।"

"कैसा समय?···कैसी सन्धि?···मैं नहीं समझा कि तुम यह क्या कह रही हो?"

"मैं यह कह रही हूँ कि इससे पहिले मैं तुम्हारे वश में थी, किन्तु अब नहीं हूँ। उस समय तक मैंने अपनी पार्टी का नया कोड [illegible], सदस्यों तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त नहीं की थी। और वह काम करने के लिए मैं अपनी इज़्ज़त, अस्मत तथा सुरक्षा सब कुछ बलिदान कर सकती थी।" परन्तु अब उसने अभिमान भरी दृष्टि से देखते हुए विजयी स्वर में कहा—"अब मेरा काम पूरा हो चुका है। अब मैं तुम्हारे बूढ़े होठों का एक भी चुम्बन स्वीकार करने से पहिले···"

"हाँ तो ! मेरे होठों का चुम्बन स्वीकार करने से पहले क्या होगा ?" मैंने उसकी व्यंग्यात्मक वक्तृता की परवाह न करते हुए दोवारा उसे अपनी भुजाओं की पकड़ में लेने का प्रयत्न करते हुए कहा।

'यह।"

और संक्षिप्त से उत्तर के साथ ही उसने एक नन्हा-सा रिवाल्वर निकालकर मेरी कनपटी से लगा दिया।

मैं घबराकर पीछे हट गया।

"और अब आप मेरे इस इरादे को समझ लेने के बाद," उसने पिस्तौल हटाकर कहा—"आशा है, अच्छी तरह होश में आ गये होंगे। यदि ऐसा है तो बैठ जाओ, मैं तुमसे दो-चार बातें कहना चाहती हूँ।"

इस हृदय-विदारक भयानक दृश्य ने मेरी चेतना को समाप्त कर दिया। ऐसी शान्त, इतनी कोमल और सुन्दर स्त्री इतनी कठोर और निर्दय भी हो सकती है क्या, मुझे स्वप्न में भी यह बात सम्भव नहीं जान पड़ती थी।

यह मेरे एहसानों का बदला था। यह मेरे बलिदानों का मूल्य था।

एक वार तो मन में आया कि वह पिस्तौल उसके हाथ से छीन लूं। क्योंकि इस वृद्ध अवस्था में भी मैं उसके युवा शरीर को अपने वस में कर सकता था, परन्तु इस छीना-झपटी में मुझे यह भय भी था कि यदि कहीं पिस्तौल चल गया तो फिर क्या होगा ? होटल के कर्मचारी दौड़े हुए आएंगे और चूंकि रूस में बिना सरकारी आज्ञा के हथियार रखना अपराध है, इसलिए यह मामला अवश्य ही पुलिस के हाथों तक पहुंचेगा। मजबूर होकर मैं विस्मत दृष्टि से उस विचित्र स्त्री की ओर देखने लगा।

अपनी बात को जारी रखते हुए कहा—"मैं स्वयं अपनी कुशलता के लिए दूसरे व्यक्तियों के सामने तुम्हें प्रेम करने की स्वीकृति दे सकती हूँ। परन्तु यह कहते हुए उसने एक विचित्र प्रकार की मुखाकृति बना ली—"किन्तु एकान्त में···आज के बाद यह स्मरण रखियेगा कि शीघ्र ही हम इस देश की सीमा के पार पहुंच जाएंगे। जिसके बाद आपका रास्ता उधर होगा और मेरा इधर।"

अन्तिम शब्द उसने किसी कुशल अभिनेत्री की तरह एक चित्ता-कर्षक ढग से कहे। क्रोध के मारे मैं उस समय तक मौन था, परन्तु अब कुछ हकलाहट के स्वर में मैंने कहा—

"और क्यों श्रीमती जी! यही बदला है मेरी उन कुर्बानियों का जो मैंने तुम्हारे लिये कीं।"

"तुम्हारे उपकारों की मैं हृदय से आभारी हूँ। परन्तु उसका बदला वह नहीं हो सकता जो तुम चाहते हो।" उसने गौरवपूर्ण ढंग से कहा—"अच्छी तरह याद रखो कि आज के बाद मेरे होठों पर तुम्हारा अधिकार समाप्त हो गया है।"

"और साचा का?" मैंने जलकर प्रश्न किया।

उसका रंग पीला पड़ गया। वह बड़बड़ाकर कहने लगी—"सावधान! मेरा अपमान मत करो।"

"खूब।" मैंने कठोर स्वर में कहा—"अब तो मेरी बातें भी अप-मानजनक हो गईं। मैंने उसको चिढ़ाते हुए कहा—"इस वास्तविकता को तुम भी याद रखो कि जब तक समाज तुम को मेरी पत्नी समझे हुए है और संसार वालों की दृष्टि में मैं तुम्हारा पति हूँ, तब तक मेरी और तुम्हारी इज्जत सम्मिलित होगी। तब तक मैं तुम्हें इस प्रकार प्रेम का खिलवाड़ करने की कभी भी आज्ञा नहीं दूंगा, जो तुम अपने प्रेमी साचा से किया करती हो।"

उसके होठों पर हास्य की एक हल्की-सी रेखा प्रकट हुई। वह कहने लगी—

"यदि पत्नी के रूप में तुमको मेरा व्यवहार असह्य प्रतीत होता हो या तुम समझते हो कि मेरे किसी काम से तुम्हारी बदनामी होगी एक ही सीधी-सादी युक्ति है।"

"क्या ?"

"तलाक !"

इसके बाद वह हँसती हुए अपने कमरे की ओर चल दी।

हैरान और परेशान, क्रोध में भरा हुआ, परन्तु विवश पाषाण-प्रतिमा की भाँति उसी स्थान पर खड़ा हुआ मैं उसकी ओर देख रहा था।

"ऐसी बातें निस्संदेह सहन नहीं की जा सकतीं।" वह दो कदम पीछे मुड़ते हुए कहने लगी—"परन्तु इसके जिम्मेदार तुम हो। न तुम मुझे तंग करते और न मैं साफ़-साफ़ बात कहने के लिए विवश होती।"

फिर भी मैं कोई उत्तर न दे सका।

दरवाज़े पर पहुंचकर वह फिर रुकी और पीछे मुड़कर देखने लगी। अब उसके नेत्र क्रोध के मारे चमक रहे थे, कपोल लाल पड़ गए थे, वक्षस्थल धौंकनी के समान चल रहा था। वह कड़ककर कहने लगी—

"एम० वैलटस्की के मकान पर तुमने मेरी विवशता का अनुचित लाभ उठाया था, यह उसका प्रतिशोध है। तब मैं पराधीन थी परन्तु अब······"

"परन्तु अब साचा की खातिर मुझे अपमानित कर रही हो। क्यों ?" मैंने हकलाते हुए कहा।

"उस बदचलन, कमीने तथा पापी पुरुष के लिए, जो······"

एक भयानक अट्टहास के साथ वह दौड़कर अपने कमरे में चली गई और दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया।

३

अत्यन्त आवेशपूर्ण दशा में मैं उस स्थान की ओर चला, जहाँ दीवार के सहारे मेरा कोट टंगा हुआ था। उसकी जेब में हैलियन के नाम लिखा हुआ साचा का वह पत्र था जो उसने विदाई के समय हाथ मिलाने के बहाने उसको दिया था। उसमें यदि प्रेम का एक

शब्द भी मिल गया, तो साचा और हैलियन दोनों को लज्जित करने का मेरे हाथ अच्छा मौका आ जाएगा। वह मेरी पत्नी थी। कानून और सामाजिक प्रथा के अनुसार वह अपने आपको संकट में बिना डाले इस रिश्ते से इन्कार नहीं कर सकती थी।

कोट के समीप जाकर मैंने जेब में हाथ डाला।

किन्तु वह खाली थी।

भय की एक हल्की-सी लहर पीठ पर से होती हुई मेरे सारे शरीर में फैल गई। मैं चुपचाप खड़ा सिर खुजाता रहा। फिर मैंने सोचा कि वह पत्र शायद दूसरी जेब में रखा गया होगा। एक-एक करके मैंने सारी जेबों को टटोल डाला किन्तु वह पत्र विचित्र ढंग से गायब हो चुका था।

मैं सिर थामकर रह गया। उफ ! कैसी चालाक थी हैलियन !

वह सफर का प्यार, वह मीठी-मीठी छेड़खानियाँ, वह नौकर के बदले स्वयं ही मेरा कोट उतारना, सब चालें थीं—मुझको मूर्ख बनाने और उस आपत्तिजनक पत्र को उड़ाने की···

वह बन्द कमरे में मेरे देश का राष्ट्रीय गीत गा रही थी। मैंने जोर से कुन्डी बजाई।

"वह पत्र," मैंने चिल्लाकर कहा—"वही जो साचा ने तुमको दिया था, मेरे हवाले कर दो।"

"प्रिय ! उसको तो मैंने नष्ट कर दिया।" अन्दर से उत्तर मिला—"अब जाओ और सज्जन पुरुषों की भाँति आराम करो।"

"परन्तु तुमने तो उसको पढ़ा होगा।"

"हाँ, पढ़ा था।"

"मैं तुमसे मिलना चाहता हूं, दरवाज़ा खोलो।"

"नहीं प्रिय ! अब नहीं, कल सवेरे मिलूंगी। जाकर सो जाओ। सोने से आशा है तुम्हारा जोश दब जाएगा।"

"सो जाऊं···मैं !" मैं दीवाना-सा बना चिल्लाया। एक निर्बल स्त्री के हाथों पाई हुई पराजय ने मेरे दुःखों को और उभार दिया था। मैं दीवानों की भाँति साथ के उस बड़े कमरे में टहलने लगा। किन्तु बहुत देर तक उस कमरे में घूमते रहना पागलपन मोल लेना मालूम

"सम्भवतः एक घंटे में।"

"इससे पहिले असर पैदा करना हो तो ?"

"तो एक साथ दो खा लीजिये।"

"बहुत खूब। इनका असर कितनी देर में होगा।"

"सम्भवतः आध घन्टे में।"

"मान लो इससे भी जल्दी असर करना हो तो क्या···तीन ?"

"तीन···हाँ तीन प्रयोग की जा सकती हैं—किन्तु······"

"क्या तीन के प्रयोग में कुछ खतरा है ?" मैंने जल्दी से पूछा।

"खतरा तो कुछ भी नहीं।" उसने कुछ सोचकर उत्तर दिया—"अच्छा यही होगा कि तीन पुड़ियाओं को एक साथ प्रयोग न किया जाए।"

"बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा ! मैं इस विषय में सावधानी से काम लूंगा।" मैंने वायदा किया—"किन्तु यदि ऐसी गलती हो जाए तो उस दशा में क्या करना चाहिये ?"

"कड़वा कहवा और निरन्तर हाथ-पाँवों को हिलाते रहना चाहिए। अधिक खराब हालत में वैलेडोना से भी काम लिया जा सकता है।"

"वैलेडोना तो ज़हर है। क्या आप मुझे उसकी एक शीशी दे सकेंगे ?"

"दे दूंगा। आप जैसे सज्जन व्यक्तियों के लिए उसपर कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं है।" नींद लाने वाली दवाई की पुड़िया का पैकिट मेरे हाथ में देते हुए वह कहने लगा—"लीजिये, आठ हैं, कई दिनों तक काम दे जाएंगी।"

फिर जब उसने वैलेडोना की शीशी दी तो मैंने पूछा—"इसकी मिकदार ?"

"दस बूंद और यदि फायदा न हो तो इतनी ही बूंदें एक घन्टे बाद फिर।"

कीमत चुकाकर एक पुड़िया चलने से पहिले मैंने वहीं पर फांक ली। फिर पैदल ही होटल की ओर चल दिया।

होटल तक दवा ने कोई असर पैदा न किया था। इसलिए अपने

"सम्भवत: एक घंटे में।"

"इससे पहिले असर पैदा करना हो तो ?"

"तो एक साथ दो खा लीजिये।"

"बहुत खूब। इनका असर कितनी देर में होगा।"

"सम्भवत: आध घन्टे में।"

"मान लो इससे भी जल्दी असर करना हो तो क्या...तीन ?"

"तीन...हाँ तीन प्रयोग की जा सकती हैं—किन्तु......"

"क्या तीन के प्रयोग में कुछ खतरा है ?" मैंने जल्दी से पूछा।

"खतरा तो कुछ भी नहीं।" उसने कुछ सोचकर उत्तर दिया—"अच्छा यही होगा कि तीन पुड़ियाओं को एक साथ प्रयोग न किया जाए।"

"बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा ! मैं इस विषय में सावधानी से काम लूंगा।" मैंने वायदा किया—"किन्तु यदि ऐसी गलती हो जाए तो उस दशा में क्या करना चाहिये ?"

"कड़वा कहवा और निरन्तर हाथ-पाँवों को हिलाते रहना चाहिए। अधिक खराब हालत में बैलेडोना से भी काम लिया जा सकता है।"

"बैलेडोना तो जहर है। क्या आप मुझे उसकी एक शीशी दे सकेंगे ?"

"दे दूंगा। आप जैसे सज्जन व्यक्तियों के लिए उसपर कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं है।" नीद लाने वाली दवाई की पुड़िया का पैकिट मेरे हाथ में देते हुए वह कहने लगा—"लीजिये, आठ हैं, कई दिनों तक काम दे जाएंगी।"

फिर जब उसने बैलेडोना की शीशी दी तो मैंने पूछा—"इसकी मिकदार ?"

"दस बूंद और यदि फायदा न हो तो इतनी ही बूंदें एक घन्टे बाद फिर।"

कीमत चुकाकर एक पुड़िया चलने से पहिले मैंने वहीं पर फांक ली। फिर पैदल ही होटल की ओर चल दिया।

होटल तक दवा ने कोई असर पैदा न किया था। इसलिए अपने

हा—"मैं एक बात तुम्हारे कान में कहना चाहता हूँ। क्या मिस्टर
ाचा एक क्षण के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर सकते हैं ?"

वह इन्कार न कर सकी और साचा की ओर मुड़कर कहने
ाी—

"अलेक्ज़ेन्डर! तुम ज़रा गाड़ी में प्रतीक्षा करो, मैं आती हूँ।"

उसने स्नेहमयी दृष्टि से साचा की ओर देखा, किन्तु वह बुरा-
ा मुंह बनाकर बड़बड़ाता हुआ चला गया। इसके बाद उसने मेरे
ास आकर गम्भीरता से पूछा—"क्यों! क्या बात है ?"

"अन्दर चलो। यहाँ करने की बात नहीं है।"

वह बिना किसी आपत्ति के मेरे साथ चल दी। कमरे में पहुँचने
बाद मैंने कहा—"वास्तव में बात यह है कि तुम चीजों को देख
ो। तुम्हारे पीछे किसीने भी इन्हें छुआ तक नहीं है।"

उसके चेहरे पर विकलता के चिन्ह प्रकट हो गये। जल्दी-जल्दी
पना सब सामान देखने के बाद वह कहने लगी—"इन्हें उलट-पुलट
रके देखा अवश्य गया है।"

मेरा हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

"कोई चीज ऐसी तो नहीं थी कि जिससे रहस्य प्रकट हो जाने
ा भय हो।" मैंने घबराते हुए पूछा।

"नहीं, उसने उत्तर दिया। इसके बाद वह मेरी परेशानी देखकर
ोली—"डरो मत! मैं अपने सामान के बारे में पूरी तरह से साव-
— —।"

और अब मैं साचा के साथ शहज़ादी पाल्टज़न से मिलने जा रही हूँ।"

यह कहते हुए उसने मेरे प्रतिद्वन्द्वी साचा को ऐसी दृष्टि से देखा कि मैं जल-भुनकर रह गया। वह कहती रही—"आपको याद होगा कि मैंने तीसरा पहर उनके मकान पर ही बिताने का वचन दिया था। रात के भोजन पर तुम भी आ जाना। एम० वैलटस्की आपसे मिलने को भी कह रहे थे।"

"हां, मैं भी वहीं जाने के लिए सोच रहा हूँ।" मैंने कहा, "मैं समझता हूँ कि मारग्रेट का काम आज ही समाप्त हो जाएगा। इसके बाद हम चलने की तैयारी शुरू कर देंगे।"

"तो कब जाने का विचार है?" उसने शीघ्रता से पूछा।

"कल एक बजे की गाड़ी से।"

"कल!" साचा ने तिलमिलाकर पूछा—"आप बहुत जल्दी वापस जा रहे हैं?"

"हां बेटे।" मैंने उसकी विकलता पर प्रसन्न होकर मन ही मन कहा—"अब ज़रा तू भी प्रेम करने का मज़ा देख।"

मूछों के नीचे छिपा उसका होंठ ज़ोर-ज़ोर से कांप रहा था। वह चिन्तित स्वर में कहने लगा—

"कृपया एक-दो दिन ठहर जाइये। कल रात श्रीमती अगनातीफ के यहाँ नाच होगा और आपकी श्रीमतीजी के बिना सारी महफिल सूनी दिखाई देगी। कल के दिन तो कम से कम मत जाइये।"

"एक बड़े ज़रूरी काम से हम तुरन्त वापस लौटने के लिए विवश हो रहे हैं वरना हमें ठहरने में तनिक भी इन्कार न था।" हैलियन ने उत्तर दिया।

"आप नहीं जानते कि मेरी श्रीमतीजी वास्तव में पैरिस के सुख-वैभव के लिए बेताब हैं।" मैंने साचा को और भी अधिक जलाने के लिए कहा। हैलियन की तरफ मुड़कर बोला—"क्यों प्रिय! हैनरी डी सैन्ट जरमैन तुम्हें कितनी बेचैनी से याद कर रहा होगा।"

इसके बाद मैंने टोपी उठाकर सलाम किया और जाने के लिए मुड़ना ही चाहता था कि मुझे मेडम बाजल डेलाने की बात याद आई।

"सुनो प्यारी!" मैंने हैलियन की ओर हाथ से संकेत करते हुए

हूँ। उसके पाँच मिनिट बाद ही तुम मिलीं और कहने लगीं कि मैं सीधी श्रीमती वैलटस्की के पास से ही आ रही हूँ। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि तुम उनके पास गई हुई थीं, तो उन्हें नौकरानी के हाथ सन्देश भेजने की क्या आवश्यकता थी ?"

"ओह ! प्यारे आर्थर !" वह मधुर दृष्टि से देखते हुए कहने लगी—"तुम व्यर्थ में सन्देह करते हो।" और इसके बाद वह बहुत ही उदास स्वरों में बोली—"प्रिय ! कोई मौका आएगा जब कि तुम मेरी इन धृष्टताओं को क्षमा करने के योग्य समझोगे। रह गई वह अध्यापिका, उससे मैं स्वयं ही निपट लूंगी।" फिर सहसा कहने लगी—"अच्छा, अब आज्ञा दो, साचा और श्रीमती पाल्टजन मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

वह बाहर जाने के लिए मुड़ी, किन्तु दो कदम चलकर रुक गई और मुझे हाथ के इशारे से बुलाकर दबी हुई आवाज में कहने लगी-

"निश्चिन्त रहना, मैं कल एक बजे की गाड़ी के लिए तैयार रहूँगी।"

फिर वह दौड़ती हुई चली गई और मैं एक ठंडी सांस लेकर कान्स्टनटाइन वैलटस्की के मकान पर जाने के विचार से अंग्रेजी घाट की ओर चल दिया।

५

वैलटस्की मेरी प्रतीक्षा में ही था। मालूम हुआ कि जायदाद से सम्बन्धित सारे कागजात तैयार होकर मारग्रेट के पास पहुँच चुके हैं और उसने अपने वकील से सलाह करके उनपर हस्ताक्षर भी कर दिये हैं। मैंने एक नजर उनको देखा। जब हम उस काम से निवृत्त हो गये तो हमारे वापस जाने की चर्चा छिड़ी। वैलटस्की ने मेरे इतनी जल्दी वापस लौट जाने पर खेद तो प्रकट किया परन्तु किसी कारण से अधिक दिन रूस ठहरने पर जोर नहीं दिया।

फिर हम दोनों साथ-साथ उस बड़े कमरे में गये, जहाँ श्रीमती वैलटस्की, सोफी और फ्रान्सिसी अध्यापिका सब इकट्ठी बैठी हुई थीं।

मैंने देखा कि उन तीनों में डीला बहुत अधिक प्रसन्न दिखाई देती थी। सम्भवतः इसलिए कि कल हैलियन को साथ लेकर मुझे यहाँ से वापस लौट जाना था।

यह जानने के लिए कि मेडम वाज़ल डेलाने उस दिन वास्तव में स्वामिनी की आज्ञा से होटल में गई थी, मैंने ओल्गा से कहा—

"आपने मेरी श्रीमतीजी की पैरिसी दर्ज़न का पता पुछवाया था न? इसका उत्तर वह स्वयं ही मिलने आएंगी तो दे जाएंगी।"

"पैरिसी दर्ज़न का पता?" श्रीमती वैलटस्की ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

"हां।" फ्रान्सिसी अध्यापिका ने, जिसके कपोल इस प्रश्न पर लाल हो गये थे, जल्दी से कहा—"आपको शायद याद नहीं रहा कि यह काम आपने मेरे ज़िम्मे डाला था।"

"हाँ, शायद ऐसा हुआ हो, इस वक्त तो मुझको याद नहीं है।"

"आपकी आज्ञा पाकर मैं उनसे पता पूछने गई थी।" मैडम वाज़ल डेलाने बोली।

"मैडम वाज़ल डेलाने मेरी श्रीमती को तलाश करते-करते होटल तक गईं। और......"

किन्तु ओल्गा ने मेरी बात को बीच में ही काटकर कहा—"योजनी, तुम बड़ी स्वामिनी-भक्त और नेक लड़की हो।"

"और मामा मिलनसार भी।" सोफी ने इस प्रशंसा में भाग लेकर शीघ्रता से कहा—"इनको यहाँ आए अभी केवल दो ही सप्ताह हुए हैं परन्तु यह अभी से हम सबको, यहाँ तक कि भाई साचा को भी प्यार करने लगी हैं।"

"चुप चंचल लड़की।" उसकी माँ ने उसे घूरकर कहा—"बड़े भाई के लिए ऐसा शब्द नहीं कहा करते।"

"इस बच्ची को ऐसी बातें कौन सिखाया करता है?" कान्सटनटाइन ने क्रुद्ध होकर कहा।

इस बात पर चारों ओर सन्नाटा छा गया। मैं जाने के लिए उठा। मैं यह भली भांति समझ गया था कि ओल्गा ने इस समय वाज़ल डेलाने के बचाव के लिए जो कुछ कहा, उससे यह साफ़

ता था कि वह श्रीमती वैलटस्की का सन्देश लेकर नहीं, बल्कि श्र
च्छा से होटल में गई थी। ईश्वर को धन्यवाद है कि हैलियन
दर्शिता से कोई ऐसी वस्तु उसके हाथ न लगी जो हमारी गिरफ्त
कारण बनती।

सीटी बजाता हुआ मैं नेवा नदी के किनारे-किनारे चल रहा थ
नदी में ठहरे जहाज़ और नौकाएं सामान की आखरी खेप लाद
थे।

एडमायरिटी स्क्वायर के एक कोने में मुझे बैरन फ्रेडरिक
मिला। हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे करते हुए वह मुस्कु
कर कहने लगा—"कर्नल लेनाक्स! खेद है कि अब मुझे आपके स
मिलकर खाना खाने का अवसर न मिलेगा। सुना है, आप कल
रहे हैं ?"

"हाँ! परन्तु आपको कैसे मालूम हुआ ?" मैंने विस्मित होक
पूछा—"मुझे पासपोर्ट के लिए प्रार्थना पत्र भेजे हुए तो दो घंटे
अधिक नहीं हुए ?"

"ओह! आप इन बातों को नहीं समझ सकते ?" उसने अर्थ-पू
स्वरों में कहा—'आप कुछ दिन यहाँ और रहते तो शायद समझ लेते
वास्तव में कोई बात ऐसी नहीं होती जो मुझको मालूम न हो। मे
कुशलता इसी में है कि मैं सब बातों की जानकारी रखूं।"

यह कहते हुए वह मेरे साथ-साथ चलने लगा।

"शायद कुछ दिनों के बाद आप दोबारा फिर पधारेंगे ?" उस
पूछा।

"जी हाँ! विचार तो यही है। आगे जो भगवान् को स्वीका
हो। मैं वास्तव में एक बहुत जरूरी काम से पेरिस जा रहा हूँ।"

उसने एक हल्का-सा ठहाका मारकर मेरी बात को बीच में ह
काट दिया। बोला, "मैं समझ गया, वह काम आपके धेवते गाचा रे
सम्बन्ध रखता है। क्यों ?" इसके पश्चात् एक विचित्र प्रकार क
व्यंगपूर्ण हंसी उसके होठों पर छा गई।

इसके बाद वह प्रवेश मन्त्रालय में, जो उसी चौक के एक ओर बन
हुआ था, चला गया। मैं लज्जा और बोखलाहट के कारण उसे

नमस्कार तक का उत्तर न दे सका। क्रोध भरी दृष्टि से उसकी गायब होतीं हुई सूरत को देखकर मैं बड़बड़ाया—"प्रत्येक व्यक्ति यह समझता है कि मैं अपनी पत्नी को साचा के प्रेम से बचाने के लिए ही पैरिस जा रहा हूँ। भगवान् उनका बेड़ा गर्क करे।"

पांचवाँ परिच्छेद

विदा की तैयारियाँ

१

जब मैं वापिस होटल में पहुँचा तो मुझे तीन पत्र आये हुए मिले। पहला पत्र हैलियन का लिखा हुआ था।

"प्यारे आर्थर, जल्दी करो। मैं कपड़े बदलकर शाहजादी के डिनर पर जा रही हूँ। तुम जितनी भी जल्दी सम्भव हो, आ जाना।"

तुम्हारी ही
प्राणों से प्यारी पत्नी

मैंने पत्र को तह करके रख दिया और कहा—

"अच्छा हुआ चली गई। मनों में द्वेष-भाव रखते हुए दिखावे का स्नेहमयी भाव सर्वदा कष्टदायक सिद्ध होता है।"

दूसरा पत्र खोला। वह बोरिस का लिखा हुआ था। उसने मुझे और हैलियन को अपने जहाज पर आने के लिए निमन्त्रित किया था वह जहाज क्रान्सटाट में लंगर डाले खड़ा था। उसने यह भी प्रार्थना की थी कि हम दोनों कुछ दिनों के लिए उसके जहाज पर ही अतिथि बनकर रहें। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उसको मेरे और हैलियन के जाने के निश्चय का पता नहीं है।

तीसरे में कर्नल लेनावस और उनकी श्रीमती जी का पासपोर्ट था।

अन्तिम पत्र को पढ़कर मुझे असाधारण सन्तोष और शान्ति ऽ
हुई। चलने की सब तैयारियाँ हो चुकी हैं। मैंने सोचा—"मैं
एक बजे दिन की गाड़ी से हैलियन को अपने साथ लेकर विद
जाऊंगा और भगवान् को धन्यवाद दूंगा कि उस बला के चक्कर से
जाने में सफल हो गया।

वहाँ के अधिकारियों के दिलों में अभी तक किसी प्रकार की श
या सन्देह नहीं हुआ था। पिंजरे की खिड़की खुली हुई थी और :
बड़ी सुविधा से बाहर निकल सकता था।

जल्दी-जल्दी कपड़े पहनकर मैं शहज़ादी पाल्टजन के मकान
ओर चल पड़ा। डिनर का प्रबन्ध हर प्रकार से पूरा हो चुका थ
एक से एक बढ़कर सुन्दर स्त्रियां और युवा पुरुष वहां उपस्थित थे
अतिथि गण अपने सरकारी वस्त्रों में सुसज्जित थे। एक मैं ही ऐ
व्यक्ति था जिसने काले रंग का सूट पहिना हुआ था।

वहाँ उपस्थित शौकीन युवकों में साचा सबसे छबीला बना हु
फिर रहा था। उसकी तेज तातारी आँखों में विचित्र-सी प्रसन्नत
चमक रही थी, जिसको देखते ही मैं कलेजा थामकर रह गया। अशा
शंकाएं मेरे हृदय को विकल करने लगीं। कम से कम आधे घंटे त
मेरी यही दशा रही और इस बीच में मैं उस उत्सव का लेशमात्र भ
आनन्द प्राप्त न कर सका।

जब कहवे और शराब का दौर चलने लगा तो दो-चार पे
पीकर मैं भी सींग कटे बछड़ों में सम्मिलित हो गया और मैंने तुर्क
मिस्री, स्पेन, अमेरिका तथा मेक्सिको में अपनी नौकरी के समय की
कितनी ही विचित्र कहानियां सुना डालीं।

शहज़ादी डोजिया मलिन तथा उदास सूरत बनाए एक ओर चुप-
चाप बैठी थी। वह न तो उन मनोरंजक बातों में भाग ले रही थी
और न ही कोई किस्सा सुनकर हंसती थी। रह-रहकर उसकी दृष्टि
साचा की ओर उठ जाती थी, जो उसकी उपेक्षा करके हैलियन को
प्रसन्न करने में लगा था।

यह सोचकर मैं बहुत सन्तुष्ट था कि उसकी यह सब प्रेमलीला
कल दिन के एक बजे तक समाप्त हो जाएगी।

और यही सोचकर जहाँ तक सम्भव था, मैंने अपनी चिन्ताओं को शराब के पैगों में डुबो देने का प्रयत्न किया। विदा होने के समय तक मैं उसी में झूमता रहा।

अन्त में जब वहाँ से चलने का समय निकट आ गया तो हैलियन शहजादी से कहने लगी—

"प्यारी शहजादी! आज की पार्टी बहुत ही सुन्दर और सफल रही। काश, मैं ऐसे कई उत्सवों में भाग ले सकती। परन्तु वास्तव में मेरे लिए इस देश में यह अन्तिम पार्टी है।"

"अन्तिम?······क्या मतलब?" श्रीमती पाल्टज़न ने विस्मय के साथ आँखें फाड़कर पूछा।

"बात यह है।" मैंने कहा—"कल हम आपके देश से विदा हो रहे हैं। पासपोर्ट इस समय मेरी जेब में पड़ा हुआ है।"

"ओह! आप जा रहे हैं और अपनी पत्नी को भी साथ ले जाना चाहते हैं।" शहजादी ने अविश्वास के स्वर में कहा—"नहीं, मैं इसकी आज्ञा न दूंगी। सोचिये तो भला, श्रीमती अगनातीफ के यहाँ कल नृत्य-उत्सव होने वाला है। वह उत्सव ऐसा होगा जो हमेशा याद रहेगा। ऐसी हालत में यह किसी प्रकार भी उचित नहीं कि हम आपको इस उत्सव की सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु छुपाकर साथ ले जाने की स्वीकृति दें। नहीं साहब, ऐसा नहीं हो सकता और न ही होगा।"

"परन्तु मजबूरी है।" मैंने कहना आरम्भ किया—"एक बहुत

हैलियन ने दबे हुए आवेशपूर्ण स्वरों में इस प्रकार कहा जैसे वह भेंट की बेताबी से प्रतीक्षा कर रही हो।

यह कहते-कहते उसका शरीर तन गया, आँखें तेजी से चम लगीं और वैसी ही प्रबल इच्छा उसके अन्दर उत्पन्न हो गई। ज बच्चों को सुन्दर खिलौनों की प्रतीक्षा में होती है।

"यह बिल्कुल ठीक है।" मैंने विनम्र स्वर में शहज़ादी से कहा· "किन्तु सच जानिये, वह एक ऐसा ही आवश्यक काम है जिसके ि हम पैरिस जाने पर विवश हैं।"

"मैं समझ गई कि आपपर मेरी प्रार्थना ने कोई प्रभाव न डाला। फिर भी श्रीमती लेनाक्स से मुझे पूर्ण आशा है कि जो क मैं नहीं कर सकी, वह अपने सौंदर्य तथा मधुर स्वर से सरलता पूव कर लेंगी।" शाहज़ादी ने हंसकर कहा, और इसके बाद हैलियन से- "वायदा करो कि तुम अपने पति को इस बात के लिए सहमत व लोगी।"

"खैर देखिये,···मैं इस विषय में कुछ नहीं कह सकती।" हैलि यन ने रुकते हुए उत्तर दिया—"मैं इसका सही उत्तर कल दूंगी।"

"ओह! परन्तु मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम सफल ह जाओगी।"

"जी नहीं! अबकी बार नहीं।" मैंने कुछ ऐसी कठोरता के सा कहा कि शहज़ादी चौंककर मेरी ओर देखने लगी। इसके बाद उस साचा की ओर भी दयनीय दृष्टि से देखा, जो मेरी पत्नी के कान ं कुछ कहने के लिए दौड़ा चला आ रहा था।

उसे देखते ही मैं हैलियन का हाथ अपने हाथ में लेकर जल्दी-जल्द सीढ़ियों पर से उतरने लगा और इससे पहले कि साचा हमारे समी आ सकता, मैं हैलियन को गाड़ी पर बिठाकर होटल की ओर ब गया।

२

हैलियन सारे रास्ते चिन्तित और मौन रही। शायद इसलिए कि मैं उसकी इच्छा के विरुद्ध कल एक बजे यहाँ से चला जाना चाहता था। मैं अपने मन में प्रसन्न था। मेरे प्रतिशोध की दुधारी तलवार एक ही समय में उसे और साचा वैलटस्की को घायल कर रही थी।

कमरे में पहुंचकर मैंने उस सन्नाटे को तोड़ते हुए कहा—

"तुमने सुना पासपोर्ट तैयार हैं?"

"हाँ—आँ।"

"हमारे रूस देश से वापस लौटने के लिए।"

हैलियन चुप थी।

"कल यहाँ से एक बजे चलना है, इसलिए सब सामान तैयार रहना चाहिये।"

"हाँ—आँ।"

बस एक शब्द में ही सब उत्तर थे जो उसने दिये। और वह भी इस प्रकार से जैसे हर बार 'हाँ—आँ' शब्द के साथ एक आह उसके हृदय से निकलती थी।

मैंने इस बात को तूल देना उचित न समझा और यह कहकर विदा ली—"अच्छा जाओ—रात कुशलतापूर्वक बीते।"

वह भी यही शब्द कहकर अपने सोने के कमरे में चली गई। मैंने देखा कि उसका मुख इस समय बहुत पीला और सुस्त था।

उस रात मैंने नींद लानेवाली दवा की पुड़िया नहीं खाई। रात का समय बिताने के लिए मैं पिकेट क्लब चला गया। उस जगह मैंने ताश की दो-एक बाजियाँ खेलीं; किन्तु मेरे भाग्य ने साथ न दिया। मैं हर बार हारा।

दिन निकलने में थोड़ी देर शेष थी कि मैं अकेला ही होटल की ओर चल दिया। वहाँ पहुंचकर मैंने अन्तिम पैग और पिया। फिर सहायक मैनेजर को यह आज्ञा देकर कि ठीक दस बजे मुझको जगा देना, मैं अपने कमरे में सोने के लिए चला गया।

उस वक्त छः बजे का समय था। थकावट दूर करने के लिए

र घंटे की नींद काफी थी। जब मैं बैठक में से होकर गया तो देखा ; हैलियन के कमरे का लैम्प जल रहा था। फिर एक मद्धम-सी सरसराहट से मुझे पता चला कि वह अब तक सोई नहीं है और सम्भवतः सामान ठीक करती फिर रही है।

मुझे लगभग आधा घंटा करवटें बदलते हुए बीत गया। इसके बाद इस विचार से कि शायद कहीं दिन निकल आने पर बिल्कुल ही नींद उचट जाए, मैंने दवा की एक पुड़िया और फाँक ली और तुरन्त सो गया।

नींद में मुझे अनेकों प्रकार के सपने दिखाई दिये और कई प्रकार की आवाज़ें सुनाई दीं। एक बार तो ऐसा लगा जैसे कोई दरवाजा खटखटा रहा है और कह रहा है—"उठिये सरकार दस बज गये।"

इसके बाद फिर सपने दिखाई देने लगे। यहाँ तक कि एक आवाज जो पहिले से भी कहीं ज्यादा तेज़ थी, सुनाई दी—

"हज़ूर! अब तो ग्यारह भी बज गये। उठिये, नहीं तो देर हो जाएगी।"

परन्तु मैं तो उस समय तुर्की हूरों के समूह में गुलाम बना बैठा था। सोते में एक गाली देकर मैं फिर सो गया।

सहसा मुझे लगा जैसे एक सुन्दर अप्सरा अर्धनग्न दशा में बारीक वस्त्रों में सुसज्जित, आभूषणों से सजी, पर्दों के पीछे से निकलकर धीरे-धीरे कदम रखती हुई मेरी ओर आ रही है। मेरे समीप आकर मानो वह मेरे हृदय से लिपट गई और स्नेहमय चुम्बन देते हुए बोली—

"प्राणप्रिय! मैं आपसे अपने अपराधों की क्षमा-याचना और विदा लेने आई हूँ। देखो मुझे भूल मत जाना, कभी-कभी याद अवश्य कर लिया करना।"

यह हैलियन थी—मैंने उसे पकड़ने के लिए बेताब होकर हाथ बढ़ाया, परन्तु वह एक तय किया हुआ कागज़ मेरे हाथ में देकर भाग गई—

"ठहरो! ठहरो!" मेरे मुंह से एकबारगी निकला। और इसके बाद मेरी आँखें खुल गईं।

उस समय सूर्यदेव आकाश के मध्य विराजमान थे और होटल का

नौकर मेरे कमरे का दरवाजा खटखटाकर कह रहा था—"साहब, आप तो दस बजे उठने को कह रहे थे किन्तु अब तो ग्यारह भी बज चुके हैं।"

मैं चौंककर उठा और आँखें मलते हुए देखने लगा।

कहाँ मैं, कहाँ हैलियन और कहाँ वह तुर्की महल का दृश्य!…

"बारह!" मैंने क्रुद्ध होकर नौकर से कहा—"तुमने इससे पहिले ही क्यों नहीं जगाया?"

"सरकार! मैं तो कई फेरे आपके कमरे के कर गया, परन्तु आप तो कुछ ऐसी गहरी नींद में सोये कि बार-बार जगाने पर भी न जागे। वह तो आपकी श्रीमतीजी का आदेश था कि बारह के बाद आपको अवश्य जगा दिया जाए, वरना मैं शायद तीसरी बार आने का साहस ही न करता।"

"अच्छा जाओ!" मैंने उससे कहा और एक जोर की अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया।

डाक के जाने में एक घंटा शेष था और मेरी तैयारियों के लिए एक घंटा काफी था।

"परन्तु आह! यह मेरे हाथ में क्या है?" एक मुड़ा हुआ कागज मैंने खोलकर देखा। घसीट में कुछ लाइनें लिखी हुई थीं—

"प्यारे आर्थर! क्षमा करना। मैं तुमसे सहसा अलग हो रही हूँ। श्रीमती अगनातीफ के नाच में सम्मिलित हुए बिना वापस जाना मुझको स्वीकार नहीं। मेरी इच्छा बहुत प्रबल रूप धारण कर चुकी थी और मैं उसपर काबू न पा सकी। इसलिए तुम मेरी बिल्कुल भी प्रतीक्षा मत करना और निर्णय के अनुसार एक बजे की गाड़ी से तुम बर्लिन चले जाना। मैं तुमको फिर चेतावनी दे रही हूँ कि तुम मेरी वजह से मत रुकना।

तुम्हारी
हैलियन"

मैंने पत्र को पलटकर देखा। लिखावट उसी की थी। किन्तु वह वापस जाते-जाते क्यों रुक गई? यह रहस्य मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

बहुत देर तक मैं उस पत्र की विचित्र लिखावट को विस्मित नेत्रों से देखता रहा और सोचता रहा कि···वह एक सार्वजनिक नृत्य के उत्सव में सम्मिलित होना क्योंकर पसन्द कर सकती है ? इसके बाद कुछ देर तक मैं सिर को पकड़कर बैठा रहा ।

मेरा मस्तिष्क आवेश से बेकाबू हो रहा था। दिल बार-बार मुझे धिक्कार रहा था—'ओ बेसमझ, एक दुश्चरित्रा स्त्री के सौंदर्य पर रीझकर तू उस नेकी की प्रतिमा, उस वफा और सतीत्व की देवी को भूल गया, जो काले कोसों दूर बैठी हुई तेरी खैर मना रही है। एक तो हैलियन थी जो अन्त में साथ छोड़कर चली गई, और एक ओर वह तेरी असली पत्नी लारा है जो शुरू से ही तेरे लिए मंगल-कामना कर रही है। इन दोनों को अच्छी तरह पहचान ले और अपनी इन नादानियों को छोड़ दे । अब तक जो कुछ हुआ उसे भूल जा। पासपोर्ट तेरे पास है, जा अपनी यात्रा पूरी कर।"

मैं उठकर खड़ा हो गया। हैंड बैग को पूरा किया और उसे हाथ में लेकर मैं सैलून में जा पहुंचा ।

सवा बारह बज गये थे। दस बजे का परोसा हुआ नाश्ता ठंडा हो गया था । मैंने एक-दो ग्रास लिचलिचे टोस्ट के और एक-दो ग्रास मटन कटलट के खाए, फिर दो-एक घूंट ठंडे कहवे के पीकर नाश्ते को एक तरफ सरका दिया ।

पिंजरे का दरवाजा खुला हुआ था। वह कोई बहुत नादान चूहा होगा जो ऐसे मौके से लाभ न उठाए। होटल से रेल के स्टेशन तक, और इसके बाद ऐटकोहनन का सफर, फिर मैं दुनिया भर के बैरन फ्रेडरिकों को उंगली पर नचा सकता था ।

जाने से पहिले मैंने हैलियन के कमरे पर अन्तिम दृष्टि डाली। हृदय की निर्बलता देखिये कि तब भी एक ठंडी आह मेरे मुख से निकल गई। मैं शीघ्र ही उस विचित्र स्त्री से अलग होना चाहता था।

अपने हृदय पर पत्थर रखकर मैंने उन सब भावनाओं को दबा लिया। स्वतन्त्र पथ मेरे सम्मुख था और उसपर चलने का मैं पूर्ण निश्चय कर चुका था। कि सहसा···

मुझे कई बार खयाल आया कि भगवान् ने जीवन की छोटी से

बस, मेरा रहा-सहा सन्देह भी दूर हो गया। यदि हैलियन और साचा में पहिले से ही कोई बातचीत न हो गई होती, तो अवश्य ही साचा हैलियन को विदा करने आता। उसका न आना इस प्रेम-षड्यन्त्र की जंजीर की सबसे मजबूत कड़ी थी।

"भोली हैलियन और मूर्ख साचा।" मैं भावावेश में बड़बड़ाया, "तुम दुनिया देखे हुए एक व्यक्ति को धोखा देने और उस पर अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा करते हो? परन्तु नादानो! तुम अपने शत्रु की शक्ति को क्या जानो। आओ, अब मेरे प्रतिशोध का नाटक देखने के लिए तैयार हो जाओ।"

३

मन में कुछ दृढ़ निश्चय करके मैंने बैग उठाकर हाथ में ले लिया और होटल का बिल चुकाकर यह कहते हुए चल दिया कि मैं एक बजे की डाक से जा रहा हूँ, परन्तु मेरी श्रीमतीजी अगनातीफ के नाच के बाद आएंगी।

ड्योढ़ी में जाकर मैंने घड़ी देखी और फिर किराये की गाड़ी में बैठकर कोचवान को स्टेशन चलने के लिए आदेश दिया। साथ ही मैंने उससे यह भी कह दिया—"ज़रा ध्यान से गाड़ी चलाना। मैं ज़रा ऐसे ही स्वभाव का मनुष्य हूँ। गाड़ी की अधिक भाग-दौड़ पसन्द नहीं करता।"

कुछ तो मेरे कहने से और कुछ इसलिए कि हल्की बर्फ गिरने के कारण बाज़ारों में फिसलन हो गई थी, उसका घोड़ा इस चाल से चला कि स्टेशन पर पहुंचते-पहुंचते एक बजे की डाक सीटी देकर चल दी थी।

यह बताना व्यर्थ है कि मैंने इस गाड़ी को जान-बूझकर ही निकाल दिया था। तो भी गाड़ी को जाते हुए देखकर मेरे सारे शरीर में गर्मी की एक तेज़ लहर-सी दौड़ गई। गाड़ी का चला जाना मेरे लिए [illegible]-दान की खिड़की का बन्द हो जाना था। अब यदि मैं इस [illegible] की भूमि से विदा होना भी चाहता, तो चौबीस घंटे से पहिले न [illegible]

लगा। आवेश में शायद मैं कुछ कह जाता, किन्तु ठीक उसी समय दरवाजा खुला और पाल्टज़न शहज़ादी ने अन्दर प्रवेश किया।

"आह! कर्नल साहब" उसने प्रसन्नता से दोनों हाथ मलते हुए कहा—"नृत्योत्सव के आकर्षण ने आखिरकार आपको जाने से रोक ही लिया। अब मैं दस बजे आपको और आपकी श्रीमती जी को लेने आऊंगी। कृपया तैयार रहियेगा।"

इसके बाद वह और हैलियन एक कोने में बैठकर नाच के विषय में बातचीत करने लगीं और साचा एकान्तवास का सुख प्राप्त होता न देख क्रुद्ध होकर वहां से चला गया।

आखिरकार जब तीसरा पहर ढल गया तो शहज़ादी पाल्टज़न यह कहते हुए उठी—

"अब मैं जाती हूँ। मुझे भी उस उत्सव में कुछ प्रबन्ध करना है। परन्तु रात को तैयार रहियेगा। मैं आप दोनों को लेने आऊंगी।"

"तुम !" उसने बेचैनी के स्वर में कहा—"तुम······प्यारे आर्थर वापस आ गये ! हे मेरे भगवान् ! तुमने अपने जाने को क्यों स्थगित कर दिया ?"

"मेरी प्राण-प्यारी !" मैंने संक्षेप में उत्तर दिया—"मैं अवश्य चला जाता, किन्तु ठीक उस समय जबकि मैं स्टेशन पर पहुंचा, गाड़ी चल दी। खैर, कुछ बात नहीं ! मुझे इसका अफसोस नहीं है। अब हम दोनों साथ ही साथ वापस चलेंगे।"

इसके बाद उसका पति होने के नाते मैंने उसके कई चुम्बन इतनी तेज़ी के साथ ले डाले कि साचा और हैलियन दोनों तिलमिला कर रह गये।

एक सफल अभिनेता की भाँति साचा ने कहा—"खैर, आपका रह जाना अफसोस के लायक नहीं। जो काम आपने हमारी प्रार्थना पर नहीं किया था वह मजबूरी ने स्वयं ही करा दिया। अब तो आप उस नृत्योत्सव में अवश्य ही आइएगा न ?" और इसके बाद तनिक मुस्कराकर बोला—"सच पूछिये तो आपकी श्रीमती जी को ठहराने की बात मैंने शहज़ादी पाल्टजन की सलाह से की थी। इतने बड़े उत्सव में श्रीमती जी को सम्मिलित होने से वंचित रखना एक ऐसा अपराध था जिसका प्रायश्चित नहीं किया जा सकता था।"

"चलिये अब तो यह प्रबन्ध आपकी इच्छा अनुसार हो गया।" मैंने बारी-बारी से दोनों की ओर देखते हुए कहा।

"हां"—मेरी पत्नी ने कठिनता से क्रोध को दबाकर उत्तर दिया—"तुम्हारे जाने के बाद मेरी नाच की पोशाक भी आ गई। मेरे कमरे में ही रखी है।"

कहकर वह दौड़ती हुई गई और कमरे के दरवाज में ही गड़ी हुई वह सुन्दर पोशाक दिखाने लगी।

"अब चूंकि आप वापस आ गये हैं," साचा ने दोबारा वार्तालाप में भाग लेते हुए कहा—"इसलिए रात के जलसे में अवश्य पधारियेगा। जलसा दस बजे है और आपकी श्रीमती जी ने माजरका नाच में मेरे साथ नाचने का वायदा भी किया है।"

उस शैतान के इतने अधिक निस्संकोच भाव से मेरा खून उबलने

जाओ, अब भी इस रास्ते को छोड़ दो वरना बाद में पछताने के सिवाय और कुछ भी हाथ न आयेगा।"

इतना कहकर मैं मन ही मन कुढ़ता हुआ पिकेट क्लब चला गया और रात के नौ बजे तक वहीं पर रहा।

श्रीमती अगनातीफ के नृत्य-उत्सव में सम्मिलित होने का मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया था। इसलिए नहीं कि मुझे उस उत्सव से कोई विशेष दिलचस्पी थी, बल्कि हैलियन की वजह से मैं उसमें जा रहा था।

होटल में वापिस पहुंचकर मैंने जब अपने बड़े कमरे में प्रवेश किया, तो हैलियन के सोने के कमरे का दरवाज़ा थोड़ा-सा खुला हुआ था। बैठक के लैम्प तो नहीं जलाए गये थे, किन्तु उसके कमरे से गैस की रोशनी बाहर आ रही थी, जो फर्श पर फैली हुई थी।

निःशब्द कदमों से चलता हुआ मैं जब उसके कमरे के दरवाज़े के पास पहुंचा तो मुझे एक अजीब दृश्य दिखाई दिया। नाच की पोशाक पहिने, हैलियन नेकी के अधिकारी देवता की भांति अपने बिस्तर के एक तरफ घुटनों के बल बैठी प्रार्थना कर रही थी। मेरी तरफ उसकी पीठ थी। उसके मुख से किसी भी तरह के शब्द नहीं निकल रहे थे। फिर भी मैंने उसकी हरकतों से मालूम किया कि वह किसी ऐसे व्यक्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना कर रही है जो अब इस संसार में नहीं है।

उसे उस पवित्र कार्य में तल्लीन देखकर किसी भी प्रकार की बाधा डालना मैंने उचित नहीं समझा, और मैं उसी तरह दबे पाँव अपने कमरे में चला गया, परन्तु कपड़े बदलते हुए कई बार यह खयाल मेरे मन में अवश्य आया, कि वह कौन होगा जिसके लिए हैलियन इतनी दत्तचित्त होकर भगवान् से प्रार्थना कर रही थी; उसका भाई?... बहिन?... या पति? अनेकों प्रश्न मेरे मस्तिष्क में उत्पन्न हो रहे थे। हैलियन के जीवन का यह बिल्कुल ही नया अध्याय था, जो आज सहसा मेरे देखने में आया।

ज़रा-सा किवाड़ खोला। क्या देखता हूँ, वह इतनी आराम-तलब जो अपने हाथ से ज़रा-सा भी परिश्रम करना पसन्द नहीं करती, हाथ में लिए नाच की पोशाक सी रही है।

"आह? यह रूप क्या साचा को मोहित करने के लिए कुछ था?" मैंने व्यंगपूर्ण स्वरों में पूछा—"तभी तो इसमें और अ कतर-ब्योंत की जा रही है। शायद इसकी चोली तंग नहीं है। इसके बगैर सीने के उभार में कमी रह जाएगी, जिसे कि वह ताता शैतान पसन्द करता है।"

"नहीं," उसने साधारण ढंग से उत्तर दिया—"एक चीज़ शेष गई थी, मैं इसमें वही जोड़ रही हूँ।" और वह बराबर उसको सी चली गई।

"मतलब हर तरह से एक ही है, यानी ऐसी सुन्दरता उत्प करना जो उस मनचले प्रेमी को अपनी ओर आकर्षित कर सके। क्य है न ठीक?"

"ओह! तुम समझे नहीं।" उसने आशा के प्रतिकूल उस छेड़ छाड़ की उपेक्षा करते हुए नर्मी से उत्तर दिया—"मैं चोली को तं और चुस्त करना नहीं चाहती, क्योंकि वैसे भी वह मेरे शरीर प बिल्कुल ठीक आती है। वास्तव में दर्जन इसमें जेब लगाना भूल गई थी, वही लगा रही हूँ।"

"परन्तु एक जेब तो इसमें पहिले से ही मौजूद है; फिर दूसरी जेब लगाने से क्या लाभ?"

वह कपड़ा हाथ से रखकर खड़ी हो गई और बेचैनी की मुद्रा से कहने लगी—"आर्थर! मेरा दिमाग़ पहिले से ही बहुत परेशान है। तुम मुझे अब व्यर्थ के ऐतराज़ उठाकर और अधिक परेशान मत करो।" और फिर एक बारगी आँखों में आँसू भरकर थरथराती हुई आवाज़ में उसने कहा—"जाओ! भगवान् के लिए अपने काम से काम रखो, और मुझे मेरे हाल पर ही छोड़ दो।"

"ओह! मैं समझ गया कि यह परेशानी केवल साचा की वजह से ही है। खैर तुम जानो। पर इतना मैं अवश्य कहे देता हूँ कि यह राह जिसपर कि तुम चलना चाहती हो, अत्यन्त भयानक है। साचा

करती है कि रूस-सम्राट् जार इस नृत्य में अवश्य पधारेंगे ।"

मैंने देखा कि अगनातीफ के महल के दाहिनी ओर कासक युवकों की दोहरी पंक्तियाँ भाले लिये, विशेष वर्दियाँ पहिने और सिरों पर ऊंची समूरी टोपियाँ ओढ़े खड़ी थीं। बीस से भी अधिक सुन्दर युवक अगनातीफी निशान की पोशाक पहिने ड्योढ़ी की देखभाल करते हुए घूम रहे थे।

एक क्षण के बाद जब हमने ड्योढ़ी में प्रवेश किया, तो बिजली के तेज प्रकाश में हेलियन की रंगत बहुत ही पीली और सफेद दृष्टिगोचर हो रही थी।

संगमर्मर के चौड़े जीने के पास मुझे शहजादी का पति राजकुमार पालटजन खड़ा दिखलाई दिया। परिचय के बाद उसने अपनी श्रीमती और मैंने अपनी पत्नी हेलियन को सहारा देकर सीढ़ियां चढ़ाना शुरू किया। ऊपर वाली सीढ़ी के पास बैरन फ्रेडरिक खड़ा था। वह आने-जाने वाले व्यक्तियों को तेज़ नजरों से देख रहा था। उसे देखने के बाद जार के आने के बारे में मेरा रहा-सहा सन्देह भी दूर हो गया, क्योंकि बैरन का आना ही बादशाह ज़ार के आने का सब से बड़ा प्रमाण था। हेलियन ने भी उसकी तरफ देखा और वह सहसा लड़खड़ा-

हुए ? जल्दी करो, दस बजने वाले हैं और शहजादी खड़ी हुई हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

वह हैलियन थी। उस हैलियन से कितनी भिन्न, जो थोड़ी देर पहिले इतनी तल्लीनता के साथ किसी केलिए भगवान से प्रार्थना कर रही थी।

जब मैं बैठक में पहुँचा तो हैलियन और शहज़ादी तैयार खड़ी थीं। गैस के लैम्प जला दिये गये थे। मैंने अपनी पत्नी के मुख को ध्यान से देखा। उसपर अब पहली-सी गम्भीरता का चिन्ह तक न था। वही वेफिक्री और प्रफुल्लता जो हमेशा उसपर पाई जाती थी, अब भी दृष्टिगोचर हो रही थी।

छठा परिच्छेद

माज़रका नृत्य

१

मैंने पाल्टजन शहज़ादी और हैलियन को सहारा देकर गाड़ी में बिठाया, और कोई दस मिनिट बाद ही हम सब साली टी० नोवलेस के उस बड़े चौक में पहुंच गये, जो इस समय असंख्य घोड़ा-गाड़ियों से भरा हुआ था। श्रीमती अगनातीफ यहीं रहती थीं। यह नृत्य-उत्सव भी उनकी ओर से अपने भाई के पश्चिमी साइबेरिया का गवर्नर होने के उपलक्ष में मनाया जा रहा था। रूस के कुलीन और उच्च वंशों के स्त्री-पुरुषों का जनसमूह यहाँ एकत्रित था। इसके अतिरिक्त ये लोग केवल राजदरबार के उच्च पदाधिकारी ही न थे, बल्कि समाज के गण्य-मान्य भी थे।

"देखिये! मेरा विचार सही निकला।" राजकुमारी ने सहसा हैलियन से कहा—"इस जगह 'नाकस्का' गार्द की उपस्थिति यह सिद्ध

तथा सादी पोशाक पहिने राजदूत के साथ, और कहीं कोई अंग्रेज किसी ऐसे तुर्की रईस की बगल में चलता दिखाई दे जो असंख्य हीरे-जवाहरात अपने साथ लिये फिरता हो।

ऐसे मनमोहक दृश्यों में पुरुषों के मेलजोल और स्त्रियों के ठहाकों से एक प्रकार की मादकता-सी छा जाती है, जो जमे हुए खून में भी तेजी पैदा कर देती है। इसलिए आश्चर्य ही क्या कि यदि इस सुखद स्थान में पैर रखने के बाद मैं उन तमाम संकटों और शंकाओं को भूल गया, जो मेरे और हैलियन के लिए बहुत ही भयानक थे। हैलियन के साथ चलते हुए मेरे मुंह से बेसुधी में निकला—

"लार्ड हेरी की सौगन्ध, अच्छा हुआ जो मैं आज दोपहर की गाड़ी से न जा सका, वरना यह अनुपम दृश्य देखना क्योंकर नसीब होता।"

"आह! तुम प्रसन्न हो?" मेरी पत्नी ने मरी हुई-सी आवाज में कहा और इसके बाद ठंडी सांस खींचते हुए वह बोली—"भगवान् करे यह प्रसन्नता सच्ची ही हो।" और फिर सहसा कहने लगी—"आओ कान्सटनटाइन और ओल्गा प्रतीक्षा कर रहे हैं। चलो, उनके पास चलें।"

तभी साचा ने हैलियन के पीछे से आकर कहा—

"छः नाच पहिले होंगे और उसके बाद सातवां नाच होगा माजरका। यह नाच आपको मेरे साथ मिलकर नाचना होगा।"

इतने में बोरिस भी कहीं से वहीं आ गया। उसने भी हैलियन के नाच में सम्मिलित होने के साथ-साथ, उसके साथ नृत्य करने के विषय में अपनी प्रार्थना करनी आरम्भ कर दी और इस प्रश्न पर उनमें वाद-विवाद-सा छिड़ गया। प्रत्येक युवक इस बात की कोशिश करने

"हैलियन !" मैंने बैरन के पास से कुछ कदम आगे जाकर धै
से कहा—"तुम अपनी जेब में क्या चीज लिये फिर रही हो।"

"ओह ! मेरी जेब में इत्र की शीशी के सिवाय और कुछ भी त
नहीं।"

"परन्तु यह तो कोई बहुत ही वजनदार शीशी मालूम होती है
मैं डरता हूँ कि नाच के समय तुम्हारे साथी को इसके बार-बार लग
से बहुत कष्ट होगा।"

मेरी इस बात का उसने कोई उत्तर नहीं दिया और कुछ देर बा
मेरे ध्यान से भी यह बात उतर गई।

:

शहजादी पाल्टजन अपने पति के साथ आगे-आगे चल रही थ
और हम उनके पीछे थे। थोड़ी देर बाद हम उस स्थान पर पहुंच ग
जहाँ एक बहुत बड़ा कमरा विशेष रूप से इस उत्सव के लिए ह
सजाया गया था। दरवाजे पर श्रीमती अगनातीफ मिलीं, जो बहु
ही सज्जन और मिलनसार थीं।

उनसे मिलने के बाद हम अन्दर गये। असाधारण ढंग से सजे उ
बड़े कमरे की शोभा का मैं किन शब्दों में वर्णन करूं ? योरुपीय औ
एशियायी ढंग की वह सजावट कुछ इस प्रकार की गई थी कि आं
देखते थकती न थीं।

आप किसी ऐसे दृश्य की कल्पना कीजिए, जिसमें एक बहुत बड़ा
कमरा पूर्वी और पश्चिमीय बहुमूल्य वस्तुओं से सजा हुआ हो। पाम
के वृक्षों और सदाबहार के फूलों के हरियाले पौधों और उन वृक्षों की
छाया में रंगबिरंगी बन्दनवारें बंधी हों। उनके नीचे देवाकार पुरुष
चलते-फिरते हों। असंख्य कन्दीलें उस कमरे की छत पर इस प्रकार
जगमगाती हों जैसे आसमान में असंख्य तारे झिलमिलाया करते हैं।
नृत्य और संगीत की इस दुनिया में ग्रैंड आपेरा के चुने हुए गाजिन्दे
अपनी मधुर-मधुर तानों द्वारा संगीत से चारों ओर नवजीवन भर रहे
हों। पैरिसी तितलियां पूर्वी अप्सराओं के सदृश इस दृश्य को देखने
में तल्लीन हों। कहीं कोई दैत्याकार रूसी अमीर बोलेविया की सुन्दर

घिरे रहने के कारण भी मैं सभ्य समाज की विशेषताओं से वंि
नहीं हूँ।

मेरी इच्छा पूरी भी हो गई। शुरू के कुछ नृत्यों में हैलियन
मेरे साथ ही मिलकर भाग लिया और मैं निर्भय होकर कह सकता
कि चुने हुए जोड़ों के समूह में बहुत कम स्त्री-पुरुषों ने इतने सुन
ढंग से नाच किया होगा, जैसा कि लेनावस और उसकी पत्नी
किया। यहाँ तक कि इम्पीरियल गार्द के बाँके सवार भी मेरे इ
कमाल पर बाजी न मार सके।

बोरिस मेरे पास से जा रहा था। मैंने उसकी बांह में बांह डा
और इकट्ठे ही हम उस कमरे के अन्य भागों में घूमने के लिए च
दिये। बातचीत के बीच में उसने मुझसे यह वायदा ले लिया ि
यदि मुझे सैंट पीटर्जबर्ग में एक-आध दिन और रुकना पड़े, तो कि
समय भी मैं उसके जहाज क्रान्सटाट पर जाकर उसकी शोभा बढ़ाऊं

इतना होने पर भी मैं अपनी दृष्टि हैलियन के मुख पर से न ह
सका। वह उस समय साचा से अठखेलियाँ करती फिर रही थी औ
वह कम्बख्त भी मेरी क्रोधपूर्ण दृष्टि की परवाह न करके उसके सा
चिपटा जा रहा था।

अतिथियों में बहुत से व्यक्ति उन दोनों के इस असाधारण मेल
जोल को सन्देह की दृष्टि से देख रहे थे, और फुसर-फुसर बातें भ
करते जा रहे थे, परन्तु उन दोनों को जैसे इसकी जरा भी परवा
न थी।

:

हृदय में चिन्ता और निराशा लिए मैं इधर-उधर फिर ही रह
था कि बैरन फ्रेडरिक पुनः मिल गया। मेरी ओर वह बड़ी कामना
मयी दृष्टि से देख रहा था।

दुखिया मनुष्य को हमेशः दुखिया मनुष्य ही से सहानुभूति हुआ
करती है। अतः उसके अकेलेपन पर रहम खाकर मैंने कहा—

"आइये! थोड़ी शैम्पियन पी ली जाए।"

अच्छी तरह जानता था कि मेरा बूढ़ा शरीर वह फुर्ती, प्रवाह और उछल-कूद न दिखा पाएगा, जो रूस-निवासी दिखाते हैं। तो भी, जो पाँव मीलों चलने के अभ्यस्त रह चुके थे, वे इस नाच की उछल-कूद से क्या घबराते।

साचा हैलियन को साथ लेकर नाचता-नाचता उन लोगों में सबसे आगे निकल गया था। प्रकट रूप में वह उस समूह की सबसे अधिक सुन्दरी को साथ लेकर ज़ार की मसनद के ठीक आगे नृत्य करते हुए शेष स्त्री-पुरुषों की आँखों में ईर्ष्या की चकाचौंध उत्पन्न कर देना चाहता था। हैलियन की मूर्खता के बारे में मैं क्या कहूँ जो प्रेम में अन्धी होकर उस स्थान को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रही थी।

खैर कुछ भी हो, मेरी बनावटी पत्नी को अपनी निपुणता पर पूर्ण विश्वास था। बिना किसी झिझक या हिचकिचाहट के वह अपने साथी के साथ उस जगह पहुंच गई, जो नृत्य करने वालों की पंक्तियों में सबसे आगे थी। ठीक उस मसनद के सामने जो सम्राट ज़ार के विराजमान होने के लिए नियत थी।

एक क्षण पश्चात् ही बैंड की आवाज़ ने सूचित किया कि भोजन परोस दिया गया है। हम उठे। वह अपने काम में लग गया और मैं ओल्गा को साथ लेकर भोजन करने चल दिया।

श्रीमती पाल्टज़न कान्सटनटाइन के हिस्से में आ गई थी। रह गई हैलियन, सो वह हम से परे ही परे रहने की चेष्टा करती थी। साचा और उसी तरह के कुछ अन्य नवयुवकों के बीच में बैठी हुई वह उनके हाथों से पैग लेकर जूठे कर देती थी और वे जंगली उसे न जाने क्या अमूल्य वस्तु समझकर पी जाते थे।

कान्सटनटाइन ने कई बार क्रोधपूर्ण दृष्टि से उस रसिया युवकों के समूह की ओर और विशेषकर अपने मनचले भतीजे साचा की ओर देखा, परन्तु उन युवकों पर उसके मौन क्रोध का कोई प्रभाव न हुआ। इसके प्रतिकूल राजकुमारी पाल्टज़न उनकी तरफ देखकर मुस्कुराने लगी। यद्यपि वह यह अच्छी तरह जानती थी कि उसकी ननद डोजिया के नेत्र सजल और दिल बुझा हुआ है, परन्तु उस अपरिचित स्त्री के शब्दों में यह डोजिया को समझाने की एक छुपी हुई चाल थी।

साचा की कुचेष्टाओं पर कान्सटनटाइन की भाँति मुझे भी बहुत अधिक क्रोध आ रहा था। उस कम्बख्त ने बेचारी डोज़िया को एक नाच में भी अपने साथ नाचने का मौका नहीं दिया। नृत्य के लिए मैंने स्वयं को उसके सामने पेश किया। डोज़िया ने एक फीकी मुस्कुराहट के साथ मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार भी कर लिया।

डोजिया सुन्दर होने के साथ ही साथ बहुत ही सरल स्वभाव की भी थी। इसलिए जब उसने साचा को श्रीमती लेनावस की रूप-ज्योति का परवाना बना हुआ देखा, तो एक ठंडी आह के साथ कुछ समय के लिए उसका खयाल हृदय से निकाल दिया और मेरे साथ आधा घंटा व्यतीत करने के लिए तैयार हो गई।

इसके कुछ ही देर बाद बिगुल की आवाज सुनाई दी, जिससे मालूम हो गया कि अब शीघ्र ही माजरका नृत्य प्रारम्भ होने वाला है। जैसे ही रंग साफ हुआ और उस विचित्र नाच की घड़ियाँ बजनी प्रारम्भ हुईं, मैंने कुमारी डोजिया को अपने साथ ले लिया। यह मैं

ज़ार अलेक्जेन्डर सालेस बड़ा प्रभावशाली और सुन्दर युवक था। उसकी आँखें नीली थीं और छोटी-सी हल्के भूरे रंग के मुलायम बालों वाली दाढ़ी थी। उसकी चाल-ढाल बिल्कुल सैनिकों जैसी थी परन्तु उसका ढंग राजसी था। जिस समय वह राजसी ठाठ से गुज़रकर सिंहासन की ओर गया, किसी भी प्रकार की घबराहट के चिह्न उसके मुख पर न थे।

हां, उनकी रानी जो बाईं ओर उनके साथ-साथ चल रही थीं, उसकी चाल से निस्संदेह कुछ बेचैनी-सी जान पड़ती थी। उसकी काली आँखें हरिणी की भांति भयभीत होकर इधर-उधर देख रही थीं।

कुछ विशेष दरबारियों के साथ दाएं-बाएं लोगों के सलामों का उत्तर देते हुए नौ करोड़ प्रजा का सम्राट अपनी रानी सहित मसनद वाले तख्त पर बैठ गया। दरबारी और दासियाँ दोनों ओर लाइनों में खड़े हो गये।

तभी फ़ौजी बिगुल की आवाज़ ने उत्सव के अन्तिम नृत्य के आरम्भ होने की सूचना दी, और उसी समय साचा हैलियन को साथ लेकर आगे निकल आया।

माजरका नृत्य अब प्रारम्भ होने लगा था।

यह नृत्य टैपलियन और बरजीनिया डान्स का मिश्रण है और कुछ जंगलीपन रखते हुए भी एक प्रकार की अजीब शान और आकर्षण रखता है।

साचा और हैलियन के बाद कुछ जोड़े और भी नृत्यशाला में उतर आये। डफ बजाने वालों और वायलन-झांझ आदि के साज़िन्दों के मधुर संगीत ने नाचने वालों की कर्कश आवाज़ से मिलकर ऐसा सुन्दर वातावरण उत्पन्न कर दिया, जो अक्सर शराबियों की महफ़िल में सूफ़ियों की तल्लीनता से बंध जाता है, तल्लीनता और आकर्षण की एक विचित्र लहर चारों ओर छा गई और सब व्यक्ति बेसुध होकर आनन्द के समुद्र में गोते खाने लगे।

ऊंची एड़ियों के नाज़ुक बूटों और हैंगरियन जूतों का संगम नृत्य

करोड़ जनता पर राज्य करने वाले ज़ार के कत्ल का दंड···? क्या यह इससे अधिक ठीक न था कि मैं उस हाल से निकलकर किसी एकान्त स्थान में जाकर अपने आपको गोली मार लूं ?

पसीने की बूंदें मेरे सारे शरीर पर उभर आईं। मेरा मस्तिष्क बर्फ की भांति ठंडा हो गया।

रह-रहकर यही प्रश्न मेरे हृदय में भड़क उठता था—कि मुझे क्या करना चाहिये ?······मुझे इस समय क्या करना चाहिये···?

मैंने उस जनसमूह में एक बार चारों ओर देखा। एक ओर मेरा मित्र बैरन फ्रेडरिक हल्के नीले शीशे का चश्मा लगाए झपझपाती नज़रों से माज़रका नृत्य देख रहा था। एक हल्की-सी मुस्कुराहट मुझे उसके चेहरे पर फैली हुई दृष्टिगोचर हुई।

फर्ज करो कि मैं उससे अलग जाकर सब हाल कह दूं ?··· परन्तु इससे लाभ क्या ? मैं इतना सीधा भी न था कि एक पुलिस वाले की मित्रता पर विश्वास करता। उसकी मैत्री अधिक से अधिक

कि सम्राट ज़ार के सम्मुख नाचते हुए, बिल्कुल निकट जाकर उसक
मौत के घाट उतार दे।

यह विचार आते ही मुझे उसकी पुष्टि के लिए सैकड़ों घटनाअ
का स्मरण हो आया। रात तक वह मेरे साथ चलने को तैयार थ
परन्तु जब उसने उस उत्सव में सम्राट ज़ार के पधारने की खबर सुन
तो रुक गई। इसीलिए वह नृत्य-उत्सव को अपने जीवन का सब
महान अवसर बता रही थी, इसीलिए वह मेरे रूस से चले जाने
लिए ज़िद कर रही थी, इसीलिये···

उफ! हे मेरे भगवान्! अब उस 'इत्र की शीशी' का रहस्य
मुझे मालूम हो गया। वह इत्र की शीशी नहीं, वह तो वही नन
बुलडाग रिवाल्वर था जिससे वह दोनों रूसों के मालिक, नौ करो
प्रजा के सम्राट ज़ार को मारना चाहती थी।

कुछ-कुछ बेखबरी की अवस्था में न जाने किस बहाने से मैंने श
ज़ादी डोजिया को एक तरफ ले जाकर बैंच पर बिठा दिया। इस
बाद मैं यह सोचने लगा कि क्या करूँ?

अनेक प्रकार की भयावनी शंकाएं मेरे हृदय में उत्पन्न हो र
थीं। यदि मैं हैलियन को समय से पहिले ही वह भयानक काम क
से न रोक सका, और उसने वह काम कर दिया, तो उसकी क्या द
होगी? उसके पति होने के नाते मेरी अपनी क्या दशा होगी? ए
वैलटस्की और उसके खानदान का क्या हाल होगा? और···अ
···या सम्पूर्ण षड्यन्त्र से अनभिज्ञ अभागिनी शहज़ादी पाल्टज़न
क्या हाल होगा?

हैलियन अपने भयानक इरादे को पूरा करने के लिए क्षण प्र
क्षण ज़ार की मसनद के समीप होती जा रही थी।

मेरी आंखों के सामने एक भयावह लालिमा फैल गई, जि
पीछे ज़ार का तड़पता हुआ शव और बिगड़ी हुई शक्ल मेरी आंखों
सामने घूम रही थी।

हे ईश्वर! मैं जब उस खूनी स्त्री का सहायक सिद्ध हो जाउ
तो मेरे साथ क्या सलूक किया जाएगा? कत्ल के अपराध में फां
के लिए साधारण दंड फांसी है। किन्तु दो रूसों के शहंशाह और

बाहर भी ले जा सकता था। किन्तु इसके साथ ही प्रश्न यह उठता था कि वह इस समय आवेश में क्या मेरा कहना मानेगी ? बिल्ली जब शिकार को पकड़कर बैठ जाए तो मालिक तक को देखकर गुर्राती है। उसको इस कमरे से निकालकर ले जाने की एक सूरत यही थी कि मैं उसे जबर्दस्ती गोद में उठाकर ले आऊं, ऐसा करना बहुत असम्भव था।

एक बार मेरी नज़रें उससे फिर चार हुईं। उन सुन्दर आँखों के देखने के ढंग ने मेरा रहा-सहा सन्देह भी दूर कर दिया। वह उस शेरनी की तरह बफरी हुई थी जो हरिण को देखते ही छलांग लगाने की सोचा करती है।

मैंने कुछ सोचने का प्रयत्न किया। वह अपनी सुरक्षा के लिए नहीं, बल्कि कहीं निशाना न चूक जाए इसलिए सम्राट ज़ार पर नृत्य के बीच में आक्रमण न करेगी; बल्कि उस समय करेगी जब नृत्य समाप्त हो जाने के बाद नाचनेवालियों को एक-एक करके ज़ार के सामने पेश किया जाएगा। उनमें सबसे पहिला नम्बर हैलियन ही का था। और मैंने देखा कि ज़ार अलेक्जेन्डर सालेस अभी से उसके रूप पर मुग्ध होकर प्रशंसामयी दृष्टि से उसकी ओर देखता हुआ अपने दरबारियों से न जाने क्या-क्या बातें पूछ रहा था।

नाच अब समाप्त होने को ही था। इसलिए मुझे जो कुछ करना था वह जल्दी करना चाहिये था; इससे पहले कि उनकी भेंट हो, इससे भी पहिले कि वे एक-दूसरे के समीप आएं।

मैंने निराशापूर्ण नेत्रों से बैरन फ्रेडरिक को देखा। वह हर प्रकार के भय से दूर खड़ा प्रशंसामयी दृष्टि से हैलियन की ओर देख रहा था। 'मेरे असफल रहने पर सारी बागडोर उसके हाथ में चली जाएगी।' मैंने सोचा, 'और वह······?'

क्रोध से मेरा जबड़ा भिंच गया। हाथों की मुट्ठियां बन्द होने और खुलने लगीं। बेखबरी में मेरा एक हाथ वास्कट की जेब में चला गया। चार पुड़ियां उसमें रखी थीं। अफीम मिश्रित दवाई की चार पुड़ियां, जो थोड़े परिमाण में नींद लानेवाली और अधिक परिमाण में बेहोश करने वाली थीं। इस समय उनकी उपस्थिति मेरे लिए दैवी

हो रहे थे। जैसे वह सम्राट के सामने पेश किये जाने की प्रतीक्षा भी करना न चाहती थी।

अत्यन्त बेचैनी की हालत में दौड़ा हुआ मैं उसके पास गया और साचा के हाथ से उसका हाथ छुड़ाकर बोला—

"मेरी पत्नी बीमार है। हटिये, मैं इसे खुली हवा में ले जाना चाहता हूँ।" और लड़खड़ाती हुई हैलियन मेरी भुजाओं में आ गई।

किन्तु जिस प्रकार मरने से पहिले मनुष्य की सम्पूर्ण शक्तियाँ एक क्षण के लिए जागृत हो जाती हैं, उसी प्रकार सहसा होश में आकर वह मेरी भुजाओं में से निकल गई और राजसिंहासन के समीप एकत्रित जन-समूह को चीरती हुई वह छ कदम आगे गई और इसके साथ ही उसका हाथ वस्त्रों में छिपी हुई जेब की ओर मुड़ा।

बिजली-सी गति से मैं उसके पास जा पहुंचा। और इससे पहिले कि वह पिस्तौल निकालती, मैंने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। उसने यह एक अन्तिम असफल प्रयत्न किया था। अफीम का नशा उसके मस्तिष्क पर छा चुका था, इसलिए वह वहीं मेरी भुजाओं में गिर गई। उसकी गर्दन कमल के फूल की टूटी हुई डंडी की तरह मेरी गोद में लटक रही थी।

एक बार निराशा भरी दृष्टि से उसने मुझे देखा। एक ठंडी आ[illegible] उसके मुख से निकली। इसके बाद वह पूरी तरह बेहोश हो गई।

प्रकार का मुंह बनाया। मैं दूसरा गिलास साचा को देने की बजाए स्वयं ही यह कहकर पी गया कि "मेरी प्राणप्यारी! यह गिलास तुम्हारे शरीर की स्वस्थता के लिए है। आज तुमने अमेरिका की लाज रख ली। इस शान से माज़रका नाच नाचा है कि कोई रूसी भी क्या नाच सकेगा।"

शायद उस चोट का बदला लेने के लिए साचा ने हैलियन का कन्धा पकड़ा और 'आखरी नाच और' कहकर उसे अपने साथ आगे की ओर ले गया।

एक क्षण के लिए हैलियन को शैम्पियन ने ताज़ा दम कर दिया था, परन्तु तुरन्त ही उसकी चाल धीमी पड़ने लगी। एक विचित्र प्रकार की ग़फ़लत उसपर छा रही थी। कई बार नृत्य करते-करते उसके हाथ साचा के हाथों में ढलके जाते थे और उसकी गर्दन में टेढ़ापन उत्पन्न हो जाता था। ऐसी दशा में वह तुरन्त ही स्वयं को संभालने का प्रयत्न करती और अपनी गर्दन को इस तरह उठाती जैसे वह दृढ़ निश्चय के साथ नशे की सम्पूर्ण शक्तियों पर विजय प्राप्त करना चाहती है।

उसका यह प्रयत्न विशेषतः उस समय और भी अधिक तेज़ हो गया, जब ज़ार अलेक्जेन्डर तख्त से उठकर खड़े हो गये। सम्राट का खड़ा होना इस बात का संकेत करता था कि नाच समाप्त करके नाचनेवालियों को सम्राट के सामने पेश किया जाए। न जाने हैलियन कितनी सुदृढ़, कितनी साहसी और न जाने किस मिट्टी की बनी हुई थी कि अफीम का असर जितना अधिक बढ़ता था, उतना ही वह उस पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करती थी। एक विचित्र प्रकार की तेज़ी उसकी गति में उत्पन्न होने लगी थी।

ज़ार के उठते ही नाच समाप्त हो गया। हैलियन पहले सीधी होकर खड़ी हुई, फिर सहसा लड़खड़ाकर साचा से लग गई। इसके बाद उसकी बांह पकड़े वह राजसिंहासन की तरफ जाने लगी। मेरा हृदय जोर से धक-धक करने लगा। विष अपना असर तेज़ी के साथ कर रहा था। एक बार उसकी गर्दन झुकी, किन्तु उसने तुरन्त ही उसको सीधा कर लिया। उसके चेहरे पर दृढ़ निश्चय के चिन्ह प्रकट